ॐ अर्हद्भ्यो नम

।। अथ श्री चिदानंदजी कृत पुद्गल गीता प्रारंभ ॥

संतो देखीयें वे, परगट पुद्गल जाल तमासा । ए आकडी ॥ पुद्गल खाणो पुद्गल पीणो, पुद्गल हुथी काया । वर्ण गंध रस फरस सहु ए, पुद्गल हुंकी माया ॥ संतो० ॥ १ ॥ खान पान पुद्गल बनावे, नहीं पुद्गल विन काय । वर्णादिक नहीं जीवमें ने, दीनो भेद बताय ॥ संतो० ॥ २ ॥ पुद्गल काला नीला राता, पीला पुद्गल होय । धवला युत ए पच वरण गुण, पुद्गल हुका जोय ॥ संतो० ॥ ३ ॥ पुद्गल विण काला नहीं वे, नील रक्त अरु पीत । स्वेत वर्ण पुद्गल विना वे, चेतन मे नहीं मीत ॥ सतो ॥ ४ ॥ सुरभी गंध दुरगंधता वे, पुद्गल हुमें होय । पुद्गल का परसग विना ते, जीव माहि नहीं होय ॥ सतो० ॥ ५ ॥ पुद्गल तीखा कडवा पुद्गल, फूनि कसायल कहिये । खाटा मीठा पुद्गल फेरा, रस पाचु सर्दहीये ॥ सतो० ॥ ६ ॥ शीत उष्ण अरु काठा कोमल, हलुवा भारी सोय । चिकणा रुखा आठ फरस ए, पुद्गलहुमें होय ॥ सतो० ॥ ७ ॥ पुद्गल से न्यारा सदा जे, जाण अफरसी जीव । ताका अनुभव भेद ज्ञानसे, गुरुगम करो सदीव ॥ सतो० ॥ ८ ॥ क्रोधी मानी मायी लोभी, पुद्गल रागे होय । पुद्गल सग विना चेतन ए, शिव नायक नित जोय ॥ संतो० ९ ॥ नरनारी नपुसक वेदी,

पुद्गल के परसंग। जाण अवेदी सदा जीव ए, पुद्गल विना अभंग ॥ संतो० ॥ १० ॥ वूढा बाला तरुण थया ते, पुद्गल का संग धार। त्रिहुं अवस्था नहीं जीवमें, पुद्गल संग निवार ॥ संतो० ॥ ११ ॥ जन्म जरा मरणादिक चेतन, नानाविध दुःख पावे। पुद्गल संग निवारत तिण दिन, अजरामर होय जावे ॥ संतो० ॥ १२ ॥ पुद्गल राग करी चेतन कुं, होत कर्मको बंध। पुद्गल राग विसारत मनसे, नीरागी निर्बन्ध ॥ सन्तो० ॥ १३ ॥ मन वच काय जोग पुद्गल से, निपजावे नितमेव। पुद्गल संग विना अयोगी, होकर लहे निजभेव ॥ सन्तो० ॥ १४ ॥ पुद्गल पिंड थकी निपजावे, भला भयंकर रूप। पुद्गल का परिहार कियासे, होवे आप अरूप ॥ सन्तो० ॥ १५ ॥ पुद्गल रागी हुई धरत निज, देह गेहसे नेह। पुद्गल राग भाव तज दिलसे, छिनमें होत विदेह ॥ सन्तो० ॥ १६ ॥ पुद्गल पिंड लोलुपी चेतन, जगमें रांक कहावे। पुद्गल नेह निवार पलकमें, जगपति बिरुद धरावे ॥ संतो० ॥ १७ ॥ पुद्गल मोह प्रसंगे चेतन, चारूं गतिमें भटके। पुद्गल नेह तजी शिव जातां, समय मात्र नहीं अटके ॥ संतो० ॥ १८ ॥ पुद्गल रस रागी जग भटकत, काल अनंत गमायो, काची दोय घडीमें निज गुण, राग तजी प्रगटायो ॥ संतो० ॥ १९ ॥ पुद्गल रागे वार अनंती, तात मात सुत हुईयां। किसका बेटा किसका बाबा, भेद साच जब लहिया ॥ सन्तो० ॥ २० ॥ पुद्गल सङ्ग नाटक बहु नटवत, करतां पार न पायो। भव स्थिति परीपक्व हुई तब, सहेजें मारग आयो ॥ संतो० ॥ २१ ॥ पुद्गल रागे देहादिक निज, मान मिथ्याती सोय। देह गेहका नेह तज कर, सम्यग् दृष्टि होय ॥ संतो० ॥ २२ ॥ काल अनंत निगोद धाममें, पुद्गल रागे रहियो। दुःख अनंत नरकादिकसे तूँ, अधिक बहुविध सहियो ॥ संतो ॥ २३ ॥ पाय अकाम निर्जरा को बल, किंचित ऊंचो आयो। बादरमें पुद्गल रागवशसे, काल असंख्य गुमायो ॥ संतो० ॥ २४ ॥ लही क्षयोपशम मतिज्ञानको, पंचेन्द्रिय जब लाधी। विषयासक्त राग पुद्गलका, धार नरक गति साधी ॥ संतो० ॥ २५ ॥ ताडन मारन छेदन

भेदन, वेदन बहुविध पाई। क्षेत्र वेदना आदि दईने, वेद भेद दरसाई ॥ स तो० ॥ २६ ॥ पुद्गल रागे नरक वेदना, वार अनंती वेदी। पुण्य संयोगे नरभव लाधो, अशुभ युगल गति भेदी ॥ संतो० ॥ २७ ॥ अति दुर्लभ वेदन कुं नरभव, श्रीजिनदेव वखाणे। श्रवण सुणी ते वचन सुधारस, त्रास फेम नहीं आणे ॥ स तो० ॥ २८ ॥ विषयासक्त राग पुद्गलको, धरी नर जन्म गुमावे। काग उडावणकाज विप्र जिम, डार मणि पिछतावे ॥ स तो० ॥ २६ ॥ दश दृष्टान्ते दोहिलो नरभव, जिनवर आगम भाख्यो। पिण तिनकु किम पथर पडे जिण, कनक बीज रस चाख्यो ॥ स तो० ॥ ३० ॥ हारत वृथा अनोपम नरभव, खेल विषय रस जूआ। पीछे पिछतावत मन माहि, जिम सिंमलका सूआ ॥ स तो० ॥ ३१ ॥ कोईक नर ईम वचन सुणकर, धर्म थकी चित्त लावे। पिण जे पुद्गल आनंदी तस स्वर्ग तणा सुख भावे ॥ स तो० ॥ ३२ ॥ संजम केरा फल शिव सपत, अल्पमति नवि जाणे। विन जाने नियाणा करके, गज तज रासभ आणे ॥ स तो० ॥ ३३ ॥ पौद्गलिक सुखरस रसिया नर, देवनिधि सुख देखे। पुण्य हीन हुआ दुर्गति पावे, ते लेखा नवि लेखे ॥ स तो० ॥ ३४ ॥ देव तणा सुख वार अनती, जीव जगतमें पाया। निज सुख विन पुद्गल सुखसेती, मन सन्तोष न आया ॥ स तो० ॥ ३५ ॥ पुद्गलिक सुख सेवत अहनिश, मन इन्द्रिय न धावे। जिम घृत मधु आहुति देता, अग्नि शात नवि थावे ॥ स तो० ॥ ३६ ॥ जिम जिम अधिक विषय सुख सेवे, तिम तिम तृष्णा दीपे। जिम अपेय जल पान कियासे, तृषा कहो किम छीपे ॥ स तो० ॥ ३७ ॥ पुद्गलिक सुखके आस्वादी, एह मरम नवि जाणे। जिम जात्यन्ध पुरुष दिनकरका, तेज नवि पहिचाणे ॥ स तो० ॥ ३८ ॥ इन्द्रिय जनित विषय रस सेवत, वर्त्तमान सुख ठाणे। पिण किपाक तणा फलनी परे, नहीं विपाक तस जाणे ॥ स तो० ॥ ३६ ॥ फल किपाक से एकही भव, प्राण हरण दुःख पावे। इन्द्रिय जनित विषय रस ते तो, चिहुगतिमें भरमावे ॥ संतो० ॥ ४० ॥ एहसा जान विषय सुखसेंती,

त्रिमुख रूप नित रहीये । त्रिकरण जोगे शुद्ध भाव धर, भेद यथारथ लहिये ॥ संतो० ॥ ४१ ॥ पुण्य पाप दोय सम करी जाणो, भेद न जाणो कोउ । जिम बेडी कंचन लोहाकी, बंधन रूपी दोउ ॥ संतो० ॥ ४२ ॥ नल बल जल जिम देखो सन्तो, ऊंचा चढत आकाश । पिछा ढलि भूमी पडेतिम, जाणो पुण्य प्रकाश ॥ संतो० ॥ ४३ ॥ जिम साणसी लोहकी रे, क्षण पाणी क्षण आग । पाप पुण्यका इसविध निश्चें, फल जाणो महाभाग ॥ संतो० ॥ ४४ ॥ कंप रोगमें वर्त्तमान दुःख, अकरमांहि आगामी । इण विध दोउ दुःख का कारण, भाषे अंतर जामी ॥ संतो० ॥ ४५ ॥ कोउ कूपमें पडि मुवे जिम, कोउ गिरि झंपा खाय । मरण दोउ सरिखा जाणिये पिण, भेद दोउ कहेवाय ॥ संतो० ॥ ४६ ॥ पुण्य पाप पुद्गल दशा इम, जो जाणे सम-तूल । शुभकिरिया फल नहीं चाहे ए, जान अध्यातममूल ॥ संतो० ॥ ४७ ॥ शुभकिरिया आचरण आचरे, धरे न ममता भाव । नूतन बंध होय नहीं इणविध, प्रथम अरि शिर घाव ॥ संतो० ॥४८ ॥ वार अनंत चूकीया चेतन, इण अवसर मत चूक । मार नीसानी मोहराय की, छातीमें मत ऊक ॥ संतो० ॥ ४९ ॥ नदी गोल पाषाण न्याय करी, दुर्लभ अवसर पायो । चिंता-मणि तज काच शकल सम. पुद्गलसे लोभायो ॥ संतो० ॥ ५० ॥ परवशता दुःख पावत चेतन, पुद्गलसे लोभाय । भ्रम आरो-पित बंध विचारत, मरकट मूठी न्याय ॥ संतो० ॥ ५१ ॥ पुद्गल राग भावसे चेतन, थिर स्वरूप नहीं होत । चिहुं गतिमें भटकत निशदिन, जिम भमरी बिच पोत ॥ संतो० ॥ ५२ ॥ जड लक्षण परगट जे पुद्गल, तास मर्म नहीं जाणे । मदिरा पान छक्ये जिम मद्यप, स्वपर नहीं पिछाणे ॥ संतो० ॥ ५३ ॥ जीव अरूपी रूप धरत वह, पर परणती परसङ्ग । वज्ररत्नमें दंड योग [illegible] दर्शित नाना रंग ॥ संतो० ॥ ५४ ॥ निजगुण त्याग राग परसे थिर, गहत अशुभ दल थोक । शुद्धरुधिर तज गंधो पान करत जिम जोक ॥ संतो० ॥ ५५ ॥ जड पुद्गल चेतन कुं जगमें, नाना नाच नचावे । छाली खात वाघ

एह इचरिज मन आवे ॥ स तो० ॥ ५६ ॥ ज्ञान अनत जीवका निजगुण, वह पुद्गल आवरियो । जो अनत शक्तिका नायक, यह इण कायर करियो ॥ स तो० ॥ ५७ ॥ चेतन कु पुद्गल यह निशदिन, नानाविध दु ख घाले । पिण पिंजरगत नाहर की परे, जोर कछु नहीं चाले ॥ स तो० ॥ ५८ ॥ इतने पर भी जो चेतन कु, पुद्गल सङ्ग सोहावे । रोगी नर जिम कुपथ्य करके, मनमें हर्षित होवे ॥ स तो० ॥ ५९ ॥ जात्यपात्य कुल न्यात न जाकुं, नाम गाम नहीं कोई । पुद्गल सगत नाम धरावत, निज गुण सघलो खोई ॥ स तो० ॥ ६० ॥ पुद्गलके वश हालत चालत, पुद्गलके वश बोले । कहुक बैठा टकटक जूए, कहुक नयन न खोले ॥ स तो० ॥ ६१ ॥ मन गमता कहुं भोग भोगवे, सुख सज्यामें सोवे । कहुक भूख्या तिरस्या बाहर, पड्या गलीमें रोवे ॥ स तो० ॥ ६२ ॥ पुद्गल वश एकेन्द्रिक बहु, पंचेंद्रिय पिण पावे । लेश्यावन्त जीव एह जगमें, पुद्गल सघ कहावे ॥ स तो० ॥ ६३ ॥ चउदे गुणस्थानक मारगणा, पुद्गल संगे जाणो । पुद्गल भाव विना चेतनमें, भेदभाव नहीं आणो ॥ स तो० ॥ ६४ ॥ पाणी माहि गले जो वस्तु, जले अगनि संयोग । पुद्गल पिंड जाण ते चेतन, त्याग हरष अरु सोग ॥ स तो० ॥ ६५ ॥ छाया आकृति तेज द्युति सहु, पुद्गल की परजाय । सडन पडन विध्वस धर्म ए, पुद्गल को कहेवाय ॥ स तो० ॥ ६६ ॥ मल्या पिंड जेहने वधे ये, काले विखरी जाय । चरम नयन करी देखीये ते, सहु पुद्गल कहेवाय ॥ स तो० ॥ ६७ ॥ चौदराज लोक घृतघट जिम, पुद्गल द्रव्य भरिया । खंध देश परदेश भेद तस, परमाणु जिन करिया ॥ स तो० ॥ ६८ ॥ नित्य अनित्यादिक जो अतर, पक्ष समान विशेष । स्याद्वाद समजणकी शैली, जिनवाणीमें देख ॥ स तो० ॥ ६९ ॥ पूरण गलन धर्मसे पुद्गल, नाम जिणद वखाणे । केवल विन परजाय अनंती, चार ज्ञान नहीं जाणे ॥ स तो० ॥ ७० ॥ शुभसे अशुभ अशुभसे जे शुभ, मूल स्वभावे थाय । धर्मपाल इण पुद्गल को इम, सद्गुरु दियो बताय ॥ स तो० ॥ ७१ ॥ अष्टवर्गणा पुद्गल केरी, पामी तास

संयोग। भयो जीवकुं एम अनादी, बंधण.रूपी रोग ॥ संतो० ॥७२॥ गहत वरगणा शुभ पुद्गल को, शुभ परीणामें जीव। अशुभ अशुभ परिणाम योगसे, जाणे इम सदीव ॥ संतो० ॥ ७३ ॥ शुभ संयोगे पुण्य संचवे, अशुभ योग से पाप। लहत विशुद्ध भाव जब चेतन, समजे आपो आप ॥ संतो ॥ ७४ ॥ तीन भुवनमें देखीये सहु, पुद्गलका व्यवहार। पुद्गल विण कोउ सिद्धरूपमें, दरसत नहीं विकार ॥ संतो० ॥ ७५ ॥ पुद्गल हुंके महेल मालीये, पुद्गल हुंकी सहेज। पुद्गल पिंड नारीको तेथी, सुख विलसत धरि हेज ॥ संतो० ॥ ७६ ॥ पुद्गल पिंड धारके चेतन, भूपति नाम धरावे। पुद्गल बलसे पुद्गल उपर, अहनिश हुकुम चलावे ॥ संतो० ॥ ७७ ॥ पुद्गलहुंके वस्त्र आभूषण, तेथी भूषित काया। पुद्गलहुंका चामर छत्र, सिंहासन अजब बनाया ॥ संतो० ॥ ७८ ॥ पुद्गलहुंका किला कोट अरु, पुद्गलहुंकी खाई। पुद्गलहुंका दारुगोला, रच पच तोप बनाई ॥ संतो० ॥ ७९ ॥ पर पुद्गल रागी थई चेतन, करत महा संग्राम। छल बल करी एम चिंतवे, राखुं आपणुं नाम ॥ संतो० ॥ ८० ॥ ऋद्धि सिद्धि बंके गढ तोडी, जोडी अगम अपार। पिण ते पुद्गल द्रव्य स्वभावे, विणसत लगे न वार संतो० ॥ ८१ ॥ पुद्गलके संयोग वियोगे, हरष शोक चित्त धारे। अथिर वस्तु थिर होइ कहो किम, इणविध नहीं य विचारे ॥ संतो० ॥ ८२ ॥ जा तनको मन गर्व धरत है, छिन्न छिन्न रूप निहार। तेतो पुद्गल पिंड पलकमें, जल बल होवे छार ॥ संतो० ॥ ८३ ॥ इण विध ज्ञान हीयेमें धारी, गर्व न कीजे मित्त। अथिर स्वभाव जाण पुद्गल को, तजो अनादी रीत ॥ संतो० ॥ ८४ ॥ परमातमसे नेह निरंतर, लावो त्रिकरण शुद्ध। पावो गुरुगम ज्ञान सुधारस, पूरव पर अविरूद्ध ॥ संतो० ॥ ८५ ॥ ज्ञान भान पूरण घट अंतर, हुआ जिंहा परकास। मोह निसाचर तास तेज लख, नाठा थई उदास ॥ संतो ॥ ८६ ॥ भेद ज्ञान अंतर द्रुगधारी, परिहर पुद्गल जाल। खीर नीरकी भिन्नता जिम, छिनमें करत मराल ॥ संतो० ॥ ८७ ॥ एहवा भेद लखी पुद्गलका, मन संतोष धरीजे। हानी लाभ

सुख दु ख अवसरमें, हर्ष शोक नहीं कीजे ॥ स तो० ॥ ८८ ॥ जो उपजे सो तू नहीं अरू, विणसे सोतु नाहीं । तूँ तो अचल
अकल अविनाशी, समज देख दिल माहि ॥ स तो ॥ ८६ ॥ तन मन वचन पणे जे पुद्गल, वार अनती धार्या । वम्या आहार
अज्ञान गहल्से, फिर फिर लागत प्यारा ॥ स तो० ॥ ६०॥ धन्य धन्य जगमें ते प्राणी, जे नित रहत उदास । शुद्ध विवेक
हीये में धारी, करे न परकी आश ॥ स तो० ॥ ६१ ॥ धन्य धन्य जगमें ते प्राणी,जे घट समता आणे । वाद विवाद हीये
नहीं धारे, परमारथ पथ जाणे ॥ स तो० ॥ ६२ ॥ धन्य धन्य जगमें ते प्राणी, जे गुरु वचन विचारे । अष्टदया का मर्म लहीने,
आतम काज सुधारे ॥ स तो० ॥ ६३ ॥ धन्य धन्य जगमें ते प्राणी, जेह प्रतिज्ञा धारे । प्राण जाय पिण धर्म न मूके, शुद्ध वचन
अनुसारे ॥ स तो० ॥ ६४ ॥ इम विवेक हिरदेमें धारी, स्वपर भाव विचारो । काया जीव ज्ञानदृग् देखत, अहि कंचूकी जिम
न्यारो ॥ स तो० ॥६५॥ गर्भादिक दु ख वार अनंती, पुद्गल सगे पाये । पुद्गल सग निवार पलकमें, अजरामर कहवाये ॥ स तो०
॥ ६६ ॥ रागभाव धारत पुद्गल से, जे अविवेकी जीव । पाय विवेक राग तजी चेतन, वंधण विगत सदीव ॥ स तो० ॥ ६७ ॥
कर्म वंधको हेतु जीवकु, राग द्वेष जिन भाखे । तजी राग अरू रोष हिये सें, अनुभव रस कोउ चाखे ॥ स तो० ॥६८॥ पुद्गल
संग विना चेतनमें, कर्म कलंक न कोय । जीम वायु सयोग विना जल, माहि तरंग न होय ॥ स तो० ॥६६॥ जीव अजीव
तत्व त्रिभुवनमें, युगल जिनेश्वर भाखे । अपर तत्व जे सप्त रहे ते, सयोगिक जिन दाखे ॥ स तो० ॥१००॥ गुण पर्याय द्रव्य हो-
उ के, जुए जुए दरसाये । ए समजण जिवके हिय उतरी, तेतो निज घर आये ॥ स तो० ॥१०१॥ भेद पचशत अधिक तिरेशठ,
जीव तणा जे कहिये । ते पुद्गल सयोग थकी सहु, व्यवहारे सरदहीये ॥ स तो० ॥१०२॥ निश्चे नय चिद्रूप द्रव्यमें, भेद भाव नहीं
कोय । पय अपेक्षता नय पखसे, इणविध जाणो होय ॥ स तो० ॥१०३॥ भेद पचाशत त्रीश अधिक, रूपी पुद्गलके जाणो । त्रीश

अरूपी द्रव्य तणे जिन, आगमथी मन आणो ॥ संतो० ॥ १०४ ॥ पुद्गल भेद भाव इम जाणी, परपख राग निवारो। शुद्ध रमणता रूप बोध, अंतर्गत सदा विचारो ॥ संतो ॥ १०५ ॥ रूप रूप रूपान्तर जाणी, आणी अतुल विवेक। तद्गत लेश लीनता धारे, सो ज्ञाता अतिरेक ॥ संतो० ॥ १०६ ॥ धार लीनता लव लव लाई, चपल भाव विसराई। आवागमन नहीं जिण थानक, रहिये तिहां समाई ॥ संतो० ॥ १०७ ॥ बाल ख्याल रचियो ए अनुपम, अल्पमति अनुसार। बाल जीवकुं अति उपगारी, चिदानंद सुखकार ॥ सन्तो० ॥ १०८ ॥

॥ इति पुद्गल गीता समाप्तम् ॥

॥ अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय, बिकानेर (राजपुताना) ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्ति !!!

॥ शिवमस्तु ॥



॥ अथ आठ प्रवचनमाता (पांच सुमति तीन गुप्ति) की चउपाई ॥

॥ दोहा ॥ पांच सुमति तीन गुपति, आठे प्रवचन मात ।

जो सुध पाले साधु जी, तो नर करो [illegible] ॥ १ ॥

गुरु सरीखे साधुने, जो पाले निरतिचार ।

सावधान थई सांभलो, सुमति गुपति विस्तार ॥ २ ॥

ढाल १ ली ।

नमिजिनजी, कथा तत्वांतें मारग रे ए देसी ॥ आराधना जानने दर्शन चारित्र तणी, सांभल तीन प्रकार, भविक जन । कुपंथ छोडीने सुपंथ आदरो, जगनाथे भाखे अधिकार भविक जन ॥ १ ॥ चौथे जिन राखे रे [illegible] मारग [illegible] ॥ ए टेक ॥ [illegible]

५ सु० ३-गु० २

द्रव्य थकी तो रे जीव छका-
क्षेत्ररे काल भाव वलि, जयणारा चार भेद, भविक जन।
यना, जोवो धरी उमेद भविक जन ॥ चोखे० ॥ २ ॥ मुरड माटीरे पाणी वलिवास दे,
चोथी वाउकाय भविक जन। नीलण फूलण रे वरजे वनस्पति, ते मोटा मुनिराज भ-
विक जन ॥ चोखे० ॥ ३ ॥ लट गिंडोला रे कीडीने कुंथुवा, वलि चौरिन्द्रीनी जात भविक
जन। पांचे इन्द्रीरे पूरी पामी यो, तेहनी टालो घात भविक जन ॥ चोखे० ॥ ४ ॥ क्षेत्र
थकी तोरे हाथ साढा तीन प्रमाण, भुसरो चाले ज्यां लग जोय भविक जन। भाव थकी
तोरे दश वानां वर्जना, ज्युं मुगति तणा सुख होय भविक जन ॥ चोखे० ॥ ५ ॥ ढोल नगा-
रारे कंश मादलवती, सूरणाई मोरचङ्ग भविक जन। भला शब्द रे मार्ग सुणी, ज्हासुं
चरे नहीं परसंग भविक जन ॥ चोखे० ॥ ६ ॥ व्याव वधारे रे गावे गोरडी, वलि गीता-
यांरा गीत भविक जन। एह सुणीने रे हिये हरखे नहीं, यह साधुरी रीत भविक जन ॥
चोखे० ॥ ७ ॥ भला चित्राम रे न जोवणा साधुने, वलि स्त्री रा रूप भविक जन। गहणा
गांठा रे वस्त्र भारी पहेरीया, न देखना धर चूप भविक जन ॥ चोखे० ॥ ८ ॥ हाथी घोड़ारे

रथने पालखी,वलि नाटकीयारा नाच भविकजन। मार्गरे मांही दीठां थकां राग धरी मत राच भविक जन ॥ चोखे० ॥ ६ ॥ गुलाव चंपा रे चंमेलीने केवडी, अगर अबीर रा गन्ध भविक जन । कपूर कस्तूरीरे चोवा चन्दन वलि, ज्यांसु करे नहीं प्रतिबंध भविक जन ॥ चोखे० ॥ १० ॥ रस पांचांरा रे गृद्धिया होयजो मती, रूडा निजरां जो देख भविक जन ॥ चोखे ॥ ११ ॥ सूत्र अर्थनीरे न लेणी वाचणी, चालतां मारग माय भविक जन ॥ चोखे० ॥ १२ ॥ आमी सामी रे न करणी परियट्टणा, अणुपेहा धर्म विचार भविक जन । धर्म कथा नो रे उपदेश देणो नही, ए मारग अणगार भविक जन ॥ चोखे० १३ ॥ केई नाम धरावे रे साधु मोटका, चालता मारग माय भविक जन । आडा अवलारे ऊँचे मुख जोवता, इरियारी खवर न कांई भविक जन ॥ चोखे० ॥ १४ ॥ लवाड लडाई रे मार्गमें न करे, निंद्या ने गुणग्राम भविक जन । अवगुण इतरारे द्रव्ये उपजे, ते सुणज्यो अभिराम भविक जन ॥ चोखे० ॥ १५ ॥ ठोकर लागे रे पग पीड़ा हुवे, भांगे कांटा ने सूल भविक जन। पाऊँ भरीजे रे भिष्टादिक करी, मारग जावे भूल भविक जन ॥ चोखे० ॥ १६ ॥ वलि आखड़ने

रे हेठो पड़े, भांगे पगने हाथ भविक जन। दीठां विना रे खबर न कांई पडे, दिन धोले जाणे रात भविक जन ॥ चोखे० ॥ १७ ॥ जयणा करजोरे जीव छकायनी, इरिया सुमति निसाण भविकजन। प्रथम सेनाण रे शुद्ध साधुनो, लीजो चतुर पिछाण भविक जन ॥ चोखे० ॥ १८ ॥ सुमति साचेरे मन ए पाले ते जति, तो कटे भवना फंद भविक जन। ऋषि रायचन्द जोरे कहे शासता, पामे परमाणन्द भविक जन ॥ चोखे० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥ सुमति सुणो हिवे दूसरी, भाखु तिणरो नाम।
शुद्ध मारगने सेवने, तजो दूसरा काम ॥ १ ॥
भाषासुमति जाणीये, जिन शासन रो मूल।
साधु भेष ले सूं कियो, धोलां पाडी धूल ॥ २ ॥

ढाल २ जी।

साधु धन्य थे जीता मोहणी ॥ ए देशी ॥ सत्य व्यवहार भाषा भली रे, बोलणी भाषा दोय साधु। असत्य मीश्रने परीहरो, ज्युं दोष न लागे कोय साध

५ सु०
३-गु०
४

भापा वोलज्यो, ज्युं दूजी सुमति थाय शुद्ध साधु । मीठी मिसरी सारखी, जाण भल्यो
दूध साधु ॥ नि० ॥ २ ॥ क्षेत्र थकी तो चालतां, करनी नही कांई वात साधु । उतावलो
नहीं वोलणो, गयां पीछे पहोर रात साधु ॥ नि० ॥ ३ ॥ मन अति उज्वल राखणो, दीनी
शिखामण पाल साधु । भाव थकी भली तरेह, आठ वाना देओ टाल साधु ॥ नि० ॥४॥
क्रोध मान माया वशे, लोभ हांसो भय जाण साधु । मुखे और विकथा वलि, एह त्याग्यां
निर्वाण साधु ॥ नि० ॥ ५ ॥ केई नाम धरावे साधुरो, वोले कड़वा बोल साधु । भेष ल-
जावे लोकमें थारो वधे कठासुं तोल साधु ॥ नि० ॥ ६ ॥ रीस वसेरे कारा दीये, बडका
वोलो तेह साधु । तुरत तुंकारो काढदे, थोड़ामें काढे छेह साधु ॥ नि० ॥ ७ ॥ आपणा
वखाण करे आपसुं, कुण छै मुज समान साधु । ते साधु स्याणा नही, ओलखीयो नहीं
ज्ञान साधु ॥ नि० ॥ ८ ॥ हूं शास्त्रमें समजुं घणो, जाणे बोले वाचारो धिंग साधु । कप-
टाई घणी केलवे, इसो साधु जाणे द्रव्य लिंग साधु ॥ नि० ॥ ९ ॥ परना छिद्र जोयवो
करे, पोतारो देवे ढांक साधु । वडाईमें भागे घणो वोलण हि में वांक साधु ॥नि०॥१०॥ लवा-

५ सु०
३-गु०
६

ड़में लाग्यो रहे, माथा पच भरपूर साधु। बोले अलखावणो ईसका करे, विनय भगतिसु
दूर साधु ॥ नि०॥११॥ गुरुसु पिण गुदरे नहीं गुरु भायासे तोडे हेत साधु । आर्यासुं आंट
राखे धणी, लड काढे पाधरे खेत साधु ॥ नि० ॥ १२ ॥ श्रावक सुं समाधि करे, वधारे
घणो वाद साधु ॥ उपर आणे बोल आपणो, तिणमें किस्यो संवाद साधु ॥ नि० ॥
॥ १३ ॥ श्रावकासुं शुद्ध बोले नहीं, करोत सरिखावेण साधु । दुःखकारी दुर्भागियो, शत्रु
करदे सेंग साधु ॥ नि० ॥१४॥ परने पीड़ा उपजे, तिण भाषा लागे पाप साधु । अवगुण
अधिको उपजे,कह्यो जिनेश्वर आप साधु ॥ नि० ॥ १५ ॥ साधु साध्वी सेंण हुवे, ते तो
बोले अमृत वाण साधु, करे नहीं कदाग्रहो, ए उत्तमरा सेंनाण साधु ॥ नि० ॥ १६ ॥
चतुर ते बोले चुपसुं, कदाच निकल जाय साधु । गोतम स्वामी नी परे, दीयो आणन्दने
खमाय "कह्यो सातमा अङ्गने माय साधु" ॥ नि० ॥१७॥ घणां सूत्रमें देखलो, जीभ्यां-
ने करनी वश साधु । ऋषि राय चन्द जी कहे, सांभलो ज्ञान भण्यां रो रस साधु ॥
निरवद्य० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ सुमति सुणो हिवे तीसरी, एषणा करनी शुद्ध ।
मुगति मारग ने उठिया, निर्मल ज्यारी बुद्ध ॥ १ ॥
रूप करो संजम तणी, द्रव्ये लीनो भेष ।
चारूं गतिरा पावणा, दशवैकालिक ल्यो देख ॥ २ ॥

ढाल ३ जो।

नित्य करूं साधुजीने वन्दणा ॥ ए देशी ॥ तीजी सुमति एषणा, आहार तणो अधिकारो ए। साचे मन ए पालजो, जाणो हुवे मुगति मझारो ए ॥ १ ॥ साधुने लेणो सूझतो, द्रव्य चेत्र काल भावो ए। सूत्र भण्या साधुते सही, ज्यारे नहीं संसारसुं दावो ए॥ साधुने० ॥ २ ॥ साधुने अर्थे कियो, ते आधाकर्मि अहारो ए। उदेशो नहीं आदरे, देवणने. कियो त्यारो ए ॥ साधुने० ॥ ३ ॥ पूईकर्मि निसीत मिले, ते तो आहार अशुद्धो ए। मिश्रसुं मन ना करे, तेहनी निर्मल बुद्धो ए ॥ साधुने० ॥ ४ ॥ थाप राखे साधुने अर्थे, पाहुणा करे पाछा ने आघा ए। अंधारे में करे चांनणो, साधुने लेणेरा त्यागो ए ॥ साधुने० ॥ ५ ॥ मोल

लेईने दीये वलि, उधारो देवे आणी ए। बदलाई लावे भलो, आपे सामो आणीए ॥ साधुने० ॥ ६ ॥ छांदी किवाँड खोली दीये, ऊँची अबखी ठामो ए। निर्वल पासेसुं खोसी दीये, एक सिरी आपे तामो ए॥ साधुने० ॥ ७ ॥ आंधण में ऊरे घणो, दोषण हुआ ए सोले ए । लगावे शुद्ध साधु ने, जो गृहस्थी हुए भेलो ए ॥ साधुने० ॥ ८ ॥

ढाल चोथी । हिवे राणी पद्मावती, एदेशी ॥

कुसामदि करे दातारनी, रमाडे बाल । जाणे अहार देसी आछी तरह, बांधे पेटनो पाल ॥ ओ मारग नहीं साधुरो ॥ ए टेर ॥ १ ॥ बेटा बहू बेटी माय बापरा, स्त्री भरतार । सासूने बहू सगा तणा, कहे समाचार ॥ ओ० ॥ २ ॥ लाभ अलाभ भाखे वलि, ज्योतिष निमित्त जोय । जनम मरण बतायदे, दोष तीजो होय ॥ ओ० ॥३॥ जात जणावे आपणी दीन दयामणो थाय । पूरो आहार आयो नहीं, मूंढो देवे कुमलाय ॥ ओ० ॥ ४ ॥ औषध ने भेषज करे, वलिदेवे सराप । लड विढ लेवे भोलियों, ज्ञानि कह्यो पाप ॥ ओ० ॥५॥ मान माया लोभे करी, हुआ दोषण दश । पेला पीछै साथे वलि, करे घणो जश ॥ ओ०

५ सु०
३-गु०
६

ढाळ

॥ ६ ॥ चारण ज्युं बिरदावली, भोजक ने भाट । अणदीधां अवगुण करे, थो थो वैठो पाट ॥ ओ० ॥ ७ ॥ विद्या फोर कामण करे, मन्त्र ने चून । संजोग केले सांवठा, इसडा करे खून ॥ ओ० ॥ ८ ॥ उपसणाना दोष ए, गलावे गर्व । उत्तम ते नहीं आदरे, साधु टाले सर्व ॥ ओ० ॥ ९ ॥ साधुने शङ्का उपजे, अथवा दातार । सचितसूं हाथ खरड्या हुवे, नहीं लेवे अणगार ॥ ओ० ॥ १० ॥ सचित करी ढांक्यो हुवे, मूलगे ठाम माय । आंधो पांगलो अजयणा करे, नहीं मिश्रनी चाय ॥ ओ० ॥ ११ ॥ पूरो शस्त्र प्रगम्यो नहीं, खरड्यां वासण ले धोय । तिड काढे ए नाखतो, एषणारा दश होय ॥ ओ० ॥ १२ ॥ द्रव्य थकी वस्त्र पातरां, थानक ए चार । दोष बयालीस एहवा, टाले अणगार ॥ ओ० ॥ १३ ॥ क्षेत्र थकी कोश दोय ते, आघो मत खांच । काल थकी तीन पहोर रे, मांडलारा पांच ॥ ओ० ॥ १४ ॥ रसनो लोलुपी थको, मेले अहार जोग । आछो मिला हर्षित हुवे, भूंडो मिला सोग ॥ ओ० ॥१५॥ तक तक जावे गौचरी, लावे ताजा माल निरस उपर मन नहीं, कुंदो वन रह्यो लाल ॥ ओ० ॥ १६ ॥ रसनो ग्रीधी थको, आरा-

रखे नीकल जाय जीव ॥ धन्य० ॥ ९ ॥ काचा श्रावक श्राविका, भोला आर्या साध । मों विना एक रसि किस्यूं, पड जाइसे प्रमाद ॥ धन्य० ॥ १० ॥ थानक वस्त्र पातरां, चोथे चार अहार । खपकर सूजतो भोगवे, ज्यांरी हूँ बलिहार ॥ धन्य० ॥ ११ ॥ तीजी सुमति आराधतां, पावे शास्वता सुख । पूज रायचंदजी कहे जिन तणे, नहीं कीणरी रूख ॥ धन्य० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ आदानभंडनीखेवणा, चोथी सुमति छै एह ।
उव्यां शिवपद साधुजी, पालसी, निश्चय देह ॥ १ ॥

ढाल ६ ठी ॥ कपूर हुवे अति उजलो रे, ए देशी ॥ साधुने आर्या तणा जी, उपगरण संख्या बत्तीस । कोई एक मोटा कारणे जी, भाख्या छै जगदीस ॥ १ ॥ ऋषीसर चोथी सुमति शुद्ध पाल ॥ ए टेर ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भावसु रे, दोषण सघला टाल ॥ ऋ० ॥ २ तीन जातरा पातरा जी, तीन तेना रे स्थान । झोली गोछो मांडलो जी, पडला तीन पीछान ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ पायकेसरी ते पूंजणी जी, पछेवडी तीन होय । चोलपटो रजो-

५ सु०
३ गु०
१३

हरणो मुहपती जी, एनं सतरे उपसर्ग जोय ॥ च्छ० ॥ ४ ॥ ए कह्यां दशमा अंगमें जी, पांचमें संवर द्वार। चिलमल ते डोरी वलिजी, परेच करतां आहार ॥ च्छ० ॥ ५ ॥ आकुं-चणपट कांचुवोजी, जांव्योने जोगपट । ए तीन उपगरण आर्या तणा जी, बृहत्कल्पमें प्रगट ॥ च्छ० ॥ ६ ॥ कांवल गरणी पूछणोजी, ए कल्पसूत्र रे माय । दशवैकालिक पांचमें जी, पात्रा नो लूणो थाप ॥ च्छ० ॥ ७ हिवे दस उपगरण कारणेजी, दांडो छत्र ए दोय । मातरीयो लाठी पाटलीजी, ए पांच अनुक्रमे होय ॥ च्छ० ॥ ८ ॥ चेलने चिलमिल कांवली जी. चर्म अने चर्मकोष। चर्मछेदन दशमो कह्यो जी, कारणे ए निर्दोष ॥ च्छ० ॥ ९ ॥ सरवाले ए साधुना जी, उपगरण कह्यां छत्तीस। पाटादिक पडिहारिया जी, लेण रह्यां जगदीस ॥ च्छ० ॥ १० ॥ द्रव्य थी ए सहु विधि कही जी, क्षेत्र थकी सर्व जाग। काल रे दोय टंका वलि जी, दिन रे सोलमें भाग ॥ च्छ० ॥ ११ ॥ देख पडिलेहोने पूंजणो जी, तेहना भेद पचवीस । उत्तराध्ययन वाईसमें जी, नही हुवे तो मतकरो रीस ॥ च्छ० ॥ १२ ॥ अखोडा पखोडा कह्यां जी, नव नव एम अठार। छपुरिमा एक दृष्टि कही जी, एह पचवीस

प्रकार ॥ ऋ० ॥ १३ ॥ दोष छ पड़िलेहणाजी, भांगा कह्यां वलि आठ। चोथो भांगो पहिलडो जी, शेष सातू इम आठ ॥ ऋ० ॥ १४ ॥ पाट बाजोटने पाटीयो जी, ज्यां पहेली नजरां देख। पूंजीने लीजे पीछैजी, दया विना छै भेष ॥ ऋ० ॥ १५ ॥ वस्त्र पात्र आपणोजी, गृहस्थीने घर माय। मेल्हीने नहीं जावणोजी, दोष कह्यो जिनराय ॥ ऋ० ॥ ॥ १६ ॥ पहेला धरती पूंजने जी, पिछै सहु मेल। ज्युं जयणा उपजे जीवनी जी, अरिहंत वचन मत ठेल ॥ ऋ० ॥ १७ ॥ पडिलेहणा दोय कालने जी, विचे नहीं करनी बात। उत्तराध्ययन छावीसमें जी, ज्ञानी देखाडी घात ॥ ऋ० ॥ १८ ॥ झडका पटका मत करो जी, जो नाम धराओ साध। अजयणा करतां थकां जी, उलटी पड़े छै खाध ॥ ऋ० ॥ ॥ १९ ॥ चोथी सुमतिने सांचवेजी, पावे शिव सुख पर्म। पूज रायचंदजी इम कहेजी, समकित सहित छै धर्म ॥ ऋ० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥ पांचमी सुमति शुद्धि तरह, पाले जे अणगार।
इण भव आराधिक हुवे, परभवमें खेवो पार ॥ १ ॥

संसारसु सनमुख हुवे, परभव साहामी पूठ ।
साधु भेष लेई सु कीयो, जनम गमायो झुठ ॥ २ ॥

ढाल ७ मी ॥ वीरे वखाणी राणी चेलणा, एदेशी ॥

परिठाणासुमति ए पांचमो जी, द्रव्य क्षेत्र कालने भाव । अर्थ न्यारा न्यारा ओलखो जी, प्रणमीने सत गुरु पाय ॥१॥ सुमति साधु तणी पांचमी जी, द्रव्य थी बोले ते आठ । वड़ी नीति लघु नीति खेल छे जी, नाकनो मेल निर्धाट ॥ सु० ॥ २ ॥ शरीर नो मेल आहार वध्योजी, उपधि आठमो देह । दश जायगा क्षेत्र थी वर्जणी जी, सांभलो मार्म छै जेह ॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रथम भांगे सहु परठवेजी, न हुवे पर प्राणीनो घात । समी हुवे भूमी पोली नहीं जी, मूंके वेगो दिनने रात ॥ सु० ॥ ४ ॥ घणीभूमे अति दूरो नही जी, नहीं अति ढूंकडो कोय । उंदरा प्रमुखना विल विना जी, त्रस प्राणी वीज न होय ॥ सु० ॥ ५ ॥ रात तथा दिन कालथी जी, भावथी भांगा छै चार । तीन भांगा तज परठवाजी, चोथो भांगो श्रीकार ॥ सु०॥ ६ ॥ दिवसे तो देखलै भूमिका जी, पूंजने परठवे रात ।

५ सु०
३-गु०
१६

चार आंगुल परमाण थी जी, न हुवे जीवनी घात ॥सु०॥ ७ ॥ जीवजंत नहीं जिण जायगा जी, थंडलो छै निर्दोष। दृष्टि चोखी तरह देखजो, ज्युं मीलसी तोने मोष ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रेमसुं धरती पूंजणी जी, नीलण फूलण टाल। विखरी नहीं वनस्पति जी, वलि कीड्यां तणो नाल ॥ सु० ॥ ९ ॥ नित्य प्रति देखणी भूमिका जी, रातरो पडे कोई काम। तीनसे सताईस मांडला जी, जेहनी जोवणी ताम ॥ सु० ॥ १० ॥ पगलो देणो पूंजने जी, कह्यो छे जिनदेव। आवस्सही करने नीकले जी, इन्द्र तणी आज्ञा लेव ॥ सु० ॥ ११ ॥ पुंज धरतीने परठणो जी, उच्चार पासवण खेल। छीदा छीदा करे जीम छांटणा जी, मांहे मांहे खाय नहीं मेल ॥ सु० ॥ १२ ॥ वोसरे वोसरे करी परठवे जी, निसीहि काम निषेध। गमणागमणी पडिक्कमें जी, इत्यादिक बहु भेद ॥ सु० ॥ १३ ॥ एक एक साधु ने साध्वी जी, ओघो ऊजलो थाय। पग धरती पूंजे नहीं, रखे ओघो मेलो हुइ जाय, ए सुमति नहीं साधु तणी जो ॥ १४ ॥ ऊँचो ऊँचो राखे हाथमें जी, मैं फुटरो कीनो जी धोय। देखणारो छै कामरो जी, पिण जीव जतन नहीं होय

५ सु० ३ गु० १७

॥ ए सुमति० ॥ १५ ॥ काजो पिण काढे नहीं जी, इउंहोलिया फिर रह्यो भार । पेट भरण रो अर्थियो जी, करदे जनम खुवार ॥ ए सु० ॥ १६ ॥ दिल मांय नाठी दया जी, जिणरे पूंजणसुं नही प्रेम । खांच मले जो आपमें जी, सहुने शिखामण एम ॥ ए सु० ॥ १७ ॥ साधु साध्वी शुद्धि तरह जी, आण जो मन आणंद । गुण लीजो अवगुण अलगो करो जी, पूज रायचंदजी भाषे संवंद ॥ ए सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ सुमति संवंध पूरो थयो, सुणी मत थायजो दीन ।
जो तुमने तिरणो हुवे, तो पालो गुप्ति तीन ॥ १ ॥
तीन गुप्ति वलि तिम कहुं, जो पाले अणगार ।
आवागमण अलगी करे, पामे भवनो पार ॥ २ ॥
मन वच काया करी, पाले संजम भार ।
शील सरोवरें झुलता, धन धन ते अणगार ॥ ३ ॥

ढाल ८ मी, ॥ अलवेल्यानी देशी ॥

मनगुप्ति कही पेलडी रे लाल, करड़ो तिणरो काम हो मुनीसर। घोड़ो ज्युं अवली वागरोरे लाल, चित्त चंचल कर ठाम हो मुनीसर ॥ १ ॥ तीन गुप्ति आराधिये रे लाल, साधुतणी छै रीत हो मुनीसर। थोड़ा दिनारी जांजली रे लाल, जासो जमवारो जीतहो मुनीसर ॥ तीन० ॥ २ ॥ आरंभ समारंभ नहीं चिंतवेरे लाल, देखे रूपवंती नार हो मुनीसर। पिण भोगवणी वंछे नहीं रे लाल, जिम वमियो आहार हो मुनीसर ॥तीन०। ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया ना करेरे लाल, लोभने दीधो छोड़ हो मुनीसर। धर्म शुक्ल ध्यावे सदा रे लाल, एक मुक्ति जावणरो कोड हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ ४ ॥ संजम सेति बाहीरे रे लाल, बारे न काढ़े मन हो मुनीसर। संकल्प विकल्प ना करेरे लाल, एहवा साधु धन्य हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ ५ ॥ वचन गुप्ति वलि दूसरीरे लाल, विकथा चारे निवारहो मुनीसर। स्त्रीकथा ए फूटरीरे लाल, विषय निजर मत भाल हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ ६ । वस्त्र गहना पेहरी नारी शोभतीरे लाल, संकल्प विकल्प निवार हो मुनीसर। विषयकषाय मन वश करोरे लाल, नहीं तो जाणजो कालकूट जहेर हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ ७ ॥

आ दाता आ सुंवड़ीरे लाल. आ बूढीने आ जवान हो मुनीसर। आ कालीने आ फूटरीरे लाल, न करे एहवा वखाणहो मुनीसर ॥ तीन० ॥ ८ ॥ ए देश सुखकारी सुहावनो रे लाल, ए देश दुखकार हो मुनीसर। शहेर गाम गीणे नही रे लाल, ए आचार अतिसार हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ ६ ॥ ए राजा आछो वड़ोरे लाल, ए राजा गरीब सेतान हो मुनीसर। ए भोजन स्वाद घणो रे लाल, ए माठो धान कुधान हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ १० इम ही वलि असंजतीरे लाल, न कहे आव जाव वेस हो मुनीसर। ऊठ सूय एम ना कहे रे लाल, न देवे सावद्य उपदेश हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ ११ ॥ कायगुप्ति हिवे तीसरी रे लाल, विना पुंज्या पग हाथ हो मुनीसर। ओटिगण पाट पाटला रे लाल, नहीं ले दिवसने रात हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ १२ ॥ हाथ खुणा हलावे नही रे लाल, घणो धूणे नही अंग हो मुनीसर। अति आलस मोडे नही रे लाल, संजमसु सदा रंग हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ १३ ॥ दड़वड पिण दोडे नही रे लाल, काय चपलता मूंक हो मुनीसर। झटका पटका मत करो रे लाल, अजयणा छीक म थूक हो मुनी-

५ सु० ३-गु० २०

ढाल

सर ॥ तीन० ॥ १४ ॥ काय गोपवे जीम काछबो रे लाल, पाले सखरी तरह शील हो
मुनीसर । सुसरखा नहीं सांचवेरे लाल, ते लहेसी मुक्ति लील हो मुनीसर ॥ तीन० ॥
॥ १५ ॥ पांच सुमति तीन गुप्ति रे लाल, प्रवचन पाले आठ हो मुनीसर । ते सुख पाम-
सी शास्वतारे लाल, देवे कर्मने काट हो मुनीसर ॥ १६ ॥ उत्तराध्ययन चोवीसमें रे लाल
सुमति गुप्ति अधिकार हो मुनीसर । तेहने अनुसारे इहां रे लाल, वलि चोज विस्तार हो
मुनीसर ॥ तीन० ॥ १७ ॥ अधिको ओछो जो कोई आवीयो रे लाल, ते मिच्छामि
दुक्कडं मोय हो मुनीसर । पूज जयमलजीरे प्रसादथीरे लाल, ऋषि रायचंदजी कहे जोड़
हो मुनीसर ॥ तीन० ॥ १८ ॥ संमत अठारे इक्कीसमेरे लाल, गढ जोधाणो मझार हो
मुनीसर । फागुण वदि एकम दिने रे लाल, सुणताई जय जयकार हो मुनीसर ॥तीन०॥
॥ १९ ॥

॥ इति श्री आठ प्रवचन माता (सुमति गुप्ति) री चउपई ॥

सं० १९७९ माघ शुदि १ गुरुवारे बीकानेर मध्ये ।

॥ श्री अगरचन्द्र भैरोदान सेठिया जैन ग्रन्थालय ॥

॥ व्याख्यान के प्रारम्भ की स्तुति ॥

वीर हेमाचलसें निकसी, गुरु गौतम के श्रुत कूड ढली है । मोह महाचल भेद चली, जग की जडता सब दूर करी है ॥
ज्ञानपयोदधि मायरली, बहू भग तरगन सें उछली हैं । ता सूची सारद गङ्ग नदी, प्रणमी अजली निज सीसधरी है ॥
ज्ञानहु नीर भरी सलिला, सुरधेनू प्रमोद सुखीर निध्यानी । कर्म जो व्याधि हरन्त सुधा, अघ मेल हरन्त शीवा करमानो ॥
जैन सिद्धान्त की ज्योति वढी, सुर देवस्वरूप महा सुखदानी । लोक अलोक प्रकाश भयो, मुनिराज बखानत है जिन वानी ॥
सोभित देव विपे मघवा, अरुवृन्द विपे शशी मगलकारी । भूप समूह विपे वली चक—पति प्रगटे वल केशव भारी ॥
नागीन में धरणींन्द्र वडो, अरु है असुरोनमें चवनईन्द्र अवतारी । ज्यु जिन शासन सभा विपे, मुनिराज दीपे श्रूत ज्ञान भण्डारी ॥

कैसे कर केतकी कणेर एक कहियो जाय, आक दूध गाय दूध अन्तर घणेरो है ।
रिरो होत पीली पिण होंस करे कचन की, कहा काग वानी कहा कोयल की टेर है ॥
कहा भानु तेज भयो आगीयो विचारो कहा, पूनम को उजवालो कहा अमावस अँधेरो है ।
पक्ष छोड पारखी निहाल देख निगा कर, जैन वैन और वैन अन्तर घणेरो है ॥
वीतराग वानी साची मोक्षकी निशानी जानी, माहा सुकृतकी खानी ज्ञानी आप मुख बखानी है ।
इनको आराधके तिरोया है अनन्त जीव, सोही निहाल जाण सरधा मन आणी है ॥
सरधा है सार धार सरधा से खेवो पार, सरधा विन जीव खुवार निश्चय कर मानी है ।
वाणी तो घणेरी पण वीतराग तुल्ये नहीं, इनके सिवाय और छोरासी कहानी है ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन पच्चीसी प्रारम्भ ॥

॥ दोहा ॥ सुरतरु जिन समरुं सदा, चार वीस जिनचंद। गिरवारां गुण गायवा, उपनो मन आनंद ॥ १ ॥

प्रणमुं चउवीसे प्रेमसुं, सखरो अर्थ सुजाण। आपण पर उपगारने, करवा कोड कल्याण ॥ २ ॥

॥ सवैया ३१ सा ॥

नाभि मरुदेव्या नंद, छोड़ दिया सहु फंद, जोग लियो जिणचंद, ममता मिटाई है। करी ने करम हांण, लियो है अनंत नाण, भविक कमल भाण, कुमति उडाई है ॥ तिरण तारण स्वाम, पाम्यां शिवपुर धाम, तिहुंलोक ठाम ठाम, कीरति सवाई है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, आदि अरिहंत ध्यान, महासुख दाई है ॥ १ ॥ छोड़ीने सरव आथ, जोग लियो जगनाथ, शिवने चलायो साथ, अमीरस वाण है। सुण सुण राय राण, साचो मत लियो जाण, निशदिन जिन आण, करी परमाण है ॥ बालियो करम वंश, राख्यो नहीं एक अंश, उत्तम परमहंस, पाम्या निवारण है। भणे मुनि चद्रभान, सुणो हो विवेकवान, अजितजिणंद ध्यान, महा सुख खांण है ॥ २ ॥ वमण आहार जिम, अंगनाने गिणी एम, ततक्षण कियो नेम, तज्यां राजकाज है। घातियां करम घाय, केवली ते ज्ञान पाय, उपकारी जिनराय, बांधी धर्म ज्याज है। जीव घणां किया दृढ़, क्षपक की श्रेणी चढ़, पामियां मुगति गढ़, अविचल राज है ॥ भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, संभव जिनेन्द्र ध्यान, अखंड

जहाज है ॥ ३ ॥ देखीने अधिक रूप, परशसे सुर भूप, करी चित्त धर चूप, वार वार वदण। जगती अस्थिर जाण, सुपन सजारो जाण, भवहर भगवान, तोड्या मोह फदणं॥ अखड चारित्र पाल, मोक्ष गया कर्म टाल, शास्वता सदाई काल, लिया सुर कदण। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, अंगमें उलट आण, वन्दो अभिनंदन ॥ ४ ॥ सुमति सुमति धार, कुमति ने देई टार, सुमति भोजन सार, जीस्या गुण पात हैं। सुमति में रह्या झूल, सुमतिरा पेर्या फूल, सुमति भूषण मूल, दीठा दुख जात है ॥ सुमति दातार सूर, अन्धकार कियो दूर, सुमति रा रिणतूर, वाजे दिन रात है। भणे मुनि चन्द्रभाल, सुणो हो विवेकवान, सुमति रा किया ध्यान, सुमताइ आते है ॥ ५॥ हिंगलु वरण गात, लीलामणि दिन रात, जोग लियो जगतात, तजी राज रिद्धहै। तप जप खप कर, पट मास जिनवर, पाम्यां है केवल वर, हुवा परसिद्ध है ॥ सुरनर इन्द्र पास, कियो ज्ञान परकाश, कलेश करम नाश, करी थया सिद्ध है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, पदम जिनेन्द्र ध्यान, किया नवनिद्ध है ॥ ६ ॥ लोकांतिक सुर आय, प्रतिबोध्या जिनराय, बेठा किम घरमाय, जगत वबूर है। काम भोग तजी कीच, मार लियो मोहनीच, बारे पुरुषदा बीच, गाजे ज्यु शार्दुल है ॥ राव रंक पर मुक, काहुकी न रखे रुख, शिवपुर पाया सुख, साश्वता अतुल है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, सुपार्श्व जिणद ध्यान, महा सुख मूल है ॥ ७॥ चदसी वरण देह, लागे दीठा धर्म नेह, उत्तम चारित्र लेह, तज्या लोभ वैरी है। मार लिया मोह पाप, भारी तेज परताप, तीनु ही भवन आप, निज आण फेरी है। सुरनर करे सेव, रात दिन नितमेव, हुवा निरजन देव, वाजी जश भेरी है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, चन्द्रप्रभु जिन ध्यान, मुगतिकी सेरी है ॥ ८॥ सुगरीव रायनद, देही फूल अरविन्द, परहरे सहु फद, हुवा अणगार है। करणी करीने

हद, मार लियो मोह मद, पामिया केवल पद, जगत आधार हैं ॥ उपकार कियो अति, मेट दियो मिथ्यामति, पामी अविचल गति, सुखां को न पार है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, सुविधि जिणंद ध्यान, महासुख कार हैं ॥ ६ ॥ दाघ ज्वर रोग तात, गयो मात तणे हात, नाम द्यो शीतल नाथ, दियो माय बाप है। जगत दुखांसु डर, मनमें वैराग धर, काम भोग पर हर, तज्यां सब पाप है ॥ भलो उपदेश दीध, जगत शीतल कीध, अविचलगढ सिद्ध, मेटिया संताप हैं। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, शीतल जिणंद ध्यान, टाले भव ताप है ॥ १० ॥ ज्ञान घोड़े भगवान, चढ्या बहु बलवान, शीलसैना सावधान, समगत शेल है। धीरज कटारी धार, तपस्या की तरवार, गुणांकी गुरजसार, पाप लिया पेल हैं ॥ जीत हुई जिनराय, सुरनर लाग्यां पाय, मुगत बिराज्या जाय, सदा सुख रेल है। भणे मुनि चन्द्रभान,सुणो हो विवेकवान, श्रेयांस जिणंद ध्यान, आपे सुखवेल हैं ॥ ११ ॥ वासुपूज्य जाया पूत, शिवपुर दिया सूत, ओपे घणां अद्भूत, संवरी कषाय हैं। अठलख दशवास, लीलामणी गृहवास, परिहरे मोहपास, तजी लोभ लाय है ॥ धरीने शुकल ध्यान, पाम्या पद निरवाण, सुर नर राय राण, वंदे शिर नाय है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, वासुपूज्य जिन ध्यान, महा सुखदाई है ॥ १२ ॥ विमल विमल वेण, अमल कमल नेण, सकल जीवारा सेण, दीठा जागे प्रेम है। समतासुं रहा सोभ, लाभे नहीं मूल लोभ, सायर ज्युं आण खोभ, निरमल नेम है ॥ सुरनर काज सार, जनम मरण जार, निरमल निराकार, लया सुख पेम है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, विमल विमलवेण; चिन्तामणि जेम है ॥ १३ ॥ अयोध्यापुरी का ईश, आयुः वर्ष लखतीश, जोग लियो जगदीश; दया दिल आणी है। काम कुंभ जिम स्वाम, सारिया जगत काम, जीव घणां ठाम ठाम, किया गुण खाणी है ॥ सुखदाई सुरतरु, पारस जिम गुण करु, अजर अमरपुर, हुआ निरवाणी है। भणे मुनि चन्द्रभान

सुणो हो विवेकवान, अनंत केवल ज्ञान, शिवकी निशाणी है ॥ १४ ॥ ग्ररम धरम धार, कीधा घणा उपकार, उपदेश दियो सार, मोटा किरपाल है। उघाड्या अतर नेत्र, किया घणा सावचेत, पर उपकार हेत, बाधी धर्मपाल है॥ धर्मको व्यापार कीध, अनुपम चीज लीध, तिहु लोक परसिद्ध, कीरति विशाल है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, धरम जिणद ध्यान, काटे भव जाल है ॥ १५ ॥ पट खड शिरदार, चोसठ हजार नार, हय गय परिवार, अखूट भडार है। अनुत्तर काम भोग, आय मिल्यो पुन्य जोग, खमा खमा करे लोग, कीरति अपार है॥ ऐसी ऋद्धि तणा ठाट, तजी लियो शिव वाट, आठूही करम काट, हुआ सिद्ध सार है। चन्द्रभान चित्त धार, शीख कही हितकार, शातिनाथ तंतसार, जप्या जे जै कार है ॥ १६ ॥ चउदे रतन सार, अद्भुत गुणागार, नरवर अज्ञाकार, वत्तीस हजार है। षोडश हजार सुर, आज्ञाकारी ततपर, षटखंड नरवर, सारा शिरदार है॥ नाटक वत्तीस विध, ऋद्धि सिद्धि नवनिध, सऊ छोडी हुवा सिद्ध, लीया सुख सार है। भणे मुनि चन्द्रमान, सुणो हो विवेकवान, कुंथु नाथ ततसार, तिरन स सार है ॥ १७ ॥ चउरासी लख वाज, रथ रुडा गजराज, पाय दल सर्व साज, छिनवे करोड है। छिनवे करोड गाव,चोसठ हजार वाम, पासवान दुनी ताम, रहे कर जोड है। ॥ ऐसी ऋद्धि तज कर, जोग लियो जिनवर, अजर अमरपुर, गया कर्म तोड है। भणे मुनि चन्द्रभाण, सुणो हो विवेकवान, अरिनाम तत-सार, कटे कर्म क्रोड है ॥ १८ ॥ विरगत रया आप, जगको न लागो पाप, परहर सउताप, बैठा धर्म पोत है। दयावत खत दत, गुणा तणो नहीं अंत, उपगारी अरिहंत, टाली मिथ्या छोड है॥ घट माहि ज्ञान घाल, काटिया करम लाल, धरममें रह्या लाल, लई शिव जोत है। भणे मुनि चन्द्रभाण, सुणो हो विवेकवान, मल्लिजिन किया ध्यान, निरमल होत है ॥ १९ ॥ वीसमा जिणदराय, सावली सुरत काय, चारित्र सु चित्त लाय, तज्या राज ठाठ है। आरिस्या ज्यु यथातथ, जिनमत परमत,

उपदिशा जिनपथ, माया तणा मेट है ॥ पातिक पडल हर, घटमें उद्योत कर, जीव घणां जिनवर, घाल्यां शिव वाट है। भणे मुनि चंद्रभान, सुणो हो विवेकवान, मुनि सुव्रत ध्यान सेती,मिटे कर्म काट है ॥ २० ॥ राजऋद्धि परिहर, जोग लियो जिनवर, डोले नहीं तिल भर, मेरु ज्युं अडिग है। मिथ्यामत अति घोर, फेल रह्यो चिहुं ओर, ताही कुं हरण जोर, निरमल स्वर्ग है। थापिया तिरथ च्यार, तार्या घणां नरनार, शिवपुर पाम्यां सार, सुखांको न थाग है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, नमिजिन किया ध्यान, नासे कर्म ढंग है ॥ २१ ॥ समुद्र विजय नन्द, बावीसमा जिनचंद, सोहत सुरत इंद, बाल ब्रह्मचारी है। पशु वेंण सुणी कान, ततक्षण वाली जान, वार वार कह्यो कान,ऐसी क्यु विचारी है ॥ नारी तणो म्हारे नेम, मुगतिसु लाग्यो प्रेम, राजमती रिठ्ठनेम, हुवा जोग धारी है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, नेम प्रभु किया ध्यान, महा सुखकारी है ॥ २२ ॥ नव कर तन मान, सोहत सुरत भान, षट् काया दियो दान, तजी धनराश है। बडभागी वीतराग, गुणां तणो नहीं थाग, जथातथ जिनमार्ग, कीयो परकाश है। मोक्ष गया कर्म तोड़, जगमें कीरत जोर, सुरनर ठौर ठौर, सुमरत पास है। भणे मुनि चंद्रभान, सुणो हो विवेकवान, पार्श्व प्रभु किया ध्यान, शिवपुर वास है ॥ २३ ॥ चोईसमा महावीर, शूरवीर महाधीर, वाणी मीठी दूध खीर, सिद्धारथ नंद है। नागिणीसी नारी जाण, घटमें वैराग्य आण, जोग लियो जग भाण, तज्या मोह फंद है। चवदे हजार संत, तार दिया भगवंत, करमा को करि अन्त; पाया सुख फन्द है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, महावीर किया ध्यान, उपजे आणंद है ॥ २४ ॥ तीर्थंकर वीस च्यार, गुणां तणो नहीं पार, मेरी बुद्धि अनुसार, किया मैं वखाण है। सवैया पच्चीस गाया, गुण जगदीश राया, भणे गुण निशदिन, करत कल्याण है। संवत अठारे वास, पंचावन माघ मास, शुदी पांचमी फली आस, वार भलो भानु है। भणे मुनि चन्द्रभाण, सुणो हो भविक वान, चोवीस जिणंद ध्यान, महा सुख खाण है ॥ २५ ॥ ॥ इति चतुर्विंशति जिन पच्चीसी समाप्तम् ॥

श्री वीतरागाय नम ।

अथ नववाड ब्रह्मचर्यं लिख्यते ।

दोहा—प्रणमु पंच परमेसरू, सिद्ध समरूं भगवंत । वलि प्रणमुं भावे करी, चोवीसी अनंत ॥ १॥ समोसर्या श्री वीरजी, राजग्रहीसु विसेश । बारे परषदा आगले, इण पर दे उपदेश ॥ २ ॥ जग माहे सहु कोय छे, तप जप क्रिया आचार । शीलव्रत गुण तेहना, कहता न आवे पार ॥ ३ ॥ नव वाड कही शीलनी, राखीजे गुणवंत । तेहनी सुर सानिध करे, जगमें जश पावंत ।४। हिवे नव वाड जुदी जुदी, भाखी श्री भगवंत । सुणता हिवडो उल्लसे, आराध्या सुख अनन्त । ५ ।

ढाल पहेली—हाथी तो आकाशे चलियो विद्याधर विद्यावलीयो० ए देशी ॥

पेली वाडज सामी, काइ इम भाषे अन्तर जामी हो भवीकजन । शील सदासुखकारी ॥ १ ॥ शील रतन व्रतधारी, जिणने चिहुं (च्यारूं) गति पार नीवारी हो भ० । शील० ॥ २ ॥ थानक निरमल नीरखी, काइ, तिहा रहीया मन हरखी हो भ० । शील० ॥ ३ ॥ नारी प्रसग निवारो, काइ, सफल करो अवतारो हो भ० । शील० ॥ ४ ॥ चित्रामणकी नारी, कांइ, तिहा रह्या उपजे विकारी हो भ० । शील ॥ ५ ॥ नारी तणो तिहा वासो, काइ, तिहा रह्या हुवे जगमें हासो हो भ० । शील० ॥ ६ ॥ मूसक ऊपर मंजारी, काइ, जिम त्रियाने ब्रह्मचारी हो भ० । शील० ॥ ७ ॥

सुवट पींजर में रहीये, कांइ, 'देख बिलाड़ीसुं बीये (डरीये) हो भ० । शील० ॥ ८ ॥ दादुर जलमें रहिये, कांइ, विषहर देख बीहे हो भ० । शील० ॥ ६ ॥ इण दृष्टान्ते ब्रह्मचारी, कांइ, वस्तीमें रहिये विचारी हो भ० । शील ॥ १० ॥ पहिली वाड़ इम राखे, कांइ, इम वीर जिनेश्वर भाखे हो भ० । शील० ॥ ११ ॥ अगरचन्द इम भाषे, हिवे, बीजी बाड़ प्रकाशे हो भ० । शील ॥१२॥

दोहा—हिवे श्री वीर जिणंदजी, भाषे बीजी वाड़ । आराध्यां संकट टले, मेटे मननी राड ॥ १ ॥

ढाल दुजी—बाबाजोरे कार वागल गाड ॥ ए देशी ॥

बीजी वाड़ जिनेश्वर भाषे । इम बारे परखदा साखेरे, धन धन साधु वैरागी ॥ १ ॥ नारी इकेलीसुं बात न करिये । तिण सेती निश्चय डरिये रे । धन० ॥ २ ॥ धर्म कथा न कहे तिण आगे । जिण दिठां मन मद जागेरे । धन० ॥ ३ ॥ कोइ नर नारी दृष्टी आवे तो, आंगुलीयां दिखलावेरे । धन० ॥ ४ ॥ दोषी दुरजनके निजरां आवे । तो शील कलंक चढावेरे । धन० ॥ ५ ॥ वनिता (स्त्रीना) वचने रती पती खोभे । इम संजम नहीं सोभेरे ॥ धन० ॥ ६ ॥ पात झड़े पवन प्रसंगे । तो शील तणो व्रत भंगेरे । धन० ॥ ७ ॥ मनमें जाणे हूँ शीले साचो । पिण जग सहु मांने काचोरे । धन० ॥ ८ ॥ नींबू दूर थकी जे निरखी । ए तो रसना स्वाद लै परखीरे । धन० ॥ ६ ॥ दीपक देख पतंगीयो झंपे । तिम नारीसुं ब्रह्मचारी कंपेरे । धन० ॥ १० ॥ इण दृष्टान्ते थे ब्रह्मचारी । थे तो वस्तीमें रहिजो वीचारीरे । धन० ॥ ११ ॥ बीजी वाड़ इण पर राखे । अगरचन्द मुनि भाषेरे । धन० ॥ १२ ॥

दोहा—सिद्धारथ कुलचंदजी, समोसरण मझार । इण पर दे उपदेशना, तीजी वाड़ उचार ॥ १ ॥

ढाल तीजी—ढोलाजी रेणरो काइ जाय । ए देशी ॥

तीजी वाड सुहामणी हो, श्रीजिन, भाषे वीरजिणंद। मन वचन काया आदरे हो, श्रीजिन, जिण घर हर्ष आणद, श्रीजिन साभलजो सहु कोय ॥१॥ साभलतां सुख उपजे हो, श्रीजिन, आराध्या शिव सुख होय श्रीजिन, साभलज्या० ॥ २ ॥ आसण छोडा नारीनो हो, श्रीजिन, राखो शील रत्न। सर्व व्रतामें शिर सेहरो हो, श्री- जिन, करीये पहला जतन, श्रीजिन, साभलज्यो ॥ ३ ॥ सिज्यादिकने पाटले हो, श्रीजिन, जिहा तिहा वेसे नार, मुहूर्त्त एक तिहा लगे हो, श्रीजिन, नहीं वेसे ब्रह्मचार, श्रीजिन, सा० ॥४॥ पुत्री पट वर्षा तणी हो श्रीजिन, ते पिण सेज्यारे माय, इम जाणी सेवे नहीं हो, श्रीजिन, नारीनो आसण ताम, श्रीजिन, सा० ॥५॥ आसण सेव्या नारीनो हो,श्रीजिन, भाजो शील अखड, कवडी सटे नहीं वेचीये हो, श्रीजिन गुण मणी रत्न करंड, श्रीजिन, सा० ॥ ६ ॥ आसण फरस्या पवडो हो, श्रीजिन, बोले दोष भगवत, ते काया फरसे जे नरा हो. श्रीजिन, चिहुं गत माहि भमंत, श्रीजिन, सा० ॥ ७ ॥ तिणथी आसण छोडदो हो, श्रीजिन, जो राखो तुमे शील, कर्म कटक सहु भाजसो हो, श्रजिन, लेसो अनुक्रमे लील, श्रीजिन, सा० ॥ ८ ॥ रमणी फेरे वेसणो हो श्रीजिन, नहीं वेसे गुणवत, विगडे ब्रह्मचर्य मोटको हो, श्रीजिन, दूधमें लूणनो दृष्टन्त, श्रीजिन, सा० ॥ ९ ॥ स्फटिक रत्न जिम निर्मलो हो श्रीजिन, नहीं फरसे जसु रग, नीर न फरसे कमोदनी हो, श्रीजिन, तिम राखो व्रत सुरङ्ग श्रीजिन, सा० ॥ १० ॥ इण दृष्टाते राखिये हो, श्रीजिन, तीजी वाड अखंड, अगरचन्द कहे तेहने हो, श्रीजिन, ते वलवंत प्रचड, श्रीजिन, सा० ॥ ११ ॥

दोहा—श्रीवर्द्धमान जिनवर, सुखसंपत दातार। चौथी वाड इम ऊचरे, समोसरण मझार ॥ १ ॥

ढाल चौथी—तट सरवरनो रे घणो रलीयामणो ॥ ए देशी ॥

चोथी वाड़रे श्रीवीर जिणन्द जी, भाखे भलो उपदेश। शील सुरङ्गो रे राचो रङ्गसुं, पामो मुगति विशेष। धन धन जे नर ओ व्रत आदरे, ज्यां घर हर्ष आणन्द ॥ १ ॥ कामण केरा रे काम कटकने, मत जोइजो रे कौय। भएड कुचेष्टा रे निरखत खिणे, भांजे शील अमोल ॥ धन० २ ॥ चिहुं गज रूपी रे कूप जगत में, रमणी विषय विकार। रत्न अमोलक भाजे तेहथी, निरख्या मैंप दीदार ॥ धन० ॥ ३ ॥ कामण केरा शास्त्र विनोदरा, नहीं बांचीजे ब्रह्मचार। शील रत्नरा रे जे तुमे लालची, विषिया विषय निवार। धन० ॥ ४ ॥ जिम कोइ पन्थीरे चाल्यो मारगे, मिलियो तसकर आय। धन कंचण रे मूल गमायने, पन्थी निर्धन थाय ॥ धन० ॥ ५ ॥ जिम ब्रह्मचारी रे शिवपुर पंथीयो, भरीयो शील तणो धनमाल। कामण रूपी रे तसकर आय मिल्यां, दीयो शील लूटाय ॥ धन० ॥ ६ ॥ जिम कोई अन्धक वैद्य वचन करी, दिनकर (सूर्य्य) सामो मती जोय। पडल तणो दुख भांजसो, लोचन निर्मल होय ॥ धन० ॥ ७ ॥ वैद्य प्रकासे हो दिनकर रेणीयो,फिर सामो मती ज़ोय। वचन न मान्यो सामो जोइयो, ततखिण अन्धक होय ॥ धन० ॥ ८ ॥ नारी केरा रूप विचक्षणा, मति निरखो तुम जोय। ते रूप अन्धकनी परे, इण पर होसी रे सोय ॥ धन० ॥ ९ ॥ नारी धूतारीरे इण संसारमें, नारी कपटनी खाण। रूप शिणगाररे हो सामो मत जोयज्यो, इम भाखे वर्द्धमान ॥ धन० ॥ १० ॥ रमणी रूपे हो जागे मोहणी, राचे विषय विकार। हाथमें दीवो रे कूप मांहे पड़े, इम झम्पे मुढ गिंवार ॥ धन० ॥ ११ ॥ इण दृष्टान्ते हो क्षिण नहीं राचीये, कामण केरे सरूप, अगरचन्द इम विनवे हो, चोथी वाड़ अनूप। धन० ॥ १२ ॥

दोहा—सुगणा साधु शिरोमणा, जगपति जोगी सरूप। भाखे परषदा आगले, पांचमी वाड़ अनूप ॥

पाचमी ढाल—ऊेवो सुख मुझने दियो तुमे, दो निज वाप कवर जी । पदेशी ॥

चोमुख सिंहासन थयो, चमर ढोले चोसट इन्द, सोभागी, भामडल पुठे भलो, बेठा वीर जिणद, सोभागी, अमृत वाणी उचरे, सुन्दर व्रत चोथो कह्यो ॥ ए टेर ॥ १ ॥ पाचमी वाड जिनेसरू, इम भाखे वचन रसाल, सोभागी, नारी मिले वहु गुन्थे भविक लोक गुणमाल, सो० सु० ॥ २ ॥ कामण केरा गीतने, नहीं सुणे चित्त लगाय, सो०, नारी मिले वहु एकठी, नहीं निरखे कोतक जाय सो० सु० ॥ ३ ॥ हसे रमे क्रीडाकरे, गावे गालने गीत, सो०, तिहा न वसे ब्रह्मचारीजी, ब्रह्मचारीनी आइ छे रीत, सो० सु० ॥ ४ ॥ रुदन करे हासी करे, वोले नेहादिकनो बोल, सो०, शीलवन्त नहीं सामले, तिहा चञ्चल हुवे मन, सो० सु० ॥ ५ ॥ नहीं सुणे नारी तणा, रूडा रिम झिम नेवर नाद, सो०, सुणता ततखिण ऊपजे, बहु मदन तणो उदमाद, सो० सु ॥ ६ ॥ नर नारी रजनी समे, बोले नेहादिकना बचन सो०, शीलवन्त नहीं साभले, तिहा चञ्चल होवे मन, सो० सु० ॥ ७ ॥ दुरजन खेले पेचमे, पेली बोले मधुरा वेण, सो० अन्तर कपट हिये बसे, पछे घाले वन्धन पेच, सो० सु० ॥ ८ ॥ मेह तणो गरजन सुणे, बहु मोर करे टहुकर, सो० ललित वचन नारी तणा, काइ सुणता उपजे विकार, सो० सु० ॥ ९ ॥ वीणा शब्द काना सुणे, मृग आवे तिण वन, सो० बन्धन करे पारधी, तिम नारी केरा वचन सो० सु० ॥ १० ॥ लाख ने मेण जावे गली, अग्नि केरे परसग, सो० सराग वचन सुन्दर तणा, करे शील रत्नो भग, सो० सु० ॥ ११ ॥ इण दृष्टान्ते राखीये, पाचमी वाड अमोल, सो० अगरचन्द मन रगसु, इम जम्पे रूडा बोल, सो० सु० ॥ १२ ॥

दोहा—त्रिलोक शिर सेहरो, चोवीसमा जिणचन्द । छठी वाड इम उचरे, भविक यथा आणन्द ॥ १ ॥

ढाल छठी—पदमणी बोले वीरा वादला रे ॥ ए देशी ॥

छठी वाड़ शिरोमणीरे, गुण मणी रयण विशेष हो। सिद्धारथ तसु सुंदरुजी, इण पर दे उपदेश हो। वीर जिणन्द इम उचरेजी, बारे परखदा मझार हो ॥ टेर ॥ १ ॥ पूरब भोग नहीं चिन्तवेजी, चिन्तवीयां दुख थाय हो। शील रत्न का लालची जी; विकथा न आणो मन माय हो। वी० ॥ २ ॥ क्या मुझ सुखणी सुन्दरी जी, क्या मुज सखरी सेज हो। क्या मन्दिर क्या मालियाजी, इम मती चिन्तवो एज हो। वी० ॥ ३ ॥ आगे हूं करतो रङ्गसुंजी, रूडा भोग विलास हो। हिवे इणपर वसुंजी,नहीं मुज रमणी पास हो ।। वी० ॥ ४ ॥ इम मती चिन्तवो पूठलाजी, भोगवीया कोई भोग हो। मन मद राचे चिन्तव्यांजी, रुड़ा न केसी लोग हो। वी० ॥ ५ ॥ कोइक नर परदेशीयोजी, आय उतारो कीध हो। अहि विष तक्र मथन करीजी, अण जाणी तिण पीध हो। वी० ॥ ६ ॥ कोइयक नारी देखतांजी, नहीं जाणे कोई बात हो। गयो प्रदेशी पावणोजी, जहर न चढीयो तिलमात हो। बी० ॥ ७ ॥ वरस दिवस वीती गयो जी, फिर आयो तिण ठाम हो। ते नारी तिण आगलेजी, वात प्रकाशी नाम हो। वी० ॥ ८ ॥ नारी मुखथी पाछली जी, वात सुणीने ताम हो। ते पंथी तिहां झड़ पड्योजी, सुणतांई आयो विष ताम हो। वी० ॥ ९ ॥ इण पर भोग जे पूठलाजी, नहीं चिन्तवे गुणवन्त हो। चिन्तवीया इम उपजेजी, अहि विष तक्र द्रष्टांत हो ॥ वी० ॥ १० ॥ इण पर जागे मोहणी जी, थासे व्रत नो भंग हो। तिण कारण रूड़ा मानवीजी, राखो व्रत सुरंग हो ।। वी० ॥ ११ ॥ इण पर श्री जिनेश्वर जी; भाखे छठी वाड हो। अगरचन्द इम उचरेजी, मेटे भवनी राड़ हो। वी० ॥ १२ ॥

दोहा—तिमिर हरण शिव सुख करण, भाखे वीर जिणन्द। सातमी वाड़ सुणता थका, उपजे बहु आणन्द ॥ १ ॥

———

ढाल सातमी—उपगारी हो राजा ॥ ए देशी ॥

समोसरण वीच श्रीजगदीवापति, भाखे श्री जिनराय हो। कर्म कटक सहु दूरे कीधा, जीत निसाणा घुराया हो ॥ १ ॥ सु सनेही हो स्वामो, भाखें अंतर जामी हो। सु०। टेर ॥ सातमी वाड भविक मन राखो, सुरतरु फल चाखो हो। वचन अमोलख जिनवर केरा, कुमति कदाग्रह नाखो हो। सु० ॥ २ ॥ सरस आहार न करे सियाणा, मदन वहोत दीपावे हो। शील रत्न व्रत खण्डित थावे, तो सब निष्फल जावे हो। सु० ॥ ३ ॥ बिगे तणो अति लालच छोडो, जिम थावो ब्रह्मचारी हो। मन वचन काया त्रिवडे धारो, ते मुझ आज्ञाकारी हो। सु० ॥ ४ ॥ मोदक आहार मदन दीपावे, नहीं सेवे गुणवन्त हो। निर्मल शील तणो व्रत राखे, ते करसे भव अन्त हो। सु० ॥ ५ ॥ जिम कोई कुष्टी नो रोग गमायो, वैद्य कहे इम करजे हो। मुझ औषध है साताकारी मदिरा मत आचरजे हो। सु० ॥ ६ ॥ रसना लालच विषय पणाथी, ते रोगी मद पीधो हो। फिर रोगी बहु दुख पायो, जीम्या रसनो गिरधी हो। सु० ॥ ७ ॥ इम सरस आहार मती सेवो, काम तणो मद जागे हो। शील रत्न जतन करने राखे, ते नर उत्तम प्राणी हो। सु० ॥ ८ ॥ रत्न अमोलख वायस उपर, नाखी मुढ गमावे हो। सन्नीपातीयेने दूध सयायो, फिर पाछे पछतायो हो। सु० ॥ ९ ॥ जिम ब्रह्मचारी विषय निवारी, निश्चे शिवपुर फरसे हो। सरस आहारथी इन्द्रीया पोखे, शुद्ध मारग नहीं फरसे हो। सु० ॥ १० ॥ सातमी वाड ब्रह्मचारीनो, वीर जिणन्द वखाणी हो। अगरचन्द इण पर भाखे, सूत्रनो मर्म पीछाणी हो। सु० ॥ ११ ॥

दोहा—जगत शिरोमणि सायबो, सिद्धारथ नो नन्द। आठमी वाड इम उच्चरे, सुणता अमृत कन्द ॥ १ ॥

———

ढ़ाल आठमी—ऊंची चढ़ देखुंहो लुगायांरो टोलो आवतो ॥ ए देशी ॥

त्रिशलादेरा नन्दन हो स्वामीजी त्रिगड़े वेसने, इण पर दे उपदेश। निर्मल राखो हो वैरागी वाड़ आठमी, पावो सुख विशेष ॥ त्रि० ॥ १ ॥ अति घणो भोजन हो सुज्ञानी साधु मती करो, इम नहीं पलसी शील। अल्प आहारे हो साधु जी सुख पामसो, करसो शिवपुर लील ॥ त्रि० ॥ २ ॥ अति आहारे हो साधुजी व्रत भांजसे, सुपनेमें थासो असुद्ध। इम विचारी हो अति आहार मती करो, निर्मल थासी बुद्ध ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ जिम कोई पन्थी हो आयोजी एक शहर में, निरख उतरियो तिण ठाम। भूखनो पीड्यो हो पन्थी दुखियो थयो, पासे नही कोइ दाम। त्रि० ॥ ४ ॥ घर घर फिरतो हो पन्थी तव लावीयो, तन्दुल कोइ उपाय। मनमें विचारी हो खिचड़ी करसुं हिवे, इम मन धरी उछाय ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ भाजन छोटोहो खीचड़ी ऊरी अति घणी। तिणमें थोड़ो नीर। अगन घणेरी करी तिण हेठले, ते पन्थी मति हीण ॥ त्रि० ॥६॥ भाजन ऊपर हो मूकी शिला ढांकणो, ते पन्थी मतिमंद। तोलड़ी फूटी हो खिचड़ी खेरू थइ, करतो फिरे आक्रन्द ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ भाजन छोटो हो खीचड़ी ऊरी अतिघणी, तो भाजन गयो फाट। इम ब्रह्मचारी हो अति आहार मति करो, तो पावो शिवपुर पाट ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ कोइक वेपारी हो गयो परदेशमें, करवा लाग्यो हो वेपार। पुंजी थोड़ी हो वीणज कियो अति घणो, तो पुंजी नाखी विगाड ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ ते वेपारीने हो माथे ऋण बहु थयो, पिछतावे अणपार। ओढण थोड़ो हो भूर्ख इम किम सुवे, लाम्बा पांव पसार ॥ त्रि० ॥ १० ॥ अल्प आहारे हो सुख पावे जीवड़ो, नही हुवे रोग विकार। व्रत पण सेंठो हो थावे गुणवन्तजी, वेगा उतरसो पार ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ इण दृष्टान्ते हो राखो वाड़ आठमी, जे नर चतुर सुजाण। अगरचन्द हो भाखे रूड़ी देसना, हिवे नवमी वाड़ उचार ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

दोहा—जग मण्डण जिनरांजीयो, सांचो परम दयाल। नवमी वार इम उचरे पट जीवां प्रतिपाल ॥ १ ॥

ढाल नवमी—फासु पाणी पियो चारो चरो बेठो ठण्डो छाय हो ॥ ए देशी ॥

हिवे श्री वीर जिणन्द जी, गुण मणी रत्न भण्डार हो। नवमी वाड शिरोमणि, धारो हिवडा मझार हो। सुगणा साधुजी अन्तरजामीजी स्वामीजी देवे देशना ॥ २ ॥ ए टेर० ॥ शरीर तणी शोभा मती करो, मतो करो स्नान लिगार हो। सुगन्धादिक मती आचरो, अतर विविध प्रकार हो ॥ सुग० ३ ॥ चटक मटक छोडो अङ्गथी, नहीं करणी काई सेज हो। सज्या मदन सुहावणी, नहीं सुवे तिण सेज हो ॥ सुग० ॥ ४ ॥ फूल सुगन्ध सुहामणो, नहीं राचे गुणवन्त हो। मन मद कुञ्जर वस करो, ते कहिये बलवन्त हो ॥ सुग० ५ ॥ एक नर अटवीमें गयो, कोइयक जात कुभार हो। माटी केरे कारणे, खोदण लागो गार हो ॥ सु० ६ ॥ इम बहु माटी खोदतां, लाधो रत्न अमोल हो। मणी माणक मोती थकी, तिणसुं इधको मोल हो ॥ सु० ७ ॥ रत्न लेइ तिहा आवीयो, जिहा सरवर शिरताज हो। धोइनो उजलो कियो, बेठो सरवर पाल हो ॥ सु० ८ ॥ शरीर तणी शोभा कारणे, ते मुर्ख मतिमन्द हो। मुक्यो सामो पाग में, हिवे सुणजो विरतन्त हो ॥ सु० ९ ॥ सावली आकाश में निरखी ये, जाण्यो मासनो पिण्ड हो। ततक्षिण झडपने ले गई, ते पङ्खी परचण्ड हो ॥ सु० १० ॥ राक तणे घरे किम रहे, रत्न उद्योत परकाश हो। हिवे ते मूरख बिलखो थयो, बिल बिल जोवे आकाश हो ॥ सु० ११ ॥ शरीर शोभा करता थका, भाजे शील रत्न हो। सावली रुप नारी करी, करीये पहना जतन्न हो ॥ सु० १२ ॥ नवमी वाड इम उचरे, त्रिशलादेरा नन्द हो। अगरचन्द इम कहे, शीलथी सुख आणद हो ॥ सु० १३ ॥

ढाल दसमी—री माईरी ॥ ए देशी ॥

ग्रहण माहे चन्द शिरोमण, हारा खान बहु मोल री माई। स्फटिक रत्न सहुमें मोटो, सर्व वरता में शील अमोल री माई ॥ धन धन यो मत वीर प्ररूप्यो ॥ ए टेर ॥ १ ॥ जगत दयाकर जगत पति, प्रभु शासनना सिणगार रे माई। ब्रह्मचर्य इम वरण-

वीयो, शिव रमणी भरतार री माई ॥ धन० ॥ २ ॥ आभूषणमें मुगट मनोहर, खेम जुगल वस्त्र मज्झार री माई । चन्दनमें बावनो गिरिमें मेरु, नदीयां में सीतोदर सारी माई ॥ ३ ॥ सयंभूरमण साररी शिरोमण, रूचक बाटला आकार री माई । हस्तीमें ऐ-रावण मोटो, शील बड़ो सिरदार री माई ॥ धन० ॥ ४ ॥ चोपदां मांही सिंह सार्दूलो, सोवन वेणु कुमार री माई । नागकुमारां में धरणेन्द्र मोटो, शीलरत्न श्रीकार री माई ॥ धन० ॥५॥ मोटो जिम सुरलोक पांचमो, सभा सुधरमी जाण री माई । सर्वार्थ सिद्ध री थिति मोटी, शील तणो व्रत जेम री माई ॥ धन० ६ ॥ दान पांचमो सुपात्र मोटो, किरमची रंग सुरङ्ग री माई । वज्र ऋषभनाराच मोटो, शील तणो व्रत चंग री माई ॥ धन० ७ ॥ संठाणामें समचोरस मोटो, ध्यान शुक्ल वड धीर री माई । पांच ज्ञान में केवल मोटो, शील व्रत शूरवीर री माई ॥ धन० ॥ ८ ॥ षट लेश्या मांहे शुक्ल वड़े री, साधांमें तिर्थंकर देव री माई । क्षेत्र विदेह सहु मांहे मोटो, शील व्रत छें जेम री माई ॥ धन०६ ॥ राजामें चक्रवर्त्ति मोटो,वनामें नन्दन वन री माई । तरुवरमें जिम सुरतरु मोटो, शील व्रत गुण गेह री माई ॥ धन० १० ॥ रथामें कृष्ण तणो रथ मोटो, सहस्र फणी नागकुमार री माई । ओपमा केता पार न आवे, संक्षेपे बत्तीस सार री माई॥धन०११॥ उत्तराध्ययन अध्ययन सोलमें, शील तणो अधिकाररी माई । संक्षेपे कर रचना कीधी, जिन गुण न आवे पार री माई ॥ धन०१२ ॥ सम्वत अठारे वर्ष गुणीयासे, भाद्रवा सुद मास री माई । शुक्ल पक्ष तिथी दसमी दिवसे, किधो प्रेत हुलास री माई । धन० ॥ १३ ॥ खरत्तर गच्छ शिरोमण सुंदर, हरखचन्द गुरुराय री माई । तास शिष्य गुण सुगड़ पय पे (परुपे),सरुपचन्द गुरू राय री माई । धन० ॥१४॥ अगरचंद कहे शील शिरोमण, मुगत तणो दातार री माई । राम पुरामें ए गुण गाया, हिवड़े हरष अपार री माई । धन० ॥ १५ ॥ ए अधिकारे ओछो अधिको, वचन कह्यो अविचार री माई । मिच्छामि दुक्कडं तेहनो मुझने, कविजन लीजो सुधार री माई ॥ धन० १६ ॥

॥ इति श्री ब्रह्मचर्यनी ढालां सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री साधु आचार बावनी ॥

* दोहा *

वर्द्धमान शासण धणी, गणधर लागु पाय । दया जो माता वीनउं, वन्दु शीश नमाय ॥ १ ॥
ठाणागमें चालीया, श्रावक च्यार प्रकार । मात पिता सरिखा कह्या,साधुने हितकार ॥ २ ॥
करडी काठी सीख दे, साधु ने सुखकार । ढीला पडवा दे नहीं, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ३ ॥

अथ ढाल जीस्वामीकी लिख्यते ॥ जी स्वामी घर छोडीने नीसर्या, थेतो लीधो सयम भारजी । जीस्वामी पञ्च महाव्रत पालज्यो, मत लोपजो जिणजीरी कारजी ॥ जी० अरज सुणो श्रावक तणी ॥ १ ॥ जी० तप जप सयम आद्रो, निदाने विकथा निवारजी । जी० बाइस परिसह जीतजो, थेतो चालणो खाडानी धारजी ॥ जी० अ० ॥ २ ॥ जी० गृहस्थीसुं मोह मत राख-जो, थेतो लीज्यो शुद्धमन आहारजी । जी० असूजतो आहार देखने, पिछा फिर जाज्यो तिण वारजी ॥ जी० अ० ॥ ३ ॥ जी० कोईक वहेरासी थाने लाडुवा, कोइ बुरोने खीरजी । जी० कोइक वहेरासी सूका टुकडा,थेतो मत होज्यौ दिलगीरजी ॥ जी०अ० ॥ ४ ॥ जी० कोइक करसी थाने वदणा, कोईक नमासी सीसजी । जी० कोइक देसी थाने गालिया, मत आणज्यो मनमें रीस

जी ।। जी० अ० ॥ ५ ॥ जी० छलछिद्र जोज्यो मती, मतीआंण ज्यो रागने द्वेषजी । जी० क्रोध कषाय करज्यो मती, क्षमा करणो विशेष जी ॥ जी० अ० ॥६॥ जी० जंत्र मंत्र करज्यो मती, मत करज्यो स्वप्न विचारजी । जी० ज्योतिष निमित्त भाखो मती, मत लोपज्यो जिणजीरी कारजी ।। जी० अ० ॥७॥ जी० रंग्या चंग्या रहणो नहीं, नहीं करणो देह श्रृंगारजी । जी० केश श्रृंगार बणावतां, मुख धोवतां दोष अपारजी ॥ जी० अ० ॥ ८ ॥ जी० कपड़ा पेहरो उजला, भारी मोला चित चायजी । जी० साधु दीसे सिणगारिया, लोगां मांहि निंद्या थायजी ॥ जी० अ० ॥ ९ ॥ जी० बण्या ठण्या वींन ज्युं,गोरा फूटरा दीदारजी । जी० वलि मैल उतारै शरीरनो, साधुने लागे जंजालजी ॥ जी० अ० ॥ १० ॥ जी० चोमासो करज्यो देखने, स्थानक लीज्यो विचार जी । जी० ज्यां रेवै नपुंसक स्त्री, नहीं साधु तणो आचारजी ॥ जी० अ० ॥ ११ ॥ जी० संथारो करज्यो देखने, तपस्या करज्यो विचार जी । जी स्वामी पीछे मन डिग जावसी, तो हंसेगा नर नारजी ॥ जी० अ० ॥ १२ ॥ जी स्वामी दोय साधु तीन आरज्यां, विचरजो तिणहिज काल जी । जी स्वामी एक साधु दोय आरज्यां, मत करजो कदेई विहारजी ॥ जी० अ० ॥ १३ ॥ जीस्वामी मेघ मुनीश्वर मोटका, कही धर्म रुचि अणगारजी । जीस्वामी कीड़ियानी करुणा करी,पहुंच्या अनुत्तर विमाणजी ॥ जी० अ० ॥ १४ ॥ जी स्वामी जो थारे छांदे चालसो, तो लोपो गुरांजीरी कारजी । जीस्वामी दुष्टभाव चित राखोगा तो, नहीं सरे गर्ज लगारजी ॥ जी० अ० ॥१५॥ जीस्वामी वेहरणने गयां झूरसो, थे देखी नार्यां तणा रूपजी । जी० साधपणाने छेदने, चारित्रसुं जावोगा चूकजी ॥ जी० अ० ॥१६॥ जी स्वा० कंठ थी रागणी काढने, थेतो रींझावसो नरनारजी ।। जीस्वामी वैराग भाव आण्या विना, थांरी नहीं सरे गरज लिगारजी ॥ जी० अ० ॥ १७ ॥ जीस्वामी पलेवण कियां विनां, मत करज्यो विहारजी । जी-स्वामी ऊनो आहार दोनूं टंकां, नहीं साधुतणो आचार जी ॥ जी० अ० ॥ १८ ॥ जीस्वामी गृहस्थीरे घरे बेसवो नहीं, कारण विना

कोई साधुजी ॥ जी स्वामी सावद्य भाषा बोलवी नहीं, नातरा जोड्यासु कर्म वधायजी ॥ जी० अ० ॥ १६ ॥ जी० मुंढा सु वस्तु
निषेधने, मत करजो अंगीकारजी ॥ जी० वमियारी वाछा कुण करे, काग कुता तणो आचारजी ॥ जी० अ० ॥ २० ॥ जीस्वामी
आपतणी परससा करे, पेलापर धरे द्वेषजी ॥ जी० ज्यामें साधुपणो तो छे नही, चवदे सूत्र लेवोनी देखजी ॥ जी०
अ० ॥ २१ ॥ जी स्वामी स्थानकमें लीजो मती, असनादिक च्यार प्रकारजी । जीस्वामी आचारंग निशीथमे वर्जियो, सूत्र
लीजो हिरदे धारजो ॥ जी० अ० ॥ २२ ॥ जीस्वामी उठगण कारण विना, देवे पूठ पाटीया पीठजी ॥ जीस्वामी पूज
करी पूजावसो, तो रहेसो मुक्ति मार्ग सु दूरजी ॥ जीस्वामी अ० ॥ २३ ॥ जी स्वामी तिथि पर्वी तप नहीं करे, नहीं लोकतणी
मरजादजी ॥ जीस्वामी दोय टंक उठे गोचरी, पडया जीभतणे स्वादजी जी० अ० ॥ २४ ॥ जीस्वामी ताक ताक जावे गोचरी,
वली लावे ताजा मालजी ॥ जीस्वामी अरस ऊपर नजर नही धरे, वली बनरहो कुन्दोलालजी ॥ जी० अ० ॥ २५ ॥ जी०
एक घरे दोनू टका, नित लावे लगावण आहारजी ॥ जीस्वामी नित पिंड आहार वहेर्यां थका, साधुने लागे तीजो अनाचारजी ॥
जी० अ० ॥ २६ ॥ जीस्वामी ऊचे डोरे मुहपती, पलेवणरी नहीं ठीकजी ॥ जीस्वामी सांझ सवेरे सुई रहे, पतो किणविध
माने सीखजी ॥ जी० अ० ॥ २७ ॥ जीस्वामी गछवासी सु परचो घणो, आवण जायण होयजी ॥ जीस्वामी लेणा देणा सटापटा,
साधुने करणा नहीं जोगजी ॥ जी० अ० ॥ २८ ॥ जीस्वामी कुण वोलीने नटे, दूजो व्रत देवे खोयजी ॥ जीस्वामी साचाने भूठा
करे, योतो साग साधूरो होयजी ॥ जी० अ० ॥ २९ ॥ जीस्वामी प्रायश्चित लागे सामठो, श्रावक पिण साखी होयजी ॥
जीस्वामी घेठा थका लेवें नहीं, ज्यारे परभवरो डर नहीं कोयजी ॥ जी० अ० ॥ ३० ॥ जीस्वामी खाय पीयने सुई रहे, पतो बैठा
पडिकमणो ठायजी ॥ जीस्वामी वस्त्र पात्र राखे घणा, ज्याने जिनपासता कहेवायजी ॥ जीस्वा० अ० ॥ ३१ ॥ जीस्वामी नारी

आवे एकली, अक्षर पद सीखण काजजी। जीस्वामी वेगी आवे रातकी, मत सीखावजो मुनिरायजी॥ जीस्वा० अ० ॥३२॥ जीस्वामी सावद्य भापानी चोपियां, मेलो मंडावण काजजी। जीस्वामी पेड़ी जमावे आपणी, वैराग विना सब फोकजी। जी० अ० ॥३३॥ जीस्वामी श्रावक मात पिता जिसा, वलि सीख देवे भली रीतजी। जीस्वामी ज्याने कांटा खीला सरीखा गिणे, ज्याने फिरफिर करे फजीतजी ॥जीस्वा० अ० ॥३४॥ जीस्वामी चवदे चूका वारे भूलिया, नवका नहीं जाणे नामजी। जीस्वामी गाम ढंढोरो फेरावियो, योतो श्रावक म्हारो नामजी। जी० अ० ॥३५॥ जीस्वामी ऐसा श्रावक जाणो मतो, एतो श्रावक वारे व्रत धारजी। जीस्वामी कष्ट पड़्या कायम रहे, ग्यारे पड़िमाना पालनहारजी॥ जीस्वा० अ० ३६॥ जीस्वामी ऊंचा चढीने मालिये, मती जोयज्यो नरनारजी। जीस्वामी वस थांरो नहीं रेवसी, योतो मन थांरो लिगारजी। जीस्वा० अ० ॥ ३७॥ जीस्वामी चित्राम राखो वैरागका, तो पण आपण छांदेजी। जीस्वामी सुई डोरारा न्यायज्युं, थाने राख्यांसु मिलसी अन्धकूपजी। जी स्वा० अ० ॥ ३८॥ जी स्वामी दुखमी आरो पांचमो, ये तो निन्दाकारी लोकजी। जीस्वामी ओगणावाद जो बोलसी, थे तो शुद्ध पालज्यो जोगजी। जी स्वा० अ० ॥ ३९॥ जी स्वामी सूत्र सिद्धान्त वांच्या नहीं, मैं सूणयासु कियो उपाय जी। जी स्वामी इणमें ओछो अधिको होयतो, म्हाने सूत्र दीजो बतायजी। जी स्वा० अ० ॥ ४०॥ जीस्वामी आचारांगमें चालीयो, यो तो साधु तणो आचारजी। जी स्वामी तिण अणुसारे पालसोतो, करसो खेवो पारजी॥ जीस्वा० अ० ॥ ४१॥ जी स्वामी इरजा भाषा एषणा, वली ओलखज्यो आचारजी। जी स्वामी गुणवन्त साधु साधवी, ज्याने वन्दू बारम्बार जी॥ जी स्वामी अ० ॥ ४२॥ जी स्वामी आपरी थापे परनिन्दा करे, तिणमें तेरे दोषजी। जी स्वामी दूजे संवर देखलो, थे किण विध जासो मोक्षजी॥ जीस्वा०अ० ॥४३॥ जीस्वामी साधुजी में गुण अति घणा, मोसूं पूरा कह्या न जायजी। जी स्वामी सेंठारे मन भावसी, एतो ढीला नींदव थायजी।

जी स्वा० अ० ॥ ४४ ॥ जीस्वामी आराधना ने निखेदना, मत करजो ताणाताण जी । जी स्वामी साधु साधवी लेवेजिको, उरो लीजो तणीचार जी ॥ जी स्वा० ॥ ४५ ॥

दोहा—मुनीवर उठया गोचरी, इरजा सुमति समार । वेश्यानो पाडो वरजि करी, फिरजो नगर मझार ॥ १ ॥

जी स्वामी किण कारण से वरजियो, थे तो सामल जो अधिकार जी । जी स्वामी शङ्का उपजे चित्तमें, चारित्र नो होवे विनाश जी ॥ जी०अ०॥४६॥ जीस्वामी मानोपेत वस्त्र चित्त धारजो,रंग विरंगसु' चित्त न आण जी । जीस्वामी जो थारा मनमें शङ्का होवे, आचाराग लीजो देखजी ॥ जीस्वा० अ० ॥ ४७ ॥ जी स्वामी आधी काणी कुमडी, वली टुंटी स्त्रीया जाणजी ॥ जी स्वामी ज्या कने ऊभा रेजो मती, कोई पागुली स्त्रीया जाणजी ॥ जी० अ० ॥ ४८ ॥ जी स्वामी नगर में उठ्या गोचरी, एक मूएडासू लीजो आहार जी । जीस्वामी आछा आछा ताकिया, काई लागे दोष अपार जी ॥ जी स्वामी अ० ॥ ४६ ॥ जी स्वामी राजमार्ग ऊभा रहिजो मती, मती जोयजो लोहारनी सालजी । जीस्वामी एकली स्त्री देखने, मत करज्यो रात विचार जी ॥ जी० अ० ॥ ५० ॥ जी० उतावला चालो मती, मतकरज्यो रस्ते वातजी । जी० हस्ति परे हालो मती, यो तो साधु तणो नहीं आचारजी ॥ जी० अ० ॥ ५१ ॥ जी० साधु अने आरज्या, मत उतरजो सामासामजी । जी० आरज्या स्थानक जायने, मत बेसज्यो थे साधु जी ॥ जी० अ० ॥ ५२ ॥ जी० आचार बावनी सामलने, थे तो हिरदे लीजो धारजी । जी० जिनजीरा वचन आराधसो तो, करसो खेवो पारजी । जी० अ० ॥ ५३ ॥ जी० संवत अठारा छत्तीस में, जोडी दक्षिण देश मझारजी । जी० जोडी मोतीचद जुगतसु, गाथा सामलज्यो नरनारजी । जी स्वामी अर्ज सुणो श्रावक तणी ॥ ५४ ॥

इति साधु आचार बावनी समाप्तम् ॥

अथ बारह भावने का दोहा ।

१ अनित्य भावना—राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार । मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी वार ॥१॥

२ अशरण भावना—दलबल देई देवता, मात पिता परिवार । मरती विरियां जीवको, कोई न राखण हार ॥२॥

३ संसार भावना—दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान । कहूं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥३॥

४ एकत्व भावना—आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय । यों कबहूँ या जीव को, साथी सगा न कोय ॥४॥

५ परपंख भावना—जहां देह अपनी नहीं; तहां न अपना कोय । घर संपति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय ॥५॥

६ अशूचि भावना—दीपे चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह । भीतर या सम जगत में, ओर नहीं घिन गेह ॥६॥

७ आश्रव भावना— मोह नींद के जोर, जगवासी घूमे सदा । कर्म चोर चहुंओर, सब लूटे नहीं दीसता ॥७॥

८ संवर भावना—सद्गुरु देव जगाय, मोह नींद जब उपशमे । तब कुछ बने उपाय, कर्म चोर आवत रुके ॥८॥

९ निर्झरा भावना—ज्ञानदीप तपतेल भर, घर शोधे भ्रम छोर । या विधि विन निकसे नहीं, पैठे पूरव चोर ॥९॥

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार । प्रवल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्झरा सार ॥१०॥

१० लोकसंठाण भावना-चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठाण । तामें जीव अनादि तै, भ्रमत है विन ज्ञान ॥११॥

११ बोधीवीज भावना—धन कन कंचन राज सुख, सबही सुलभ कर जान । दुर्लभ है संसारमें, एक यथारथ ज्ञान ॥१२॥

१२ धर्म भावना—जाचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिंता रैन । विन जाचे विन चिंतवे, धर्म सकल सुख देन ॥१३॥

॥ श्री निर्मोही राजा री पांच ढाल लिख्यते ॥

दोहा—निर्मोही गुण वरणवु, देण भविक प्रतिबोध । कथाकार अधिकार छे, जित्यो मोह महा जोध ॥ १ ॥
शक्रेन्द्र गुण वरणव्या, इन्द्र सभामें जोय । निर्मोही परिवार में, मोह न व्यापे कोय ॥ २ ॥
एक देव पारख्या निमित्त, धारी मनुषा देह । जोगी रूप करि लखे, किम जित्यो ए नेह ॥ ३ ॥
राय कुँवर प्रछन्न कियो, जोवे सगलो साथ । फिरती दासी रावली, जोगीसुं करे वात ॥ ४ ॥

दोहा सोरठा—सुण दासी मुझ वात, तुझ सुखदायक मठकने । सिंह हण्यो साक्षात, कहता हिवडो थरहरे ॥ १ ॥

राग सोरठ भरत जी—आतम ज्ञान तणो रसीयो, निज सुख नहीं पिछाण्यो । भेख लियो पिण भेद न पायो, तूं राग द्वेष नो ताण्यो ॥ १ ॥ हो जोगी कुण थारो, कुण म्हारो, ए जुग छे हटवाडो । हो जोगी कुण थारो, कुण म्हारो, ए जुग छे हट-वाडो ॥ मोह सुखदायक माही विराजे, सो तो मार न सकीये । और सर्व सुपने की माया, विगर विचास्यो न थकीये ॥ हो जोगी कुण थारो कुण म्हारो, ए जुग छे हटवाडो ॥ २ ॥ आप आपणी स्थीति कर जासी, कुण राजा कुण राणा । आप सरूपी आप चिदानन्द, चाकीरा भरम मडाणा ॥ हो जोगी कुण थारो, कुण म्हारो, ए जुग छे हटवाड़ो ॥ ३ ॥ तू जोगी

क्यु' थरहर कांपे, सहु सुपने की माया। जोग तणी छे बातां न्यारी, स्युं हुवे राख लगायां॥ हो जोगी कुण थारो, कुण म्हारो, ए जुग छे हटवाड़ो ॥ ४ ॥ ए कुटुम्ब विटम्ब तजीने, किम कहे थारो म्हारो। दासी वचन सुणो जोगीसर, अन्तर नयन उघाड़ो ॥ हो जोगी कुण थारो; कुण म्हारो, ए जुग छे हटवाड़ो ॥ ५ ॥

दोहा—वचन सुणी ने चमकियो, इण ने सोच न कोय। चाकरने ठाकर घणा, हिये विमासी जोय ॥ १ ॥
जाय कहुं हिव बाप ने, तिण रे कुंवर ज एक। राज रिद्धि सहु कारमी, करसी दुःख अनेक॥ २ ॥

दोहा सोरठा—सांभल तूं राजान, मुझ आश्रम ने पाखती। तुम कुल तिलक समान, सिंहे विदासो कुंवर ने ॥ १ ॥

राग मारू ढ़ाल दुजी—तूं किम भुल्यो हो जोगीसर, तूं किम भुल्यो हो; कुंवर कहो किम मांहरो, मत मोह अलुजो हो, म्हारो कदेयन विछड़े, अन्तर ज्ञानी बुजो। हो जोगीसर तूं किम भुल्यो हो ॥ १ ॥ बाए मिलिया वादला; छिन मांही विणासी हो। सञोगे आई मिल्या, विजोगे उठ जासी हो, जोगीसर तूं किम भुल्यो हो ॥ २ ॥ सुपन भरम जञाल ए, जोगी किम राच्यो हो। मोहजाल गल पहरने, जीव नट जिम नाच्यो हो। जोगीसर तूं किम भुल्यो हो ॥ ३ ॥ बाप मरी बेटो हुवे, बेटी मर मात हो। अन्तर ज्ञान विचार ले, ए जगना नाता हो ॥ जोगीसर तूं किम भुल्यो हो ॥ ४ ॥ जोगी रह गयो जोव तो, एवा पिता न कोई हो। कठिन हृदय पनो घणो, मैं लिधो जोई हो ॥ जोगीसर तूं किम भुल्यो हो ॥ ५ ॥

दोहा—बाप तणो मोह अलपता, आणे न मनमें दुख। माय जीव अति दुःख करे, जिण राख्यो निज कुख ॥ १ ॥
जाय कहुं हिव मायने, सुणता छोड़े प्राण। कठिन अग्नि अति पेटनी, इम सहु मुखकी वाण ॥ २ ॥

सोरठा—सुण मइया मुझ वाण, कुवर भणीसिंह मारियो। छूट्या नहीं मुझ प्राण, कहता हिवड़ो थरहरे ॥ १ ॥

ढाल तीजी—शङ्कर वसे रे कैलास मे ए देशी ॥ भोला भरम में किम भमे। क्यु तुझ झाल ज उठी रे। आत्म ज्ञान वि-
चारता। ए सहु वात ज झुठी रे, ए जग सगलो रे कारमो ॥ १ ॥ स्थीति अनुसार परिवार ए, कुण सुख दुखनो दाता रे।
स्थीति पुरी कर चालसी, कुण बेटो कण माता रे। ए जग सगलो रे कारमो। २ ॥ मूर्ख नर मनमें घणी, राखे उण्डी आशा
रे। देखत ही गल जावसी, ज्यु जल माही पतासारे, ए जग सगलोरे कारमो ॥ ३॥ पुद्गल फन्दनो वन्ध किसी, जोवो
हृदयमें जोगी रे। हूँ तू मनमें तेवडे, तूँ तो अन्दर रोगी रे, ए जग सगलोरे कारमो ॥ ४ ॥ सञोगे मिलिया सहु, विजोगे सहु
विगटेरे। आत्म ज्ञानी आद्मी, या वात नहीं अटके रे, ए जग सगलोरे कारमो ॥ ५ ॥

दोहा—आ माता डाकण जिसी, आत न दाजी कोय। के पुत्र इण रो नही, के कठिन स्वभावी होय ॥ १ ॥
कुँवर और ही सम्पजे, माता ने तो जोय। जाय कहुँ निज कामिनी, परम महा दुख होय ॥ २ ॥

दोहा सरोठा—नारि आगे जाय, जोगीसर कपी कहे। तुज वल्लभ सुखदाय, मार्यो मुझ आश्रम कने ॥ १ ॥

ढाल चौथी—जिण विरीया जीव रह गया कोरा ॥ एदेशी ॥ जोगी तें जोगरी जुगत न जाणी, कपट जपे जप माला रे।
केहण रो जोगी ने अन्दर रोगी, थारी जीभ अग्निरी झालारे, जोग ते जोगीरी जुगत न जाणी ॥ १ ॥ मुज वल्लभ मुज
माही विराजे, और तो कर्म विकारो रे। किणरी नार ने कुण भरतारो, थे अन्दर ज्ञान विचारो रे ॥ जोगी तें जोगरी जुगत न
जाणी ॥ २ ॥ ए तो मोह कर्म नो चालो, विन भोग्या नही छूटेरे। अरो अडोल स्वभाव हमारो, ते प्रीतम कुण लुटेरे ॥ जोगी
तें जोगरी जुगत न जाणी ॥ ३ ॥ सुमत सखी तो पितम चेतन, कुमत ए जगत सगाई रे। अन्तर ज्ञान लयो नही वावा, क्यु

ए राख लगाई रे ॥ जोगी तें जोगरी जुगत न जाणी ॥ ४ ॥ भरम जाल ए मरणो न रहणो, मूल रहे न राखी रे। इणा ने झूरे सोही ज्ञान सुँ अलगो, सूत्र सिद्धान्त छे साखीरे ॥ जोगी तें जोगरी जुगत न जाणी ॥ ५ ॥

दोहा—मन वच कर डोल्यो नहीं, सांभल कुंवर स्वरूप। सुर परखित हर्षत हुओ, अहो अध्यातम रूप ॥ १ ॥

निरमोही इण कारणे, उपसम भाव विशेष। सुरपति शुद्ध गुण वरणव्यां, प्रत्यक्ष लिना देख ॥२॥

दोहा सोरठा—धन निर्मोही राय, धन परिवार ज समकीति। पूरव पुण्य पसाय, शुद्ध सञ्जम दिपाइये ॥ १ ॥

ढाल पाँचमी—कोयलो परवत धुँधलोरे लाल एदेशी ॥ काने कुण्डल झलहलेरे लाल, हिये अमोलख हार रे राजेसर। हाथ जोड़ी पाये पड़े रे लाल, करतो जय जयकार रे राजेसर ॥ धन धन करणी थाहरी रे लाल ॥ १ ॥ राज कुंवर प्रगट कियो रे लाल, लाग्यो पिता रे पाय रे राजेसर। गुण करतो सुर हरषियो रे लाल, आयो जिण दिश जाय रे राजेसर, धन धन करणी थाहरी रे लाल ॥ २ ॥ इम आतम रस पीजिये रे लाल, कीजिये समकित शुद्धरे राजेसर। राग द्वेषकर्म जीतिये रे लाल, टालिये कुमत कुबुद्धि रे राजेसर ॥ धन धन करणी थाहरी रे लाल ॥ ३ ॥ कथाकार अधिकार छेरे लाल, जिणासूं बणाई ढ़ाल रे चतुरनर। निज मन थीरता कारणे रे लाल, जितण मोह कर्म जाल रे चतुरनर ॥ धन धन करणी थाहरी रे लाल ॥ ४ ॥ सम्बत अठार चिहोत्तरे रे लाल, पाली चौमासो किधरे चतुर नर। रतनचन्द आनन्द मेंरे लाल, पाँच ढ़ाल प्रसिद्ध रे चतुरनर। धन धन करणी थाहरी रे लाल ॥ इति श्री निर्मोही राजारी पांच ढ़ाल समाप्तम् ॥ शुभं भवतु

अगरचंद भेरोंदान सेठिया जैनग्रन्थालय बीकानेर (राजपूताना)

श्री वीतरागाय नम.

अथ श्री चेलणाराणीरी तेरह ढाल प्रारंभ ॥

दोहा—चोवीसमा महावीर जी, विचरे तिण बीरीया मांय। राजा राणी रे हठ हुवो, ते सुणज्यो चितलाय ॥ १ ॥
आप आपरे गुरु तणा, वाद करे दिन रात। पण पाछा देवे नहीं, ईचरज वाली वात ॥ २ ॥
कुगुरु कुदेव कुधमनी, खाच करे नितमेव। पाप धर्म नही ओलखे, करे पाखण्ड्या सेव ॥ ३ ॥
राणी जिनमत री जाणछे, राजा मूढ अजाण। नवतत्वभेद जाणे नही करे, अणहु ती ताण ॥ ४ ॥

ढाल पहेली १—सुण महराणी शिवरो मारग घणो कालरो जूनो, तुज पिछाणी लाल आखकर राजा हुई गयो ऊनो ॥ ए टेर ॥ तूं जैन जति गुरु माने छे, तिणरे तो मेला बाना छे, तूं पडी कुगुरु रे पाने छे ॥ सुण० ॥ १ ॥ विष्णु मोहि सुहावे छे, महारे बीजो दाय न आवे छे, काई मनमें ओहिज भावे छे ॥ सुण० ॥ २ ॥ आदि धर्म शिवरो कहिजे, मावीतारी राह बहिजे, काई उज्वल ध्यान माहि रहिजे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ मईला वैसा साधु थाहरा, दिसता लागे खारा, वे किम उतारे भव पारा ॥ सुण० ॥ ४ ॥ तूं मुख मुहपत्ती बाधे छे, मुज छातीमें राव रांधे छे, तूं चाले आपरे छादे छे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ नित्य पीवे धोवण पाणी, निरदोसण सुजतो आणी, काई श्राविका रे घरसुं जाणी ॥ सुण० ॥ ६ ॥ माथा दीसे मुण्ड्या छे, करमें झोली

कूँडा छै, कांई दिसता अति भूंड़ा छै ॥ सुण० ॥ ॥ ७ ॥ ऋषि दयाचन्द इम भाषे छै, राजा रूढ घणी अति राखे छै, राणी समकितरा गुण दाखे छै ॥ सुण० ॥ ८ ॥

दोहा—चेलणा कहे सुण राजवी, नहीं जैन सरीखो धर्म । जिण सेव्यां शिवसुख लहे, तूटे आठों ही कर्म ॥ १ ॥
जिन मत शिव मत आंतरो, नहीं है तिणमें फेर । किहां रतन किहां कांकरो, किहां राई किहां मेर ॥ २ ॥
झूठ साच जिम फेर छे, मत करो राय गुमान । जिनधर्म पाल मुक्ति गया, सांभल ज्यो राजान ॥ ३ ॥

ढाल दूसरी २—अहो महाराजा जैन सरीखो धर्म नहीं है दूजो, पावो सुखशाता निग्रन्थ गुरुना पाव सदाही पूजो ॥ अहो० ॥ १ ॥ जिके जीव अजीवने जाणे छै, उलटी रूढ़ नहीं ताणे छै, जिके मुक्तिरो बीज पिछाणे छै ॥ अहो० ॥ २ ॥ गुण सताईस दीपे छे, पाखंड्याने जीपे छै, ज्यांरी निर्मल काया दीपे छै ॥ अहो० ॥३॥ दोष बयालीस टाले छै, पाप करम ने गाले छै, जिके जिन मारग उजवाले छै ॥ अहो० ॥ ४ ॥ छ जीव- कायाने राखे छै, सावद्य भाषा नहीं भाषे छैं, शुद्ध संजमनो रस चाखे छै ॥ अहो० ॥ ५ ॥ थारे म्हारे गुरुनी किसी होड़ो, सुण राजा गरदन मोड़ो, कांई सैंठा रहो तो हठ छोडो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ ऋषि दयाचन्द जी ईम बोले है, ज्ञान पटीयारो खोले है, ईयां साधारे कुण तोले हैं ॥ अहो० ॥ ७ ॥

दोहा—वचन सुणयां राणी तणां, बोल्या श्रेणिक तिणवार । थारा गुरु में ओलख्या, कपट तणा भण्डार ॥ १ ॥
राणी कहे राजा भणी, साच कहो महाराय । थें कपट किसी पर देखियो, म्हारे नहीं आवे दाय ॥ २ ॥
वलतो राजा ईम कहे, महिला दाखल हुवो जाय । कपट दिखालुँ गुरु तणा, शङ्का सहु मिट जाय ॥ ३ ॥

ढाल तीजी ३—महोटा महीपति जी कपट रच्यो है छलवा साधु काजे, वे महोटा जति जासुं कियो अकारज कहितां बहुलि लाजे ॥ महोटा० ॥ कोई रायरसोवडे आवे है, विध विध भोजन निपजावे हैं, बैठा साधु तणी भावना भावे है

॥ महोटा० ॥ २ ॥ खसखसरा दाणा विखरावे है, उपर वेलू विछावे हैं, काई साधु वहेरण आवे हे ॥ महोटा० ॥ ३ ॥ एक हाथ तणो चोतरो कियो, जीव गर्भ माहि दियो, काई राजा पहचो अनरथ कियो ॥ महोटा० ॥ ४ ॥ मुनि पगला ईतरे धरीया, ज्ञान तणा भवना दरिया, राय मदरीया में परवरीया ॥ महोटा० ॥ २ ॥ राय हरखी सामा आवे, लुल लुल मस्तक नमावे, वहेरो आहार जन्म सफलो थावे ॥ महोटा० ॥ ६ ॥ ऋषि दयाचन्द कहैं सुणो भाई, राजा कीधी कपटाई, मुनि देवे राजाने समजाई ॥ महोटा० ॥ ७ ॥

दोहा—मुनिवर कहे वहरु नहीं, असुजतो है आहार। निर्दोपण वहरु सदा, तीर्थंकर अणगार ॥ १ ॥
करजोडी राजा कहै, दोपण देवो वताय। खस खस दाणा दाखिया, ऊपर वेलु विछाय ॥ २ ॥
हकीगत हु ती जिकी, मुनिवर दीवी वताय। सुण राजा ईचरज थयो, बोल सक्यो नहीं काय ॥ ३ ॥
हेठे उतर राणी कहै, मान मद पो छोड। हुकुम हुवे जो आपरो, जाऊँ तिण ही ठोड ॥ ४ ॥
नि.शंक हुईने पूंछज्यो, वावाजीने जाय। जन्म सफलो हुवे ताहरो, तीर्थ गगा न्हाय ॥ ५ ॥

ढाल चोथी ४—राजा राणी दोनु आविया जोगिया, आया अतीता रे पासरे। वुतारा थारो कपट उघाड, राणी चेलणा रे जोगिया ॥ १ ॥ राजा लुल लुलने लटका करेरे जोगिया, करे विनय भक्ति अरदासरे ॥ धु० ॥ २ ॥ राणी तो आय ऊभी रहें रे जोगिया, ऊचो नहीं कीधो हाथरे ॥ धु० ॥ ३ ॥ राजा घणो रीसावियोरे जोगिया, जोवो राणीरी वातरे ॥ धु० ॥ ४ ॥ लाय लायने लडथा हुवारे जोगिया, सुता दे मोरा पर हाथ रे ॥ धु० ॥ ५ ॥ राणी कहै राजा भणी रे जोगिया, फूरमाओ म्हारा नाथ रे ॥ धु० ॥ ६ ॥ किहा पधार्या गुरु आपणा रे जोगिया, वावोजी गया अमर विमाणरे ॥ धु० ॥ ७ ॥ अरु भरु वाता करेरे

जोगिया, बाबोजी कियो परम कल्याण रे ॥ धु० ॥ ८ ॥ ईतरी सुण राणी मनमें चिंतवेरे जोगिया, गुरु चेलामें अक्कल न कांयरे ॥ धु० ॥ ६ ॥ हुकुम कियो मैं शाला भणीरे जोगिया, देंही देवो जलाय रे ॥ धु० ॥ १० ॥ आँण लकड़ा खड़ा किया रे जोगिया, वेसाणरी थोड़ीसी वाररे ॥ धु० ॥ ११ ॥ सेंन करी बावोजीने जगाविया रे जोगिया, राजारो पूरो है हेजरे ॥ धु०॥ ॥ १२ ॥ उठीने बाबोजी पूछियोरे जोगिया, कुंण ऊभी आसण रे मांयरे ॥ धु० ॥ १३ ॥ आ पटराणी चेलणारे जोगिया. आई चरण भेटणरे काज रे ॥ धु० ॥ १६ ॥

दोहा—वचन सुणी लोकां तणां, तिणमें फरक जणाय। ईणरी माता मर हिरणी, हुई रंध्ररोहि रे मांय ॥ १ ॥
एहवा वचन काने सुण्यां, राणी जाण्यो कूड़। भली भांत समजायसुं, मुहड़े देसुं धूड़ ॥ २ ॥
हाथ जोड़ राणी कहे, थें ज्ञान तणा भंडार। अगम निगम जाणो सहु, वले मिटावो खार ॥ ३ ॥
हुंणहार टले नहीं, राणी बोली एम। जीमो रसोवड़े मुज घरे, वरते कुशल क्षेम ॥ ४ ॥

ढाल पंचमी ॥ ५ ॥ राणीजी महिलांसु हेठे उतर आई, कांई आया रसोवड़े रे मांहि हो। गुसांई जी भोजन हुवा तयारी ॥ १ ॥ विधविध सालणा कराया, बावोजी महिलां मांहि आया हो ॥ गु० ॥ २ ॥ भलीभांतसुं विछायत कराई, कांई बाजोटाने थाल पधराई हो ॥ गु० ॥ ३ ॥ भात भांतरा भोजन मंगाया, पंखो ढोली ने रसोवड़े जीमाया हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ लुची लाफसी सीरो मनवारांसुं, जीमण जीमे धीरो हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ खांड में झकोला खाजा, मनवारां सुं जीमण जीमे ताजा हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ सूंठ मीरच नींबुनुं अथाणुं, जीणसुं स्वाद लागे मिठाई रो खाणो हो ॥ गु० ॥ ७ ॥ मिठाई जीमतां मुंढे आवे, जिणसुं राईतारो झोल पधरावे हो ॥ गु० ॥ ८ ॥ राणीजी सेन कर मोजडी मंगवाई, चीरायने सांगर्यां करवाई

हो ॥गु०॥६॥ नाहना खडवा करी दूधमें नाख्या, जिणसु' लोक जाणे मनका दाखा हो ॥गु०॥१०॥भली भातसु रसोवडे जीमाया, बावोजी अज्ञानी सराईने खाया रे ॥गु०॥११॥ ऋषि दयाचद जी कहे सुणो प्राणी, क्षायिक समकितरी से ठी राणी हो ॥गु०१२॥

दोहा—चलू करीने उठिया, मूँढे फेर्यो हाथ । उठणरी त्यारी हुई, सुणो आगली वात ॥ १ ॥
मोजडी लेवणने ऊठीया, नही लाधी तिण वार । सोच फिकर वहुलो कियो, हुई घणी तकरार ॥ २ ॥
नहीं लाधी काहि मोजडी, मनमें वहु पिछताय । आज ओलमो पूरो हुसी, कारी न लागे काय ॥ ३ ॥

ढाल छट्ठी ६—राजा जी मोजडी लेवण ने उठिया, आया राणीजीरे पास । दोठी हुवे तो मोजडी वताय दो ईम करे अरदास ॥ सामल महाराजा मोजडी री खवर म्हाने कोइ नहीं ॥ १ ॥ ज्ञान सु जोवे क्यो नहीं मोजडी, ज्यारे घटमें ज्ञान, आपरी तो खवर आपने कोइ नहीं, तो पराई खवर किम जाण ॥ सा० ॥ २ ॥ ज्ञानी तो गुरू महाराजा आपरा, आगम निगम रा जाण । ठोड वतावो क्यों नी मो भणी, तो मोजडी तुरत देऊ आण ॥ सा ॥ ३ ॥ इतरी सुणीने राजा चालीयो, आयो वावाजी रे केर । राणी जवाव ऐसो दियो, हुई गयो मणरो सेर ॥ सा० ॥ ४ ॥ ऋषि दयाचन्द ईम भणे, मोजडी जीमाई पम । आगली वातरो निरणो को नहीं, थें सुणज्यो धर प्रेम ॥ ५ ॥

दूहा—राणी दासी मोकली, वदन आवे आज । आप ठिकाने फूटरा, आयो थारो माज ॥ १ ॥

ढाल सातमी ७—हावो वावो जी हावो गुसाई जी थाने वन्दन आवे पटराणी । हावो महाराजारा गुरुदेव वावा थाने वन्दण आवे पटराणी ॥ १ ॥ जूठी ए दासी जूठ न वोले, थारी जीभ पकड कुण जाले । जुती खवाई ने अवगुण किनो, मने सागरीया घणी साले ॥ २ ॥ हावो महाराजा री पटराणी दासी, थारी खीर खाड घणी याद आसी ।

॥ दूहा ॥ रीस आवे राजा भणी, पिण कारी न लागे कांय । चाकर पुरूप बुलाविया, दीयां ठामो ठाम वैसाय ॥ १ ॥

इतरे मुनीसर आवीया, एकलडा अणगार । जक्ष देहरेमें उतर्यां, लब्धि तणा भण्डार ॥ २ ॥

ढाल आठमी ८—निरलोभी शुद्ध आतमा रे गुणवन्ता, लै निर्दोषण शुद्ध अहोर साधु एक आयारे ॥ कनक कामणी तज निसर्या रे गुणवन्ता, कांई जीत्या विपय विकार साधु एक आया रे ॥ १ ॥ पञ्च महाव्रत पालता रे गुणवन्ता, कांई टाले दोष बेयाल साधु एक आया रे ॥ २ ॥ करुणां सागर रस भर्या रे गुणवन्ता, कांई छकाया रा प्रतिपाल साधु एक आयारे ॥ ३ ॥ वावीस परीसह जीतता रे गुणवन्ता, कांई सुमति गुप्ति ना पाल साधु एक आया रे ॥ ४ ॥ हुकुम हुवो नफरा भणी रे गुणवन्ता, सज लावो वेश्या नार साधु एक आया रे ॥ ५ ॥ वहु नरने जिणे छेतर्यां रे गुणवन्ता, जाणे सुख विलसुं संसार साधु एक आया रे ॥ ६ ॥ नयन कटारां मारती रे गुणवन्ता, कांई बिन्दली काजल सार साधु एक आया रे ॥ ७ ॥ जक्ष देहरे में धस-गई रे गुणवन्ता, कांई आडा जड्या कुवांड़ साधु एक आयारे ॥ ८ ॥ गेली मन समजी नहीं रे गुणवन्ता, कांई लेसुं लाख पचाव साधु एक आया रे ॥ ९ ॥ राजा रींज्यो आपसी रे गुणवन्ता, तिणसुं लिया खोटा भाव साधु एक आया रे ॥ १० ॥ चौकी वेठा चिह्नं दिसारे गुणवन्ता, तब मुनीवर कियो विचार साधु एक आया रे ॥ ११ ॥ ऋदपि दयाचन्दजी ईम भणे रे गुणवन्ता, तब नहीं चूके अणगार साधु एक. आया रे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥ वेश्या आई देखके, मुनि कहे तिण वार । यांसेती डरती रहे, तूं हैं वेश्या नार ॥ १ ॥

ढाल नवमी—वेश्या देखी डरे मांहीं तब विचार कियो मुनिराय । अठे दीसे कोई द्वेप रो काम, साधांरा हुय जासी कुनाम ॥ १ ॥ दिन ऊगे लोग देखसी नार, साच जूठरो कीसुं तार । जिन मारगरी नीची थाय, ऊंची हुवे ज्युं करुं उपाय

॥ २ ॥ लब्धि फोर मुनि कियो विस्तार, उभी देखे वेश्या नार। ओघा मुहपति वस्त्र पातरा, बाल दिया जव माया मातरा
॥ ३ ॥ जोगी वन वेठो अवधूत, डीलरे लगाई वभूत। लम्बी जटा लटा रसाल, गले पहरी रुद्राछरी माल ॥ ४ ॥ सिंदुर
टीकी अखीया लाल, विछाय वैठो चितेरी खाल, हाथमें लियो हिरणरो सींग, वन वेठो वावारो धींग ॥ ५ ॥ धु खन्ती धूणी
राजरो दडो, हाथमें पहेर्यो लोहरो कडो। वेश्या जोय रहीं तिण वार, वावा महारी मत करो छार ॥ ६ ॥ जो हुं जाउ डेरे बहार,
तो हूँ आउ नये ससार। दुग दुग जोवे वेश्या दूर, जोगी जोस चढ्यो भरपुर ॥७॥ राजा कहे राणीसु जाय, थारे गुरामें अकल
न काय। अघोरा वे सेवणहार, जामें नहीं कोई फरक न सार ॥ ८ ॥ साधु वेश्या भेला होय, हूँ आयो निजरासु जोय। शङ्का
होयतो जोय निचन्त, नहीं तो राख महारी परतीत ॥ ९ ॥ राणी कहे सुणो महराज, अब किसो विनयरो काज। वेश्या साधु-
भेला रहेवे, वे तो गुरु थाहरा ही हुवे ॥ १० ॥ चोडे देख लेस्यां महाराज, ज्यारा गुरु ज्यारी जासी लाज। राजा राणी आया
डेरे वाहर, और घणा मिल्या नरनार ॥ ११ ॥ खोल दिया देहराना कुवाड, माहे जोगी ने वेश्यानार। राणी कहे सुणो महा-
राज, अब गुरु चेलारी नहीं रहि लाज ॥ १२ ॥ साची थी जणे आपसु खसी, दे ताली राजासु हसी। हाको वाको राजा थयो,
ओ कठीने आयो कठीने गयो ॥ १३ ॥ लब्धि फोर मुनि कियो विस्तार, पछे आलोयण लोधी सार। जैन धर्मरो हुवो
उद्योत, दीप रही समकित री जोत ॥ १४ ॥ अंतसमे अणसण आदरियो, मुनिवर शिवपुरमें सचरियो। राणी रो वचन ऊंचो
रह्यो, राजारो वचन नीचो गयो ॥ १५ ॥ राणी चेलणा री आकही ढाल, आगे समकित पामसी राय रसाल ॥ १६ ॥

॥ दूहा ॥ राणी कहे महाराजने सरधो जिनधर्म सार। पाखडी मत छोड दो, जीहाँ उतरो भवपार ॥ १ ॥

ढाल दसमी १०—क्षमा ढाल करमें ग्रही खड्ग हाथमें ज्यारे झाली हो प्रीतम जी। ईर्या निसाणी जोवता, वोले वचन

विचार हो प्रीतम जी ॥ एह गुरु महाराने करल्यो थाहरां ॥ १ ॥ पञ्च महाव्रत पालता, टाले दोष वेयाल हो प्रीतम जी। पांचों इन्द्री वश करी; छकाया रा प्रतिपाल हो प्रीतम ज़ी ॥ एह० ॥२ ॥ मैलाजी पहरे कपड़ां, जिके शील पाले नव वाड हो प्रीतम जी । रङ्गाने चंगा मुनि नहीं रहै, नहीं करे देह सिणगार हो प्रीतम जी ॥ एह० ॥ ३ ॥ कनक कामनी तज नीसर्या, सम गिणे धातु पाषाण हो प्रीतम जी । तरण तारण गुरु महारां, ज्यांरो लाग्यो मुक्ति सु ध्यान हो प्रीतम जी ॥ एह० ॥ ४ ॥ वावीस परीसह जीपता, क्रोध लोभ माया मान हो प्रीतम जी । शत्रु मित्र सम गिणे, मधुरी ज्यांरी वाण हो प्रीतम जी ॥ एह० ॥ ५ ॥ पांच सुमति तीन गुप्ति धरे, जिके चारित्र कमलना जाण हो प्रीतम जी । गुण सत्तावीस शोभतां, पूरी पाले जिनवर आण हो प्रीतम जी ॥ एह० ॥ ६ ॥ नोतरीय जीमे नहीं, नहीं जोवे जीमणवार हो प्रीतम जी । रथ पालखी वैसे नहीं, जिके गुरु उतारे पार हो प्रीतम जी ॥ एह० ॥ ७ ॥ मोलरा देव मानो मती, गुरू मोल नही होय हो प्रीतम जी । मोलरो धर्म नहीं निपजे, थे हिये विमासी जोय हो प्रीतम जी ॥ एह० ॥ ८ ॥ राणी भिन्न भिन्न करीने ओलख्या, शुद्ध साधु तणा आचार हो प्रीतम जी । ऋषि दयाचन्द इम भणे सुण राजा रो उतर्यो खार हो प्रीतम जी ॥ एह० ॥ ९ ॥

॥ दूहा ॥ एक दिवस राजा हिवे, सैना लेई वडभाग । हाथी घोड़ा रथ पालखी, लेई आवे बाग ॥ १ ॥

ढाल अग्यारहवी—राजा जी रेवाडी सञ्चर्यां रे ललना, आया बाग मजार । जोवो पुण्य रायनारे ललना ॥ १ ॥ ध्यान करीने बेठा तिहाँ रे ललना, एकलड़ा अणगार ॥ जोवो० ॥ २ ॥ रूप माँहि रलियामणा रे ललना, देखी पूछे राय ॥ जोवो० ॥ ३ ॥ कुण कारण ऋषि थे हुआ रे ललना, फुरमावो हित लाय ॥ जोवो० ॥ ४ ॥ ईण कारण चारित्र मैं लियो रे ललना, हूं हुंतो अनाथ ॥ जोवो० ॥ ५ ॥ बचन सुणी राजा बोलीयोरे ललना, हूँ होसु तुमारो नाथ ॥ जोवो० ॥ ६ ॥ ऋषि उत्तर एसो

दियो रे ललना, राय भणी विख्यात ॥ जोवो० ॥ ८ ॥ राय पोते अनाथ छोरे ललना, दूजारो किम होसो नाथ ॥ जोवो० ॥८॥ इमसुणी राजा जाणीयो रे ललना, आ ईचरज वाली वात ॥ जोवो० ॥ ९ ॥ मगध देशरो हू अधिपति रे ललना, सगलारो शिरदार ॥ जोवो० ॥ १० ॥ निरधनिया ने धनवन्त करू रे ललना, धनवन्त ने मैं मागनवार ॥ जोवो० ॥ ११ ॥ मुज पिता घर धन अति घणोरे ललना, हुतो महारे पूरो ज्यार ॥ जोवो० ॥ १२ ॥ नाथ अनाथ नहीं ओलख्यॉं रे ललना, नहीं हो जिन मारगरो जाण ॥ जोवो० ॥ १३ ॥ कहु हकीगत माहरी रे ललना, मत लेचो उलटी ताण ॥ जोवो० ॥ १४ ॥ प्रथम वय हुती माहरीरे ललना, वेदना उठी आख ॥ जोवो० ॥ १५ ॥ मुज पिता वैद्य बुलावियारे ललना, शाता करणे काज ॥ जोवो० ॥ १६ ॥ जप करने कायर हुवारे ललना, तिणसुं गरज न सरी काय ॥ जोवो० ॥ १७ ॥ जो महारी वेदना उपसमेरे ललना, संजम लेउं परभात ॥ जोवो० ॥ १८ ॥ ईम चिन्तवी राय सुय रह्योरे ललना, वेदना गई तिणवार ॥ जोवो ॥ १९ ॥ जात बोली देवी देवतारी ललना, संजम लियो परभात ॥ जोवो० ॥ २० ॥ अब हू हुवो नाथ छवकायनोरे ललना, सुण राजा ईचरज वाली वात ॥ जोवो० ॥ २१ ॥ धन धन थें मोटा जतिरे ललना, सरधामें मन वच काय ॥ जोवो० ॥ २२ ॥ क्षायिक समकित निरमलीरे ललना, टाली मिथ्यात्वरी छोत ॥ जोवो० ॥ २३ ॥ ऋषि दयाचन्द जी इम भणेरे ललना, राजा बांध्यो तीर्थंकर गोत ॥ जोवो० ॥ २४ ॥

दोहा—समकित ली साधा कने, बोले श्रेणिक राय । साचा सत गुरु आप हो, जिनमत दियो बताय ॥ १ ॥

ढाल वारहमी १२—महोटा थे चतुर सुजाण, मीठी थारी अमृत वाण । थें तो आचारना जाण, वचन थारॉं परिमाण ॥ मुक्ति मारग खरो लाधो साधु जी ॥ १ ॥ धन कुल धन अवतार, मात पिता परिवार । शिवगतिना दातार, दुरगति टालन-

हार ॥ मुक्ति० ॥ २ ॥ थें तो बांधी कालसुं चाल, तोड नांख्या बन्धन जाल। मोह माया विकराल, छांडी ने पाया केवल सार ॥ मुक्ति० ॥ ३ ॥ थें तो छोड़ी रूपवन्ती नार, थें छोड्या भरीया भण्डार। थें तो जाणो अथिर संसार, ऋद्धि छोड़ी ने लीयो संजम भार ॥ मुक्ति० ॥ ४ ॥ थें मगधदेशराजी राय, इन्द्र तणे मन भाय। बिरक्त ले दीक्षा मुनिराय; वांदु साधुजीरा पाय ॥ मुक्ति० ॥ ५ ॥ तन मन सुं मानज मोड़, वंदु वे कर जोड़। टालु भव तणी खोड़, मिथ्यामतरा बन्धन तोड़ ॥ मुक्ति० ॥ ६ ॥ साचा निज ज्ञानीरा वेण, मीलिया साचा सेण। खुली गया अन्तर नैण, पाई वे मुक्ति जैण ॥ मुक्ति० ॥ ७ ॥ कहे ऋषि गोरधन जी एम, राखो धर्मसुं प्रेम। गाढ़ा गाढ़ा राखो समकितरा नेम, वरते कुशल क्षेम ॥ मुक्ति० ॥ ८ ॥

दोहा—छतां गुण साधां तणां, कीना श्रेणिकराय। प्रेमधरी बन्दना करी, आया तिण दिश जाय ॥ १ ॥

ढाल तेरहमी १३—मगधदेशरा श्रेणिकराजा, क्षायिक समकित धार। वीरप्रभुजीरा हुआ भगत, जिणरो सूत्रमें विस्तार ॥ श्रेणिक राय तीर्थंकर पद पासी ॥ १ ॥ समज्यां पीछैं आणन्द पासी, उद्घोषणा दीरासी। जीव कोई मारण नहीं पावे, एहवी ठामोठाम केवासी ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एहवी अनुकंपा ज्यारे घटमें, तिणरो ही कारज थासी। पहिला होसी आप तीर्थङ्कर, जिन मारग दीपासी ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ वहोत्तर वरसरो आउखो होसी; तीस वरस घरवासी। वारह वरसरो छद्मस्थ रहसी, पीछे केवल पासी ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ चउदे सहस ज्यारे साधु होसी, ईग्यारे गणधर महोटा। सातसे साधु ज्यारे केवल पासी, पाप छोड़ी ने खोटा ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ छत्तीस सहस ज्यारे आरज्या होसी, चउदेसे केवल पासी। आठ कर्मरी घात करीने, पञ्चमी गति सिधासी। श्रे० ६। साधु साध्वी श्रावक श्राविका; च्यारों ही तीर्थ थापी। ऐसे प्रभुजी मुक्ति सिधासी,

मोहनी कर्म देसी कापी ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ ईकीस सहसरो शासन वरतसी, महावीरनी पेरे जाणी। ऋषि दयाचंदजी इणि पर भावे, सरद्दो श्री जिन वाणी ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ आठ कर्मरी घात करीने, शिवपुर पदवी पासी। घणा जीवाने वुज्या पीछे, जन्म मरण मिटासी ॥ श्रे० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री चेलणाराणीजीरी ढाल समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री बनारसी दास कृत ज्ञान पचीसी ॥

दोहा—सुर नर तिरि जग जोनिमें, नरक निगोद भमत। महामोह की निन्दमें, सोए काल अनत ॥ १ ॥ जैसे ज्वर के जोरसे, भोजन की रुचि जाय। तैसे कुकर्म के उदय, धर्म वचन न सुहाय ॥ २ ॥ लगे भूख ज्वर के गये, रुचिसु लेत आहार। अशुभ हीन शुभमयि जगे, जाने धर्म विचार ॥ ३ ॥ जैसे पवन झकोर से, जलमें उठे तरग। त्यू मनसा चंचल भई, परिग्रह के परसङ्ग ॥ ४ ॥ जिहा पवन नहीं संचरे, तिहा नहीं जल कल्लोल। त्यू सब परिग्रह त्याग सें, मनसा होय अडोल ॥ ५ ॥ ज्यू काहू विषधर डसे, रुचिसु निंब चवाय। त्यू ममतासु तुम मढे, मगन विषय सुख पाय ॥ ६ ॥ निंब रस फरसे नहीं, निरविष तन जब होय। मोह घटे ममता मिटे, विषय न वछे कोय ॥ ७ ॥ ज्यू सछिद्र नौका चडे, बूढे अन्ध अदेख। त्यू तुम भव जल में पडे, विन विवेक धरी भेख ॥ ८ ॥ जिहा अखण्डित गुण लगे, खेवट शुद्ध विचार। आतम रुचि नौका चढे, पावे भव जल पार ॥ ६ ॥ ज्यू अङ्कुश माने नहीं, महा मत्त गजराज। त्यूं मन तृष्णामें फिरे, गिणे न काज अकाज ॥ १० ॥ ज्यू नरदाय उपाय कर, गहिया ने गज साध। त्यू या मन वश करनको, निर्मल ध्यान समाध ॥ ११ ॥ तिमिर रोगसें नयन

ज्यूं, लखे ओर की और। त्यूं मन संशय में फिरे, मिथ्यामत की दोर ॥ १२ ॥ ज्यूं औषध अञ्जन किये, तिमिर रोग मिट जाय। त्यूं सद्गुरू उपदेशसे, संशय वेग पलाय ॥ १३ ॥ जैसे सब जादुजरे, द्वारामती की आग। तिम मायामें तुम पड़े, किहाँ जाओगे भाग ॥ १४ ॥ द्विपायन से ते वचे, जे तपसी निग्रन्थ। तजी ममता समता ग्रहो, इहे मुक्तिको पन्थ ॥ १५ ॥ ज्यूं कुधातु के फेटसें, घटी विध कञ्चन काँति। पुन्य पाप करी त्यूं भये, मूढातम बहु भांति ॥ १६ ॥ कंचन निज गुण नहीं तजे, वान हीन न होत। घट घट अन्तर आतमा, सहज स्वभाव उद्योत ॥१७॥ पन्नायिठ पकाइयें, शुद्ध कनक ज्यूं होय। त्यूं परगट परमातमा, पुन्य पाप मल खोय ॥ १८ ॥ पर्व राहुके ग्रहण ज्यूं, सूर सोम छवि छिन्न। संगत पाई कुसाधु की, सज्जन होय मलीन ॥ १९ ॥ निंबादिक चन्दन करे, मलयाचल की वास। दुरजन ते सज्जन भये, रहत साधुके पास ॥ २० ॥ जैसे तलाव सदा भरे, जल आवे चिहुं ओर। तैसे आश्रव द्वार से, कर्म बन्धको जोर ॥ २१ ॥ ज्यूं जल आवग मुंदिये, सूके सरवर पान। त्यूं सञ्जम संवर किये, कर्म निर्जरा जान ॥ २२ ॥ ज्यूं बूटी संयोग से, पारा मूर्छित होय। त्यूं पुद्गल सुं तुम मिले, आतम शक्ति समोय ॥ २३ ॥ मेहेली खटाई मांजीये, पारा परगट रूप। शुक्ल ध्यान अभ्यास से, दर्शन ज्ञान अनूप ॥ २४ ॥ कहे उपदेश वनारसी, चेतन अब कछु चेत। आप बुझावत आपकुं, उदय करन के हेत ॥ २५ ॥

इति श्री वनारसी दास कृत ज्ञान पच्चिसी समाप्तम्।

श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालये। बीकानेर (राजपूताना)

संवत् १९७९ वर्षे श्रीपार्श्वनाथ जिन जन्म कल्याणक दिने लिखितम् ॥

शिवं भवतु

॥ अथ श्रीदशवैकालिक की सज्झाय प्रारभ्यते ॥

अथ प्रथमाध्ययनरी ढाल (१) दीवाली दिन आवीओ ॥ ए देशी ॥

धरम मंगल महिमा नीलो, धरम समो नहीं कोय। धरम शुद्ध नमे देवता, धर्मे शिवसुख होय ॥ ध० ॥ १ ॥ जीवदया नित्य
पालीए, संजम सत्तर प्रकार। बारे भेदे तप तपे, धरम तणो ए सार ॥ ध० ॥ २ ॥ जिम तरुवरने फूलडे, भमरो रस ले जाय। तिम
सन्तोषे साधु आतमा, जिम फूलने पीडा न थाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ ईण विध विचरे गोचरी, वेहेरे शुद्ध आहार। ऊंच नीच मध्यम
कुले, धन्य धन्य ते अणगार ॥ ध० ॥ ४ ॥ मुनिवर मधुकर समकह्या, नहीं निसराय नही दोष। लाधो भाडो दे देहने, अण लाधे
सन्तोष ॥ ध० ॥ ५ ॥ घणा घरारी गोचरी, थोडो थोडो लेवे आहार। पाचो इन्द्री वश करे, सफल करे अवतार ॥ ध० ॥ ६ ॥ महा-
व्रत पाले निरमला, टाले सघलाइ दोष। देवलोक निश्चय खरा, सूतं लागी ज्यारी मोक्ष ॥ ध० ॥ ७ ॥ ईरिया जोईने चालणो, भाषा
बोल विचार। बाईस परीसह जीतना, संयम खाडारी धार ॥ ध० ॥ ८ ॥ धन्य मोरादेजी मातजी, ध्यायो निरमल ध्यान। गज
होदे बैठा थका, पहोता मोक्ष निधान ॥ ध०॥ ९ ॥ आदेसरजी रा दीकरा, भरतादिक सो पुत ईण भव मुक्ति सिधाविया, कर करणी
करतूत ॥ ध० ॥ १० ॥ आदेसरजी री दीकर्या, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय। तप कर काया सोकवी, मुक्ति गई शुद्ध होय ॥ ध० ॥ ११ ॥
बाहूबलजी रो पोतरो, श्रीश्रेयास कुमार। इखु रस वहिरावियो, भावे सूजतो आहार ॥ ध० ॥ १२ ॥ खाजा लाडु ने सूंखडी, पाच
विगय परीहार। वीर जिणंद वखाणियो, धन्य धन्नो अणगार ॥ ध० ॥ १३ ॥ अध्ययन पहिले दुम्मपुप्फीया, सखरो अरथ विचार।
पुन्यकलश शिष्य जयतसी, धर्मे जय जयकार ॥ ध० ॥ १४ ॥ इति प्रथमाध्ययनरी ढाल ॥ १ ॥

अथ द्वितीयाध्ययनरी ढाल २ जी, कपूर हुवे अति उजलोरे ॥ ए देशी ।

दीक्षा दोहली आदरीजी, काम भोग फल छांडि । सकल पड़सी दुःख पग पगे जी, वैरागे रंग मांडि ॥ १ ॥ मुनीसर धन्य धन्य ते अणगार ॥ भोग तजी जोग आदरे जी, तेहनी हुं बलिहार ॥ मु० ॥ मन बाले भूल्यो चूकतो जी, मकरे ढील लिगार । जाणे न को जग केहनोजी, कुण हुं कुण ते नार ॥ मु० ॥ २ ॥ करी आतापना आकरी जी, कोमल न करे देह । राग द्वेष तजी पांडुआ जी, जिम सुख पामे अछेह ॥ मु० ॥ ३॥ अग्नि कुण्ड जल ते पड़े जी, अगंधन कुलनो साप । वम्यो न वांछे विष वलि जी, तिम कुल अपणे थाप ॥ मु० ॥ ४ ॥ धिग धिग तूं जश वांछतोजी, वांछे वम्यो आहार । जीवित थी मरणो भलो जी, लाजे न निर्लज लगार ॥ मु०॥ ॥ ५ ॥ नारी सारी पारकी जी, देख देख मत भूल । वायु झकोले तरु पड़ेजी, अथिर हुवे डूलाडूल ॥ मु० ॥ ६ ॥ जिम हाथी अंकुस वसे जी, थिर ठाम आवे तेम । राजीमती सती बुझियोजी, ठामि आयो रहनेम ॥ मु० ॥ ७ ॥ अज्झयणा सामण्णपुव्वीये जी, बीजे एह विचार । पुन्यकलश शिष्य जेतसी जी, प्रणमे सूत्र सुखकार ॥ मु० ॥ ८ ॥ इति द्वितीयाध्ययरी ढाल समाप्तम् ॥

अथ तृतीयाध्ययनरी ढाल ३ जी, प्रणमुं श्रीगुरु पाय ॥ ए देशी ॥

सुधा साधु निग्रन्थ, साधे मुगति नो पंथ । आतम संभर्यो ए, संवर आदर्योए ॥ १ ॥ दोषण टाले दीख, तेहने एहवी शिख वीर जिणवर कहेए, मुनिवर सरदहे ए ॥ २ ॥ उद्देसक आदि देई, एहवा पिंड न लेई । कृतकड़ जाणीयो ए, साहमुं आणीयो ए ॥ ३॥ लेवे न रायभत्त, न जीमे गृहने पत्त । रायपिण्ड नादरे ए सिज्यातर परिहरे ए, ॥ ४ ॥ राखे न सन्धीराय, दानशाले नवि जाय । वाय न वींजणो ए, रंगे न रीझणो ए ॥ ५ ॥ चोवा चन्दन चम्पेल, तन न लगाड़े तेल । जोवे नहीं आरसीए, ते [illegible]
खेले न पासासार, ते किम बोले मार । छत्र नवि शिर धरेए, गृहिसंगति हरे ए ॥ ७ ॥
जुती न पग तले ए, जीव दया पाले ऐ ॥ ८ ॥ आदरे तीन [illegible]

तजे जीम सेलडीए, लुण धूपेण वडीए ॥ २० ॥ वमन विरेचन कर्म, ॥ ६ ॥ मूला आदा कदमूल, मचीत्त बीज फल फूल। पहिरे नहीं हीर चीर, शोभा न करे शरीर। पीठी न मंजणोए करीने गमावे धर्म। दाते दातण घसीए, न लगावे मिसीए ॥ ११ ॥ तप किरिया करीए, पहुचे शिवपुरी ए ॥ १३ ॥ नामे ए आपे न आजणोए, ॥ १२ ॥ सूत्रमें बावन बोल, वरजे साधु अमोल। ख़ुडीयर, अज्झयण तीजो सार। अरथ अनेक छे ए, जयतसी मन रूचे ए ॥ १४ ॥ इति तृतीयाध्ययनरी ढाल समाप्तम् ॥

अथ चतुर्थाध्ययनरी ढाल ४, लाखारी ए देशी ॥

महावीर भाख्यो एम, स्वामी सुधरमा उपदिशे जी ॥ हो मुनिवर महावीर भाख्यो एम, सुण सुण जम्बू तेम, चोथो अज्झयण छजीवणी जी ॥ सुण० ॥ १ ॥ पृथिवी अप तेउ वाय, वनस्पति त्रस जाणीये जी ॥ पृ० ॥ पहवी छजीवनी काय, हिसा टाली दया पालीये जी ॥ पह० ॥ २ ॥ महाव्रत प च सदैव, वलि व्रत छट्ठो पालीये जी ॥ म० ॥ त्रिविध त्रिविध जाव जीव, गरही निंदी पडिक मी जी, ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ शिष्य पूछे लेई दीख, किम चालु बोलु किम रहुजी ॥ शि० ॥ समजावे गुरु शिख, जयणा ए चाले बोलजे जी ॥ स० ॥ ४ ॥ ए जिन शासन सार, प्रथम ज्ञान पछे दया जी ॥ एजिन० ॥ जीवाजीव विचार, जाणे अनुक्रमे नाणथी जी ॥ जी० ॥ ५ ॥ केवल दसण नाण, पामे करम खपायने जी ॥ के० ॥ छेहडे लहे सिद्ध ठाण, अजर अमर सुख शासता जी ॥ छे० ॥ ६ ॥ अज्झयण छजीवणी नाम, सुणता तन मन उलसेजी ॥ अ० ॥ सरदहे शुद्ध परिणाम, पुन्यकलश शिष्य जेतसी जी ॥ सर० ॥ ७ ॥
॥ इति चतुर्थाध्ययन री ढाल समाप्तम् ॥

अथ पचमाध्ययनरी ढाल पाचमी पचमी, तप तुमे करोरे प्राणी ॥ ए चाल

पंचम पिण्डेषणा अज्झयणे, उद्देसा वे सार रे। विध तणे आणी भात पाणी, करो तिरो स सार रे ॥ दीक्षा पालो दोष टालो,

धरो ध्यान समाधरे । सूत्र साचो अरथ आछो, भणो वांचो नि साधरे ॥ दीक्षा० ॥ २ ॥ संचरे मुनि गोचरी ने, नगर गाम मजार रे । जीव निहाले दया पाले, बोले हँसे न लिगार रे ॥ दीक्षा० ॥ ३ ॥ असण पाणी खादिम स्वादिम, सुझतां लहे तेहरे । असुझतो मुनि दोष जाणी, कहे न कल्पे एह रे ॥ दीक्षा० ॥ ४ ॥ छकाय मरदी साधु अरथे, कीयो भोजन जेहरे । ते न गरजे यति वरजे, सुवावड़ी आदि देई रे ॥ दीक्षा० ॥ ५ ॥ पिण्ड निषेध्या कुल निषेध्या, तजे भजे निरदोष रे । मुधा दाई मुधा जीवी बेउं जावे मोक्षरे ॥ दीक्षा० ॥ ६ ॥ विधे लेवे विधे आलोवे, विधे करे आहार रे । लुखो सुखो अरस निरस, हिले न हिये लिगार रे ॥ दीक्षा० ॥ ७ ॥ काले आवे काले जावे, विचरे नहीं य अकाल रे । कालो काल समाचरे, ते वंदु साधु त्रिकाल रे ॥ दीक्षा० ॥ ८ ॥ भात पाणी सयण आसण छतां न देवे जेह रे । जति रतीत सुं रोस न करे, निंदे वन्दे सम तेहरे ॥ दीक्षा० ॥ ९ ॥ तपचोरने वयचोर आदिक, हुवे किलविष देवरे । दुरगत दुरलभ बोध जाणी, धरम मारग सेवरे ॥ दीक्षा० ॥ १० ॥ शिख शिक्षा ग्रहे भीक्षा, ते लहे शिवलोय रे । जयतसी कहे सूत्र मांहे, बोल बहु छे जोयरे ॥ दीक्षा० ॥ ११ ॥ इति पंचमाध्ययन री ढाल समाप्तम् ॥

अथ छट्ठाध्ययनरी ढाल छट्ठी ६, धारिणी मनावे हो मेघकुमारने जी ॥ ए देशी ।

वयरागी निरागी हो सुधा साधुजी नाण दंसण संपन्न । वनवाड़ी मांहे हो आवी समोसर्या सुमति गुपति प्रतिपन्न ॥वयरागी०॥ ॥ १ ॥ मिलि मिलि रायराजा ना मुहता ब्राह्मण क्षत्री लोक । साधुने पूछे हो किम छे थाहरों आचार गोचर जोग ॥ व० ॥ २ ॥ मुनिवर पभणे हो मारग साधुनो, कठन आचार विचार । हुवो नवि होसी हो धरमको इणि समो, मुगति तणो दातार ॥ व० ॥ ३ ॥ छये व्रत पाले हो छकाय राखतो, नहीं नाहण सिणगार । पलंग निषेध्यां हो गृही भाजन तजे. अकल्प स्थान अठार ॥ व० ॥ ४ ॥ तेल गुल घ्री हो स्निग्ध जे करे, ते गृही नहीं अणगार । नित तप भाष्यो हो एक वार भोजने, वरजे विसन विकार ॥ व० ॥ ५ ॥

वस्त्र पात्र राखे हो स जम राखिवा, न धरे ममता प्रेम । विभूषण करतो हो करे वध चिकणो, कलपे अकलपे केम ॥ व० ॥ ६ ॥
द० जीव दया पाले हो पग पग दिन समे, वरजे रात्री विहार । एक काय हणतो हो त्रस थावर हणे, लहे दुर्गति अवतार ॥ व० ॥ ७ ॥ तप
५ जप करणी हो दु ख हरणी करे, निरमम निरहंकार । स वेगी सोभागी हो चन्द जिम निरमलो, पहोंचे मुगति मझार ॥ व० ॥ ८ ॥
छट्ठो अतिमीठो हो लागे वाचता, भलो धरमारथ काम । नामे सुख पामे हो जयतसी आतमा उल्लसे मन परिणाम ॥ व० ॥ ६ ॥ इति॥ स०
छट्ठाध्ययन री ढाल समाप्तम् ॥

अथ सप्तमाध्ययनरी ढाल सातमी ७ विणजारा नी देशी ।

साधु बुझे रेभाषासुमति विचार, भाषा चिहु भेदे कही, साधु बुझे रे । साधु बुझे रे सच असचा मीश्र, असच मोस चोथी सही साधु बुझे रे ॥ १ ॥ साधु बुझे रे । बोले निरवद्य वाण पहेली ने चोथी वलि ॥ साधु बुझे रे ॥ साधु बुझे रे । भाषे न भाषा दोय, बीजीने तीजी टली साधु बुझे रे ॥ २ ॥ साधु बुझे रे निश्चे कठिन कठोर, स कित सावद्य स भवे । साधु बुझे रे ॥ साधु बुझे रे जिण थी लागे पाप, तेहवी वाणी न बोलिये । साधु बुझे रे ॥ ३॥ साधु बुझे रे चोरने न कहे चोर, न कहे काणो काणा भणी । साधु बुझे रे ॥ साधु बुझे रे पर पीडा हुवे जेण, वाणी तेह न बोलावणी । साधु बुझे रे ॥ ४ ॥ साधु बुझे रे न कहे असाधुने साधु, साधु ने साधु बोलाविजो साधु बुझे रे । साधु बुझे रे सुरनर तिरिहा जीव, कहीं भी दोष म लावजो । साधु बुझे रे ॥ ५ ॥ साधु बुझे रे वक्कसुधी अज्झयण, बोल घणा छे मानमें साधु बुझे रे ॥ साधु बुझे रे। लागे तिणथी दोष, न पडे तूं इण वातमें । साधु बुझे रे ॥ ६ ॥ साधु बुझे रे । दशविध बोले साच अरिहत आज्ञा छे इसी । साधु बुझे रे ॥ साधु बुझे रे पुन्यकलश गणि शिष्य, सूत्रवागी भणे जैतसी । साधु बुझे रे ॥ ७ ॥ ॥ इति सप्तमाध्ययन री ढाल समाप्तम् ॥ ५

अथ अष्टमाध्ययनरी ढाल आठमी, पुरोहितीयारी। प्राणी थारो आउखो तूटाने सांधो कोई नहीं रे ए देशी।

श्रीजिनवर गणधर मुनिवर ने कहे रे, हिंसा टालीने दया पाल रे। जूजूवा जीव जाणी छकायना रे, पग पग जयणा करी चाल रे॥ श्रीजि०॥ १॥ टाले मुनि सूक्ष्म आठ विराधना रे, छोड़ी मद मच्छर परमाद रे। तप जप खप करी काया सोपवी रे, जीपे इंद्रिय विषय स्वाद रे॥ श्रीजि०॥ २॥ जरा जान करे देहिजो जरी रे, न वधे रोगपीड़ा घट मांहि रे। इंद्रिय हीण न पड़े ज्यां लगी रे, त्यां लगे करे धर्म उच्छाह रे॥ श्रीजि०॥ ३॥ क्रोधे वैर वधे घटे प्रीतड़ी रे, माने विणसे विनयाचार रे। माया मित्राई वाले सरगमें रे, लोभे विणशे सब संसार रे॥ श्रीजि०॥ ४॥ ज्योतिष निमित्त सुहणां फल कहे रे, यन्त्र मन्त्र झाड़ा झुड़ा देही रे। कामण टुमण औषध केलवी रे। किम तरशेने तारिशे केम रे॥ श्रीजि०॥ ५॥ चित्र भींत न जोवे नारी चीतर रे, वाले लोचन जिम रवि तेज रे। हीणी खीणी वलि सो वरसनी रे, तिहां पिण व्रतधर न धरे हेज रे॥ श्रीजि०॥ ६॥ कुकड़ी बचड़ा डरे बिल्ली थकी रे, ब्रह्मचारी नारी सुं तेम रे। शिणगार शोभा षटरस खाईवा रे, तालपुट जहर करे जेम रे॥ श्रीजि०॥ ७॥ वसहि सयणासण पायपुंछणो रे, पडिलेहण ले लेवा जोगरे। धन्य धन्य मुनि ते चन्द सुरज समा रे, लहे सुख इहलोकने परलोक रे॥ श्रीजि०॥ ८॥ आचार पिण ही नाम अज्झयणमें रे, आठमें सखर आचार विचार रे। सिद्धांत साखे भाषे जयतसी रे, सूत्र थी हो जो मुज निस्तार रे॥ श्रीजिन०॥ ६॥ इति आठमाध्ययनरी ढाल समाप्तम्॥

अथ नवामाअध्यायनरी नवमी ढाल। ओलंगडी २ सहेली श्री श्रेयांसनी रे। एहनी चाल छे

ओलङ्गड़ी २ करजे गीतारथ गुरु तणी रे, मान मोड़ मद छोड़ आसातना टाली नमीये पूजीये रे, वांदीये बेकर जोड़॥ ओ०॥ १॥ सिद्धांत २ सुणावे सखरा वांचने रे, बुजे अरथ विचार। चन्द सूरज २ जिम गुरु सेविये रे, विनय करी वार वार॥ ओ०॥ २॥ नवमें २ विनय समाहि अज्झयण में रे, नवा नवा अरथ विचार। उद्देसे २ चोथो थिवरे वर्णव्या रे समाधि थानक चार

॥ ओ० ॥ ३ ॥ पहिली २ विनय समाधि विधि भली रे, वीजी सूत्र समाधि । तीजी तप २ चोथी समाधि आचारनी रे, चार चार भेद आराधी ॥ ओ० ॥ ४ ॥ समाधि २ आराधे ते सुख सिद्धि लहे रे, पामे अमरपद टेव । वेकर जोडीने वादे जयतसी रे, गुणवन्त श्री गुरुदेव ॥ ओ० ॥ २० ॥ इति नवमाध्ययनरी ढाल समाप्तम् ॥

अथ दसवा अध्ययनरी ढाल दसमी ॥ राग मल्हार ॥

अरिहंत वचने दीक्षा आदरी जी, नारी वमन रस सुजाण । दशमो भिक्षु नाम अज्झयणमें जी, वम्यो न वाछे जाण ॥ अरि० ॥ १ ॥ पृथिवीने खोणे खोणावे नहीं जी, पीये न पावे शीत नीर । जाले न जलावे तेउकायने जी, वीजे न वीजावे समीर ॥ अ० ॥ २ ॥ छेदे न छेदावे तरु हरिकायने जी, वरजे वीज सचित्त । पचे न पचावे भोजन रसवती जी, त्रस थावर वध चित्त ॥ अरि० ॥ ३ ॥ पाच व्रत पाले पाच इन्द्री दमें जी, गाम कटक सहे धीर । रहे समसाणे पडिमा पडिवजे जी, तजे प्रतिवध शरीर ॥ अ० ॥ ४ ॥ रागद्वेष मदमच्छर माया परिहरी जी, न करे विणज व्यापार । तजे तमासा हासो मश्करी जी, वाछे नहीं सत्कार ॥ अरि० ॥ ५ ॥ मर्म न दाखे धर्म भाखे भलो जी. वाचे सूत्र सिद्धान्त । आतम ध्याने आतम उधर्यो जी, पामे परमपद अत ॥ अरि० ॥ ६ ॥ श्रीसयभव गणधर ए रच्यो जी, दशवैकालिक सूत्र । सखर आचार परूप्यो साधुनो जी, मनक तार्यो निजपुत ॥ अरि० ॥ ७ ॥ सवत सत्तरसे सत्तरोत्तर समे जी, वीकानेर मझार । पुन्यकलशगणि शिष्य जयतसीरे, गीत रच्या सुखकार ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति दसमाध्ययनरी ढाल समाप्तम् ॥

॥ अथ ढाल इग्यारमी धवल करे हिव केल अहोनिश कुवरसु रे । एहनी चाल ॥

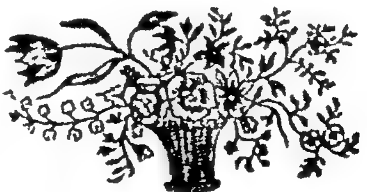
दशवैकालिक सूत्र सुहामणो जी, रच्यो श्री सयंभव स्वाम । अज्झयण २ व्यालु वेलो दश हुवा जी, तिण दियो एहवो नाम ॥ दश० ॥ १ ॥ ऊपर ऊपर चुलिका वे रलियामणी जी, जिम गिरि मेरु शिरचुल । श्री मधर २ स्वामी भणी जक्षिणी जी, सखर

बात समूल ॥ दश० ॥ २ ॥ अठारे २ ठाणा हो पहिली चुलिका जी, जाणे चतुर सुजाण। हय गय २ वाहण रस अंकुस चढे जी, वसी हुवे तिम मुनि ठाण ॥ दश० ॥ ३ ॥ आरति २ निवारे हे वीरति आदरे जी, लोपे नहीं जिन लीक। तप जप खप करिया करे आकरी जी, ते वन्दनीक पूजनीक॥ दश० ॥ ४ ॥ चुलिका२ बीजी हो बोधबीज सम्पजे जी, बीजी न तीजी बात। मुनिवर समता-भर संवरमेंजी, धरमे भींनी साते धात ॥ दश० ॥५ ॥ संवेगी २ सौभागी वैरागी भलाजी, पाले निरमल शील। केवल दंसण वरी भवजल तरीजी, पामे अविचल लील ॥ दश० ॥ ६ ॥ सुणतां भणतां सिद्धान्त बांचता जी, उल्लसे अंगो अंग। नव नव मंगल पुन्यकलस सदा जी, जयतसी जय जय रङ्ग ॥ दश० ॥ ७ ॥ इति दशवैकालिक चूलिकारी ढाल ग्यारमी ॥

॥ इति श्री दशवैकालिक रा सज्झाय समाप्तम् ॥

☞श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय, बीकानेर।☜

सम्वत् १९७९ फागुन वदी १३ मङ्गलवार ॥ शुभमस्तु ॥



॥ अथ श्री धन्नामुनि री ढाल प्रारभ्यते ॥

दोहा —नवमे अंग तीजे वर्गमें, कह्या धन्नाजीरा भाव । साभलता सुख्ता हुवे, ते सुणिजो चित्त लाय ॥ १ ॥
वैरागी शिरसेहरो, धन्य धन्नो मुनिराय । ते तणा गुण वर्णवु, पातक दूर पलाय ॥ २ ॥

ढाल पहेली १—नगरी काकन्दी हो अति रलीयामणी, सहस्र रा वन उद्यान हो भविक जन । प्रजा लोक सुखी तिण नगरमें जीतशत्रु राजा राजान हो भविकजन ॥ भाव धरीने हो भवियण साभलो ॥ १ ॥ भद्रा सार्थवाह तिहा वसे, जाने राजी नके नहीं कोय हो भविक जन । तिस घर धन्नो जनमीओ ज्यारो रूप देखीने मगन थाय हो भविक जन ॥ भाव० ॥ २ ॥ भर जोवनमें आय जाणी करी, पिता परणाइ बत्तीस नार हो भविक जन । महेल तेत्तीसा हो लीला कर रह्या, पड रह्या नाटकरा झणकार हो भविक जन ॥ भाव० ॥ ३ ॥ षटरस भोजन चिजा नित नवा, घणी दासी ने घणा दास हो भविक जन । क्रोड बत्तीस सोनैया लाया दायजो, विलसोनी लील वीलास हो भविक जन ॥ भाव० ॥ ४ ॥ विचरत वीर जिणंद समोसर्या लक्षण एकसो आठ हो भविक जन । बारह परषदा हो चाली वादवा, लग रह्या धरमरा ठाठ हो भविक जन ॥ भाव० ॥ ५ ॥ कर असवारी हो राजन सचर्या, कुणकनी परे कोड हो भविक जन । पाच अभिगम तिहा शुद्ध मन मूकने, वान्द्या वे कर जोड हो भविक जन ॥ भाव० ॥ ६ ॥ पहेली ढाल संपूर्ण ए हुई, तिहा आया जिनराज हो भविक जन । नगरीमें हगामग लागी अतिघणी, लोक टोला टोली जाय हो भविक जन ॥ भाव० ॥ ७ ॥ इति ॥

ढाल दुजी २—धन्नो जी नाम कुमार, वेठा मोहल मझार, सुण जो चित लाय। लोको ने देख्यां जावता जी ॥ १ ॥ धन्नो जी पूछे एम लोक जावे छे केम, सुण जो चित्त लाय किण महोच्छव मेलो मंड्यो जी ॥ २ ॥ सेवक कहे कर जोड़ समोसर्या जिन राय, सुण जो चित्त लाय परषदा चाली वांदवा जी ॥ ३ ॥ सजिया सकल शिणगार बहु लोको रे परीवार, सुण जो चित्त लाय सन्मुख वेठा श्रीवीरने जी ॥ ४ ॥ भगवन्त दिये उपदेश काल घटे हर हमेश, सुण जो चित्त लाय जनम मरण रो रोग लग रह्यो जी ॥ ५ ॥ जैसी ऊनाले री रात एसो संसार रो साथ, सुण जो चित्त लाय चरणोंरा दर्शन दोहला जी ॥ ६ ॥ अथिर कुटुंब धन माल कांई फसीयो माया जंजाल, सुण जो चित्त लाय कमल भमर तणी परे जी ॥ ७ ॥ मेलो मंड्यो असराल, अण चिंतियो उठ जाय, सुण जो चित्त लाय, जीव वटाऊ पावणो जी ॥ ८ ॥ आ थई दूसरी ढाल भाषी दीन दयाल, सुण जो चित्त लाय आउं आज्ञा लेई करी जी ॥ ६ ॥ इति ॥

ढाल तीजी ३—घर आय माताजीने इम कहे रे लाल, लेसुं संजम भार, सुणो मात जी हो। कृपा करीने दीजे आज्ञा रे लाल, न करणी ढील लिगार, सुणो मात जी हो॥ कृपा करीने दीजे आज्ञा रे लाल ॥ १ ॥ एहवां वचन सुनना सुणी रे लाल, माताजी रह्या मुरछाय, सुत सांभलो रे। सावचेत हुई चिन्तवेरे लाल, आज्ञा दिनी न जाय, सुत सांभलो रे, चारित्र छे वच्छा दोहलो रे लाल ॥ २॥ एका एकी पुत्र माहरे रे लाल, आज्ञा देउं किण रीत सुत सांभलो। ए कंचन ए कामनीया रे लाल, सुख वीलसो नी धर प्रेम ॥ सुत सांभलोरे, चारित्र छे वच्छा दोहिलो रे लाल ॥ ३ ॥ नरक निगोदमें हूं भम्यो रे लाल, भमीयो अनन्ती वार सुणो मात जी हो। दुःख अनन्ता मैं सह्यां रे लाल, कहूं कठे लग तांय सुणो मात जी हो ॥ कृपा करीने दीजे आज्ञा रे लाल ॥ ४ ॥ पांचों ही महाव्रत पालना रे लाल, करनो माथे रो लोच सुत सांभलो रे। बावीस परीसह जीतणां रे लाल, शील पालना नव वाडसुं सुत सांभलो रे। चारित्र छे वच्छा दोहिलो रे लाल ॥ ५ ॥ खड्ग धारा परे चालणो रे लाल, करणो उग्र वीहार सुन सांभलो रे। क्रोध मान

माया जीनणी रे लाल, मरण आया रो नहीं सोच सुत साभलो रे ॥ चारित्र छे वच्छा दोहिलो रे लाल ॥ ६ ॥ सावद्य औषध ढा०
ना करे लाल, मारग दुष्कर घोर सुत साभलो रे। हरगिज थासु पले नहीं रे लाल। मत करो झुठी झोड सुत साभलो रे॥
न० चारित्र छे वच्छा दोहिलो रे लाल ॥ ७ ॥ हरगिज हु रहु नहीं रे लाल, लेसु सजम भार सुणो मातजी हो। कृपा करीने आज्ञा दी-
३ जीये रे लाल, वरजत माता थक गई रे लाल। ए थई तीसरी ढाल सुत साभलो रे॥ चारित्र छे वच्छा दोहिलो रे लाल ॥ ८॥ इति ॥

ढाल चौथी ४—हारे लाला महाबल कुवर तणी परे, माताजी ने उत्तर दीधरे लाला। कृष्ण थावरचा तणी परे, दीक्षा लीधी मोटे मडाण रे॥ वैरागी वैरागमें झील रह्यो ॥ १ ॥ हारे लाला माला मोती खोलीया, माता झेल्या खोले रे माहि रे लाला। टलक टलक आसु पडे जाणे टुटी मोतीयारी माल रे॥ वैरागी० ॥ २॥ हारे लाला भगवत ने दीनी भोलावणी, पुत्रने दीनी माता शिख रे लाला। कियामे कसर राखो मती, गुरुको आज्ञामें रहेजो ठीक रे॥ वै० ॥ ३॥ हारे लाला माताजी वाद निज स्थानक गया, धन्नोजी हुवा अणगार रे लाल। सुमति गुपति री खप करे, कियारा कोड पेले पार रे॥ वै० ॥ ४॥ हारे लाला चरण भेट्या जिनराजरा, दीक्षा लीनी उनहीज दिन रे लाला। वेला जो वेले पारणो, जाव जीव नहीं घाले भंग रे॥ वै० ॥ ५॥ हारे लाला जिम सुख हुवे तेम करो, भगवन्त दीनी फूरमाय रे लाला। धन्नोजी सुण राजी हुवा, अब सारुला आतम काज रे॥ वै० ॥ ६॥ हारे लाला आंबिल करणो पारणे, खड्या हाथसु लेणो आहार रे लाला। नाखोतो वणीमग ना वछे एहवो पारणे लेणो आहार रे॥ वै० ॥ ७॥ हारे लाला आज्ञा हुवे जिनराज री, जाणे बीलमें पेठो भुजंग रे लाला। मुरछा गत आणे नहीं, मुनि माड्यो करमासु जगरे ॥ वै० ॥ ८॥ हारे लाला आयो वेले रो पारणो काकदी नगरी मझार रे लाला। गौतम स्वामी नी परे आहार यतावे वीरजीने लाय रे॥ वै० ॥ ९॥ हारे लाला आहार मिले तो पाणी ना मीले, पाणी मीले तो न मीले आहार रे लाल॥ हीन दान पणो भाखे नहीं, क्रोधादिक जीत्या मुनिराज रे ॥ वै० ॥ १० ॥ हारे लाला जिनपति विचरे देशमें, धन्नो जी वीरजी रे पास रे ३

हांरे लाला ताप तपे मुनिवर आकरां, आता- लाला । आचारंग आदि देइ करी मुनि भणीया अगियारे अंग खास रे ॥ वै० ॥ ११ ॥ हांरे लाला काया तो सुक खंखर पना लीनी अघोर रे लाला । ध्यान रेवे तलालीनमें, मुनि मांडयो करमासु जंग रे ॥ वै० ॥ १२ ॥ हांरे लाला होई, खंधकनी परे जाण रे लाला । चोथी ढ़ाल पूरण हुई, आगे शरीर तणो विस्तार रे ॥ वै० ॥ १३ ॥ इति ॥

ढाल पांचमी ५- -सुकी रे छाल काटकी पावड़ी, एवां पग दोय सुका रे । लोहि मांस तो सुकी गयो, दुर्बल दीसे छे लुखारे ॥ श्रीधन्नो मुनीसर तप तप्या ॥ १ ॥ मूंग ऊदरी कोमल फलीया, एहवी सुकी छे फलीया । एहवा धन्ना मुनिराज री, सुकी पगरी आंगलीया रे ॥ श्रीधन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ २॥ पशु पक्षी ने कागा मोरीया, एहवी सुकी ऋपिरी जंघा रे । गोड़ा तो गांठ वनस्पति तो पिण परीणाम चङ्गा रे ॥ श्री धन्नो मुनिसर तप तप्यां ॥ ३ ॥ साथल पिंगू कूंपल सारखी, कडीयां ऊंट जैसी गोडा रे । पेट तो सुको जाणे दीवडी, ऊंडो गयो अथाग रे ॥ श्रीधन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ ४॥ ओरिसा उपरा उपरी मेलिया एहवा पासलीयां जाणो रे । एहवा तो धन्ना मुनिराज री, पूठ लागली पीछाणो रे ॥ श्री धन्ना मुनीसर तप तप्यां ॥ ५ ॥ छाती तो जाणो वजर विंजणो, बांया खेजडनी डालियों रे । हाथांरा पंजा वीडला पानसा, कुलथ आंगलीया तेहनी फलीया रे ॥ श्री धन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ ६ ॥ गलो तो सुको जाणे जेवड़ी, डाढ आमकुल जाण रे । सुकी झरोंखा हेठ जीभड़ी, जीभ्यां सुकी सागपान रे ॥ श्री धन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ ७ ॥ नाक बीजोरा री काछली आंख्या छेदर दोय नेणारे । अथवा तो तारो परभातीओ, कान कांदा छातु जाणो रे ॥ श्रीधन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ ८ ॥ ढीलो पलाण तुरंग पावड़ी, एहवा लटके दोनों हाथों रे । वेहुं तो चाले पगे चालता, कंपे वाय जीम माथो रे ॥ श्री धन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ ६ ॥ सुको खियालो तिलरी सांकली, एहवा खड़ खड़ हाडोरे । ढक्या तो अगन तणि परे, तो पिण परीणाम गाढो रे ॥ श्री धन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ १० ॥ उदर होठ कान जीभड़ी, जेम चामनसां जाणो रे, सत्तरह वोलोंमें गाल्या हाड़कां, देहो दीशे महा वीकरालो रे ॥ श्री धन्नो मुनीसर तप तप्यां ॥ ११ ॥ सुको तो कोलो अथवा

तू वडो, पहवो सुक्यो ऋषि रो शिशो रे। कायातो सुक लखर हुइ, बोल थयाँ इकवीसो रे॥ श्री धन्नो मुनीसर तप तप्या ॥ १२॥ पाचमी ढाल पूरण हुई मुनिवर जोर काया कसी रे। परवा न राखी किण वात री, सुरता मुक्ति जाय वसी रे॥ श्री धन्नो मुनीसर तप तप्या ॥ १३ ॥ इति ॥

ढाल छट्ठी ६—वीरजिणद समोसर्या जिणदराय, राजगृही रे माय हो। श्रेणिक राय चाल्या वादवा जिण दराय, साथे अभयकुमार हो ॥ १॥ भगवंत देवे धरम देशना जिण दराय, सर्व जीव हितकार हो। श्रेणिकराय पूछा करे जिणि दराय, चउद हजारमें उत्कृष्ठा कुण थाय हो ॥ २॥ वीरजिणद इसडो कहे श्रेणिकराय, सुण तू चित्त लगाय हो। दुक्कर करणी निर्जरा श्रेणिकराय, चौद हजारमें धन्नोजी थाय हो ॥ ३ ॥ वीरजिणद, समोसर्या जिण दराय, राजगृही रे वहार हो। धन्नोजी रातरा चिंतवे जिण दराय, जाग्यो वहुल वैराग हो ॥ ४ ॥ धन्नोजी वांद्या श्री वीरने जिण दराय, चरण भेट्या वारवार हो। छट्ठीजी ढाल सम्पूरण हुई जिण दराय, आगे वहु विस्तार हो ॥ ५ ॥ इति ॥

ढाल सातमी ७—धन्नाजी ऋषि मन चिन्तवे, तप करता तूटी हम तणि कायके। श्रीवीरजिणदजी ने पूछने, आज्ञा लेई संथारो देसु ठाय के॥ धन्य करणी हो धन्य राजरी, धन्य करणी हो मुनिराज री॥ ए आकडी ॥ १॥ प्रह ऊठी ने वाद्या श्रीवीरने, श्रीमुख आज्ञा दीवी फुरमाय के। विमल गिरि थिवरा साथे, चाल्या समस्त साधु खमायके॥ धन्य० ॥ २॥ आयो संथारो एक मासनो, थिवर आया प्रभुजी रे पासके, भंड उपगरण स्वामी साभल्यो। गौतम स्वामी पूछे वेकार जोडके ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ तप तपीया मुनिवर वहु आकरा, कहो स्वामी वासो कहा जाय कीध के। सागर तेतीस रे आउखे, नव महीनामें सारथ सिद्ध लीध के ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ क्षेत्र महाविदेह माँहि सोजसो, विस्तार नवमा अग रे माय के। सात ढालीयो पूरण हुओ, मुनि आशकरणजी गुण गायके॥ धन्य ॥ ५॥ संवत अठारे से गुणसठे, वैशाख वदिपक्ष रे माय के। विसालापुरमें गुण गाईया, पूज्य रायचन्दजीरे

पसायके ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ ओछोजी अधिको जे कह्यो, तो मुज मिच्छामि दुक्कड़ होय के। बुद्धि अनुसार गुण गाईया, सूत्र रे अनुसार जोय के ॥ धन्य करणी हो धन्य राजरी, धन्य करणी हो मुनिराज री ॥ ७ ॥ इति ॥ श्रीधन्नामुनि री ढाल समाप्तम् ॥

श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय, बीकानेर (राजपूताना)

"संवत् १६७६ फाल्गुण शुक्ला ८ श्री आदिजिन जन्म दिने"

शुभं भवतु ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!



* श्री वीतरागाय नम *

॥ अथ श्री नमिरायरी ढाल प्रारभ्यते ॥

दोहा—मासण नायक सीमरना, निश्चे सिवपुर जाय। गुण कीधा उत्तमा तणा, पातक दूर पलाय ॥ १ ॥

उत्तराध्ययनमें चालीयो, नमि नामे ऋषिराय। एक सहस आठ राणीया, सार्यो आतम काज ॥ २ ॥

किम वैराग पामायो, किम नोकल्या छिटकाय। सावधान थई सामलो, सहु कोई चित्त लगाय ॥ ३ ॥

ढाल १, मानुजी नमरी एथ० —मिथला नगरो केरो राजीयो रे, प्रजाने प्रतिपाल। नीति वर्त्ताई हो मुलकमें अति भली, लोक सुखी निणकाल ॥ राज करे हो महिपति निरमलो रे, ए आकडी ॥ १ ॥ हय गय रथ पायक सेना सावठी रे, तेज प्रताप अखड। वश सहु कीया हो वैरीने भोमीया जी, नाठा चौर प्रचण्ड ॥ राज० ॥२॥ साक्षात मिथला देवलोक सारखी रे, नाटक ना झणकार। बाग बगीचा हो सरोवर सोभतारे, गढ मंदिर पोल बाजार ॥ राजा० ॥ ३ ॥ एकदा राय तणे डील उपनोजी, दाहज्वर रोग असराल। सलुसलु सगली काया थई रे, उठी पिंडमें झाल ॥ राज० ॥४ ॥ चन्दन घस घस लावे राणीया रे, बाजे खड खड चुड। रायने काने लागे अलखामणा रे, जब चुडो कीधो दूर ॥ राज० ॥ ५ ॥ एक एक चूड राखी सुवागरे कारणे रे, अब खडको नहीं कोय। राजेन्द्र पूछे हो विप्र सुण पाछली रे, खडको इम नहीं होय ॥ राज० ॥ ६ ॥ इतरे सुणने राजा इम चिन्तवे रे, बहु मीलीया बहु दुख। इण जुगमें कोई कीणरो नहीं रे, जीव एकाकी पणे सुख ॥ राज० ॥ ७ ॥ उज्वल भावी हो मनमें भावना रे, देऊ छकाय ने दान। ऋषि आशकरणजी कहे नमि ने, उपनो जाति स्मरण ज्ञान ॥ राज० ॥ ८ ॥

दोहा—निद्रा सुखकर आय गई, उगमते परभात। वैरागे मन वालने, छोड़ी तिणा जिम आथ ॥ १ ॥
हय गय रथ पायक सहु छांड्यो मुलक भंडार। ध्यान ध्यावे वनखंडमें नमि नामे अणगार ॥ २ ॥

ढाल २, प्रदेशी—पेला देवलोक नो धणी, नमिऋषि रायो रे, ज्ञान करीने देख न०। अहो अहो ऋद्धि छीटकायने न०, ध्यान धरे एका एक न० ॥ १ ॥ शकेन्द्र मन हुलस्यो न०, मुनिवर आगल आय न०। प्रणाम तोले देवता न०, आयो ब्राह्मण रूप वनाय न० ॥ २ ॥ गले जिनोई फाबती न०, जांणे भणीयो शास्त्र पूर न०। इन्द्र आकाशे उतर्यो न०, आयो साधु हजूर न० ॥ ३ ॥ हाथ जोड़ीने इम कहे न०, सबल कोलाहल थाय न०। आप थकी दुंख उपनो न०, इण नगरीरे मांय न० ॥४॥ अन्तेवर सहु आरडे न०, दुखिया थया सहु लोग न०। इतराने छीटकाय नीकल्या न० ए वातां नहीं थाने जोग न० ॥ ५ ॥ वलता मुनिवर इम कहे, बाह्मण सुणजे रे, इण ही ज मिथला मांय ब्रा०। एक रूंख मनोहर थाय ब्रा० पंख वेठो आय ब्राह्मण सुन जेरे ॥ ३ ॥ पान फल कर सोभता ब्रा० शीतल जेहनी छाय ब्रा०। आवे जावे वहु पंखीया ब्रा०, रमे खेले तिण मांय ब्रा० ॥ ७ ॥ वायो एकदा वायरो ब्रा०, वृक्ष पड़ गयो जड़ समेत ब्रा०। रोवे पीटे बहु पंखीया ब्रा०, पिण वृक्षनी सार न लेत ब्रा० ॥ ८ ॥ वृक्ष समो जग जाण जे० ब्रा०, पंखी जिम परीवार ब्रा०। हुवो राग अलगो थयो ब्रा०, ओ स्वारथी ओ परिवार ब्रा० ॥ ९ ॥ वचन सुणी मुनिराजना, न०, इन्द्र हरख्यो अंगो अङ्ग न०। ऋषि आशकरण जी कहे न० मुनिने चड़तो वैरागरो रंग न० ॥ १० ॥

दोहा—प्रशन बुजे दूसरो, ब्राह्मण वे कर जोड़। चलावा मनको नहीं, एक बुजा केरो कोड़ ॥ १ ॥
तो इन्द्र मोटको कार्त्तिक केरो जीव। लाख वत्तीस विमाण रो सायवो, देखे साधुनी समकित नीव ॥ २ ॥

ढाल ३, नेमजिणन्द समोसर्या ॥ ए देशी ॥ प्रश्न बुजे दूसरो रे, सुणो नमिऋषिराय हो मुनीसर। थारी मिथला बल रही रे, लोक दुंखी घणा थाय हो मुनीसर ॥ प्र० ॥ १ ॥ अंतेवर गढ आददे रे, वल रह्यो शहर बाजार हो मुनीसर। इंद्र कहे ऋषि-

रायने रे, सामो जोवो एक वार हो मुनीसर ॥ प्र० ॥ वल्ता मुनिवर इम कहे रे, ज्ञानादिक गुण मोक्ष हो रे ब्राह्मण। मिथला नगरी दाझता रे, म्हारो बले नही कोय हो ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सुखे समाधे हु रे, एक मुक्तिरो कोड हो ब्राह्मण। म्हारी मिथला किण कारणे रे, हु नीकलीयो छोड हो ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ब्राह्मण सुन हरखीयो घणुं रे, धन धन मुनिवर एह हो ब्राह्मण। मोह कर्म जीता भला रे, नहीं य गुणारो छेह हो ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ ५ ॥ वलि प्रश्न तीजो कहे रे, करावो पोल पागार हो मुनीसर। किवाड फीरणी भोगल आददे रे, खाई ने यत्र रसार हो मुनीसर ॥ प्र० ॥ ६ ॥ कीला कोट सेंठा हुवे रे, तो वैरी रो न चाले जोर हो मुनीसर। लारे याद करे घणा रे, ऐसो राजा नही हुओ दुजो ओर हो मुनीसर ॥ प्र० ॥ ७ ॥ मुनिवर कहे नगरी माहरी रे, श्रद्धा रूपीणी होय हो ब्राह्मण। पोल वैरा गणरूपीणी, तेहने गजा न सके कोय हो ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ ८ ॥ आगल स वरतप तणी रे, गढ क्षमा सार वखाण रे ब्राह्मण। गुपति खाईने आटलसे रे, पराक्रम धनुप प्रमाण हो ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ ९ ॥ जीवा पुणचा इरज्या रूपीणी रे, धीरज पणो मध्ये भाग हो ब्राह्मण। सो कर्म ऊपर कटकी करूरे, एक मोक्षकी ले रागरे ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ १० ॥ तपरूपियो लोहण करीरे, पहवो भाव स ग्राम रे ब्राह्मण। स सार नगरी कारमी रे, अविचल मुगति रो ठाम रे ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ ११ ॥ मन करने चलीयो नहीं रे, श्रद्धामें ऋपि लाल रे ब्राह्मण। पूज आशकरण जी कहे इन्द्र हरखियो रे, हिवे सामलो चउथी ढाल रे ब्राह्मण ॥ प्र० ॥ १२ ॥

दोहा—चोथो प्रश्न नमि प्रते, पुछे छे धर कोड। सावधान थई साभलो, निद्रा आलस छोड ॥ १ ॥

ढाल ४, शिवपुर नगर सुहामणो ए देशी,—अहो इन्द्र कहे नमिरायने, जलविच मेल कराय हो। जाली झरोखा सोभता, बहु दीठा आवे दाय हो ॥ १ ॥ श्रीइन्द्र० ॥ अहो सत्त भोमीया अति सोभता, उठे जलरी आवे लेर हो। केहसी नमि विना यह कुण करे, थारो नावगो हुवे लोक रे हो ॥ २ ॥ श्री इ० ॥ अहो ऋपि कहे वरकारमो, जिम राचे अज्ञानी लोग हो। निश्चे एक दिन ए छोडना

शासता सुख एक मोक्ष हो ॥ ३ ॥ ॥ श्री इ० ॥ अहो वाट मारग वासो वस्यो, हरखे फूले बहु जीव हो । पिण लेउं २ काल कर रह्यो, कूण देवे कारमी नीव हो ॥ ४ ॥ श्री इ० ॥ अहो एह वचन श्रवणे सुणी, हरख्यो मनमें सुरनाथ हो । प्रश्न पुछे पांचमो ब्राह्मण जोड़ी हाथ हो ॥ ५ ॥ श्री इ० ॥ अहो चोर गोठीला छे घणा, पासीगर ने वट पाड़ हो । इतराने खेम वरताय ने, पीछे लीजो संजम-भार हो ॥६॥ श्रीइ० ॥ एह वचन सुणी करी, मुनिवर वोले एम हो । मैं चोर म्हारा सेंठा किया, अवरने पकडुं केम हो ॥७॥ श्रीइ०॥ अहो लोक ने खबर न चोरनी, अणचोराने सेंठा कीध हो चोर छोड़ने पोखे जुगतसुं, जाने मंछा भोजन दीध हो । ८ ॥ श्रीइ० ॥ अहो पांचे इन्द्री चोरटी, ज्याने दीधा मुकलाय हो । अनेरा ने कुटे मारवे पिण, चोरानी न खबर न कांई हो ॥ ६॥ श्री इ० ॥

दोहा—हृदय कमल सुरराजना, विकस्यां सांभल वेण । ए जग पीहर साधुजी, साचा कहिजे सेण ॥ १ ॥

चलायो चले नहीं इन्द्र लेवे छे मन । श्रद्धानीव सेंठी घणी, साधु सदाई धन्य ॥ २ ॥

ढाल ५, अहो ऋषवजी एदेशी ॥ अनड भोमीया सहुइ नमाय, आप तो आणो आणो स्वामी आज्ञा रे मांय, स्वामी सांभलो ॥ १ ॥ अहो नमि ऋषि मुगति दातार, स्वामी सांभलो । ए आंकड़ी । आपरा पराक्रम लारला जाण, थां विण वैरी हो २ स्वामी आज्ञामें कुण आण स्वा० ॥ २ ॥ वलता मुनिवर इनपर भापे, कोई वैरी तो जीपे हो २ सुरो दश लाख स्वा० ॥ ३ ॥ कोईक आपरी आतमा जीत, ते तो सुरो हो २ मघको वाहवा स्वा० ॥ ४ ॥ होम जगन ब्राह्मण पोप, अबे तो लीजो हो २ स्वामी मारग मोक्ष स्वा० ॥ ५ ॥ दश लाख गायों नित्य देवे दान । तिणमें पिण दाख्यो हो २ फल श्रीभगवान स्वा० ॥ ६ ॥ संजमरा गुण कह्यां अमोलख दान, ते नही हो २ संजम रे फल समान स्वा० ॥ ७ ॥ प्रश्न पूछे पारखा कोड़, घर रहो तो धरम हो २ दुष्कर कीउं छोड़ स्वा० ॥ ८ ॥ आठम चवदश पोसा ठाय, इणसु अधिको हो २ धर्म केसो थाय स्वा० ॥ ९ ॥ घर रहो तो धरम श्री बहु जाण, जाचक मांगे हो २ आगे हाथ आण स्वा० ॥ १० ॥ वलता भापे मुनिवर इम वात, साधु तो मोटा हो २ छकायारा नाथ स्वा० ॥

११ ॥ मास मास पारणो करेह, डाभनो अणीही २ पारणे अन्नजल लेह स्वा० ॥ १२ ॥ सोलमी कला साधुनी होय, तेने तुले हो २ लागे नहीं कोय स्वा० ॥ १३ ॥ एह वचन सुणीया निज कान, इन्द्र हरख्यो हो २ मनमें असमान स्वा० ॥ १४ ॥ पूज आशकरणजी भाखे एम, साधु रे तो लागो हो २ मुगतिसु प्रेम स्वा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥ नवमो प्रश्न कोण परे पूछे इन्द्र ज तेह । जोम जोम उत्तर सामले, तिम तिम हरष धरेह ॥ १ ॥

॥ ढाल ६ धुमालनीलात ए देशी ॥ इन्द्र कहे नमीरायने हो, रुपो सोनो व जार । माणक मोती आददे हो, खजाना भरो आप भंडार ॥ १ ॥ इन्द्र करेछे पारखा हो । ए आकडी ॥ स चो भाजन कासी तणो हो, वसतर थोरमा दुसाल । हाथी घोडा रथ आद दे हो, राज मोकलो [redacted] ल ॥ इन्द्र० ॥ २ ॥ लारे गुण करसो घणा हो एसा हुवो महाराज । ईतरा वाना वधारने हों, पीछे सारो आतम काज ॥ इन्द्र० ॥ ३ ॥ वतला मुनिवर एम कहे हो, मेरु जीतो धन थाय । तो पिण तृष्णा पापणी हो, लोभी री इच्छा वधति जाय हो ॥ मुनिवर वलता :म कहे ॥ ४ ॥ लाभे लोभ वधे घणु हो, होये रिचारीने जोय । एकण सन्तोष वाहोरो हो जोव तृपत कदे न होय ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ हु तो जाणु धन कारमो हो, पत्थर फल समान । इन्द्र सुणी हरख्यो घणु हो, अहो अहो अन्तरज्ञान ॥ इन्द्र० ॥ ६ ॥ उपराठा इण धन थकी हो, ते जग विरला होय । वडा वडाने लुटीया हो, कनक कामण वध दोय ॥ इन्द्र० ॥ ७ ॥ छठी ढाल सुहामणी हो, धुमालनी जात । पूज आशकरणजी कहे साभलो, रखे करे विचमें वात ॥ इन्द्र० ॥ ८ ॥

दोहा — इन्द्र कहे नमिरायने, ए अतेवर भोग । इतराने छोटकायने, काई लो मारग जोग ॥ १ ॥

छता देवलोक सारिखा, ते वील्सो नही कोय । अछतीनी मुरछा करो, ओ मुज इचरज होय ॥ २ ॥

हाथ जोडी ब्राह्मण कहे, दीक्षा लीधी आप ॥ ए अतेवर छोडिने, रखे करे पीछताप ॥ ३ ॥

ढाल [redacted] लासा फूलारी । मुनिवर भाखे हो सुण ब्राह्मण एम, सठ जोम कामने भोग दु पदाई हो इण जोगने ॥ १ ॥ सारा

रोग अथाग ॥ वैद्यराज़ गुरू शरन थी, औषध ज्ञान वैराग ॥ ११ ॥ जे मैं जीव विराधीया, सेव्यां पाप अठार ॥ प्रभु तुमारी साखसें, वारम्वार धिक्कार। ॥ १२ ॥ बुरा बुरा सबको कहे, बुरा न दीसे कोय ॥ जो घट शोधे आपनो, तो मोसुं बुरा न कोय ॥ १३ ॥ कहेवामें आवे नहीं, अवगुण भऱ्या अनन्त ॥ लिखवामें क्युं कर लीखुं, जाणे श्री भगवन्त ॥ १३॥ करुणानिधि कृपाकरी, कठिन कर्म मोय छेद ॥ मोह अज्ञान मिथ्यात्वको, करजो ग्रन्थी भेद ॥ १५॥ पतित ऊद्धारन नाथजी, अपनो विरुद विचार ॥ भूल चूक सब माहरी, खमियें बारम्बार ॥ १६ ॥ माफ करो सब माहरा, आज तलकना दोष ॥ दीन दयाल देवो मुजे, श्रद्धा शील सन्तोष ॥१७॥ आतम निन्दा शुद्ध भनी, गुणवंत वन्दन भाव ॥ रागद्वेष पतला करी, सबसे खिमत खिमाव ॥१८॥ छूटुं पिछला पाप सें, नया न बान्धु कोय ॥ श्री गुरुदेव प्रसादसें, सफल मनोरथ होय ॥१६॥ परिग्रह ममता तजी करी, पञ्च महाव्रत धार ।॥ अन्त समय आलोयणा, करूं सन्थारो सार ॥ २० ॥ तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित्य मन्न। शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ॥ २१ ॥ अरिहन्त देव निर्ग्रंथ गुरु, संवर निर्जर धर्म। केवलि भाषित शासतर, एहि जैन मत मर्म ॥ २२ ॥ आरम्भ विषय कषाय तज, शुद्ध समकित व्रत धार। निज आज्ञा परमान कर, निश्चय खेवो पार ॥ २३ ॥ क्षण निकमो रहनो नहीं, करनो आतम काम। भणनो गुननो शीखनो, रमनो ज्ञान आराम ॥ २४ ॥ अरिहन्त सिद्ध सब साधु जी, जिनआज्ञा धर्म सार। मङ्गलीक उत्तम सदा, निश्चय शरणा चार ॥ २५ ॥ घडी घडी पल पल सदा, प्रभु स्मरण को चाव। नरभव सफलो जो करे, दान शील तप भाव ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धां जैसो जीव हैं. ज़ीव सोई सिद्ध होय। कर्म मेलका अन्तरा, बूझे विरला कोय ॥१॥ कर्म पुद्गल रुप है, ज़ीव रूप है ज्ञान ॥ दो मिल कर बहु रुप है, विछड्यां पद निर्वाण ॥ २ ॥ जीव करम भिन्न भिन्न करो, मनुष्य जनमकुं पाय ॥ ज्ञानातम

वैरागसें, धीरज ध्यान जगाय ॥ ३ ॥ द्रव्यथकी जीव एक है, क्षेत्र असख्य प्रमान । कालथकी सर्वदा रहे, भावें दर्शन ज्ञान ॥४॥ गर्भित पुद्गल पिण्डमें, अलख अमूरति देव । फिरे सहज भवचक्र में, यह अनादि की टेव ॥ ५ ॥ फूल अतर घी दूधमें, तिलमें तेल छिपाय । यू चेतन जड करमसग, बन्ध्यो ममत दुःख पाय ॥ ६ ॥ जो जो पुद्गलकी दिशा, ते निज माने हस । याही भरम विभावते, बढे करम को वस ॥ ७ ॥ रतन बन्ध्यो गठडी विषे, सूर्य छिप्यो घन माहि । सिंह पिंजरा में दियो, जोर चले कछु नाहि ॥८॥ ज्युं बन्दर मदिरा पीया, बीछू डंकित गात । भूत लग्यो कौतुक करे, त्यु कर्मों को उत्पात ॥ ९ ॥ कर्मसग जीव मूढ है, पावे नाना रूप । कर्म रूप मलके टले, चेतन सिद्ध सरूप ॥ १० ॥ शुद्ध चेतन उज्वल दरव, रह्यो कर्म मल छाय । तप सयम सें धोवता, ज्ञान ज्योति वढ जाय ॥ ११ ॥ ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धारूप । चारित्रथी आवत रूके, तपस्या क्षपन सरूप ॥ १२ ॥ कर्मरुप मलके शुधे, चेतन चांदी रूप । निर्मल ज्योति प्रगट भया, केवल ज्ञान अनूप ॥ १३ ॥ मूसी पावक सोहगी, फुँकातनो उपाय । राम चरण चारु मल्या, मैल कनक को जाय, ॥ १४ ॥ कर्म रूप बादल मिटे, प्रगटे चेतन चन्द । ज्ञान रूप गुन चाँदनी, निर्मल ज्योति अमंद ॥ १५ ॥ राग द्वेष दो बीज से कर्म बन्धकी व्याध । ज्ञानातम वैराग्य सें, पावे मुक्ति समाध ॥ १६ ॥ अवसर वीत्यो जात है, अपने वश कछु होत । पुण्य छतॉं पुण्य होत है, दीपक दीपक ज्योत ॥ १७ ॥ कल्प वृक्ष चिन्तामणी, इन भवमें सुखकार । ज्ञान वृद्धि इनसे अधिक, भव दुःख भञ्जन हार ॥ १८ ॥ राइमात्र घट वध नहीं, देख्या केवल ज्ञान । यह निश्चय कर जानके, त्यजियें परथम ध्यान ॥ १९ ॥ दूजा कुछवि न चिन्तिये, कर्म बन्ध बहु दोष । त्रीजा चौथा ध्याय के, करियें मन सन्तोष ॥ २० ॥ गई वस्तु सोचे नहीं, आगम वछा नाहि । वर्तमान वर्ते सदा, सो ज्ञानी जगमाहि ॥२१॥ अहो समदृष्टि जीवडा, करे कुटुंव प्रतिपाल । अन्तर्गत न्यारो रहे, ज्यु धाय खिलावे वाल ॥ २२ ॥ सुख दुःख दोनु वसत है,

ज्ञानी के घटमांहि । गिरिसर दीखे मुकर में, भार बोजवो नांहि ॥ २३ ॥ जो जो पुद्गल फरसना, निश्चय फरसे सोय । ममता समता भावसें, करम बन्ध खय होय ॥ २४ ॥ बांध्या सो ही भोगवे, कर्म शुभाशुभ भाव । फल निर्जरा होत हैं, यह समाधि चित्त चाव ॥ २५ ॥ बांध्या बिन भुगते नहीं, बिन भुगते न छुडाय । आपही करता भोगता, आपही दूर कराय ॥ २६ ॥ पथ कुपथ घट वध करी, रोग हानि वृद्धि थाय । युं पुण्य पाप किरिया करी, सुख दुःख जगमें पाय ॥ २७ ॥ सुख दीयां सुख होत है, दुःख दीयां दुख होय, आप हणे नहीं अवरकुं, तो अपणे हणे न कोय ॥ २८ ॥ ज्ञान गरीवी गुरू वचन, नरम वचन निर्दोष । इनकूं कबी न छांडिये, श्रद्धा शील सन्तोष ॥ २९ ॥ सत मत छोडो हो नरा, लक्ष्मी चौगुनी होय । सुख दुःख रेखा कर्म की, टाली टले न कोय ॥ ३० ॥ गोधन गजधन रत्नधन, कञ्चन खान सुखान । जब आवे संतोष धन, सब धन धूल समान ॥ ३१ ॥ शील रतन महोटो रतन, सब रतना की खान । तीन लोककी संपदा, रही शीलमें आन ॥ ३२ ॥ शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग । शीलै अरि करिकेसरी, भयजावे सब भाग ॥ ३३ ॥ शील रतन के पारखुं, मीठा बोले वैन । सब जगसें उंचा रहे जो नीचा राखे नैन ॥ ३४ ॥ तन कर मन कर वचन कर, देत न काहु दुःख । कर्म रोग पातक झरे, देखत वाका मुख ॥ ३५ ॥ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ पान खरन्ते इम कहे, सुन तरुवर वनराय । अबके बिछूरे कब मिलें, दूर पडेंगे जाय ॥ १ ॥ तब तरुवर उत्तर दीयो, सुनो पत्र एक बात । इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात ॥ २ ॥ बरस दिनाकी गांठ को, ओच्छव गाय बजाय । मूरख नर समजे नहीं, वरस गाँठको जाय ॥ ३ ॥

सोरठा—पवन तणो विश्वास, किण कारण ते दृढ कीयो । इनकी एही रीत, आवेके आवे नहीं ॥ ४ ॥

दोहा—करज विराना काढके, खरच किया बहु नाम। जब मुदत पूरी हुवे, देना पडशे दाम ॥५॥ विनु दीया छुटे नहीं, यह
निश्चय कर मान। हस हसके क्यु खरचियें, दाम विराना जान ॥ ६ ॥ जीव हिसा करता थका, लागे मिष्ठ अज्ञान। ज्ञानी इम
जाने सही, विष मिलियो पकवान ॥७॥ काम भोग प्यारा लगे, फल किपाक समान। मीठी खाज खुजावता, पीछें दूख की खान ॥
८ ॥ जप तप सजम दोहिलो, औषध कडवी जान। सुख कारन पीछें घनो, निश्चय पद निर्वान ॥ ९ ॥ डाभ अणी जल विन्दुवो,
सुख विषयन को चाव। भवसागर दुःख जल भर्यो, यह ससार स्वभाव ॥ १० ॥ चढ उत्तंग जहासें पतन, शिखर नही वो कूप
जिस सुख अन्दर दुःख वसे, सो सुख भी दुख रूप ॥ ११ ॥ जब लग जिसके पुण्यका, पहोंचे नहीं करार। तवलग उसको माफ
है, अवगुन करे हजार ॥ १२ ॥ पुण्य खीन जब होत है, उदय होत है पाप। दाजे वन की लाकरी, प्रजले आपो आप ॥ १३ ॥
पाप छिपाया नां छिपे, छिपे तो महोटा भाग। दावी दुवी ना रहे, रुई पलेटी आग ॥ १४ ॥ बहु बीती थोडी रही, अवतो सुरत
संभार। पर भव निश्चय चालनो, वृथा जन्म मत हार ॥ १५ ॥ चार कोश ग्रामान्तरे, खरची बांधे लार। परभव निश्चय
जावणो, करिये धर्म विचार ॥ १६ ॥ रज विरज ऊँची गई, नरमाइके पान। पत्थर ठोकर खात है, करडाइके तान ॥ १७ ॥
अवगुन उर धरिये नही, जो हुये विरप वबूल। गुन लीजे कालू कहे, नहीं छाया में सूल ॥ १८ ॥ जेसी जापें वस्तु है, वैसीदे
दिखलाय। याका बुरा न मानीयें, वो लेने कहा से जाय ॥ १९ ॥ गुरू कारीगर सारीखा, टाची वचन विचार। पत्थर से
प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार ॥ २० ॥ सतन की सेवा किया, प्रभु रीजत है आप। जाका वाल खिलाइयें, ताका रीजत वाप
॥ २१ ॥ भवसागर संसार में, दीपा श्री जिनराज। उद्यम करी पहोंचे तिरें, वैठी धर्म जहाज ॥२२॥ निज आतम कू दमन कर,
पर आतम को चीन। परमातम को भजन कर, सोई मत परवीन ॥ २३ ॥ समजु शके पापसें, अणसमजु हरपत। वे लुखा वे

चीकणाँ, इस विध कर्म बध्नन्त ॥ २४ ॥ समज सार संसार में, समजु टाले दोष । समज समज करी जीवहीं, गया अनन्ता मोक्ष
॥ २५ ॥ उपशम विषय कषायनो, संवर तीनुं योग । किरिया जतन विवेक सें, मिटे कुकर्म दुःख रोग ॥ २६ ॥ रोग मिटे स-
मता वधे, समकित व्रत आराध । निर्वैरी सब जीवको, पावे मुक्ति समाध ॥ २७ ॥ इति ॥ भूल चूक मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति
श्रावक लालाजी रणजीतसिंहजी कृत दोहा सम्पूर्ण ॥ श्री पञ्चपरमेष्ठिभगवद्भ्यो नमः ॥

दोहा—सिद्ध श्री परमात्मा, अरिगञ्जन अरिहन्त । इष्ट देव वन्दूं सदा, भयभञ्जन भगवन्त ॥ १ ॥ अनंत चौवीशी जिन नमुं,
सिद्ध अनन्ता कोड । वर्तमान जिनवर सवे, केवली दो कोडो नव कोड ॥ २ ॥ गणधरादिक सर्व साधु जी, समकित व्रत गुण-
धार । यथायोग्य वंदन करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥ ३ ॥ प्रथम एक नवकार गुणनो ॥

दोहा—पञ्च परमेष्ठी देवनो, भजन पुर पहिचान । कर्म अरि भाजे सभी, शिव सुख मङ्गल थान ॥ ४ ॥ अरिहन्त सिद्ध समरुं
सदा, आचारज उवझाय । साधु सकल के चरन कुं, वन्दू शीश नमाय ॥ ५ ॥ शासन नायक समरिये, वर्द्धमान ज़िनचन्द ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥ ६ ॥ अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणा भण्डार । जे गुरु गौतम समरियें, मनवं-
छित फल दातार ॥ ७ ॥ श्री जिन युगपद कमलमें, मुज मन अलिय वसाय ॥ कब ऊगे वो दिनकरु, श्रीमुख दरिसन पाय
॥ ८ ॥ प्रणमी पदपंकज भनी, अरिगंजन अरिहंत ॥ कथन करूं हवे जीवनुं, किंचित मुज विरतंत ॥ ९ ॥ अंजनाकी देशी ॥ हुं
अपराधि अनादिको, जनम जनम गुन किया भरपूर के ॥ लुंटीयां प्राण छकायनां, सेवियां पाप आठारां करूरके ॥ श्रीमुख॰
॥ १० ॥ आज तांइ इन भवमें पहेलां संख्याता असंख्याता अनंता भवमें, कुगुरु कुदेव अरु कुधर्मकी सद्दहणा प्ररूपना फरसना
सेवना दिक सम्बन्धी पाप दोष लाग्या ते मिछामि दुक्कडं ॥ २ ॥ मैनें अज्ञानपणे मिथ्यात्वपणे अव्रतपणे कषायपणे अशुभयोगें

करी प्रमादे करी अपछ्दा अविनीतपणा करया ॥ ३ श्री श्रीअरिहन्त भगवन्त वीतराग केवलज्ञानी महाराजजीकी श्रीगणधरदेव-
जीकी आचारज महाराजजीकी श्रीधर्माचारजजी महाराजजीकी श्रीउपाध्यायजीकी, अने साधुजीकी आर्याजी महाराजकी श्रावक
श्राविकाजी की समद्दृष्टि साधर्मि उत्तम पुरुषाकी शास्त्र सूत्रपाठकी अर्थ परमार्थकी धर्मसम्बन्धी सकल पदर्थोंकी अविनय अ-
भक्ति आशातनादिक करी, कराइ अनुमोदी मन वचन कायायें करी द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी सम्यक् प्रकारें विनय भक्ति
आराधना पालना फरसना सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रममें नहीं करी, नहीं करावी, नहीं अनुमोदी ते मुजे धिक्कार धिक्कार वार-
म्वार मिच्छामि दुक्कड ॥ मेरी भूल चूक अवगुन अपराध सब माफ करो बक्षो मुजे मैं खमावु मन वचन कायायें करी ॥

॥ दोहा ॥ मैं अपराधी गुरुदेवको, तीन भवनको चोर ॥ ठगु विराणा मालमें, हाहा कर्म कठोर ॥ १ ॥ कामी कपटी
लालची, अपछ्दा अविनीत ॥ अविवेकी क्रोधी कठिण, महापापी रणजीत ॥ २ ॥ (आहीं वाचनारे आप आपका नाम
कहेना) जे मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अढार ॥ नाथ तुमारी साखसें, वारंवार धिक्कार ॥ ३ ॥ मैंने छकायपने छही काय
की विराधना करी, पृथिवीकाय अप्काय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय बेंद्रिय तेंद्रिय चौरिंद्रिय पंचेंद्रिय सन्नी असन्नी
गर्भज, चौदे प्रकारें सम्मूर्छिम प्रमुख त्रस थावर जीवाकी विराधना करी करावी अनुमोदी मन वचन कायायें करी उठता
बेसता, सुवता हालता चालता शस्त्र वस्त्र मकानादिक उपकरणें करी उठावता धरता लेता देता वर्त्तता वर्तावता अप्पडिलेहणा
दुप्पडिलेहणा संबधी अप्रमार्जना दुप्रमार्जना सबधी अधिकी ओछी विपरीत पुजना पडिलेहणा सबन्धी और आहार विहारा
दिक नाना प्रकारका घणा घणा कर्त्तव्योमा संख्याता असंख्याता अने निगोद आश्रयी अनंता जीवका जितना प्राण लूट्या, ते
सर्व जीवाका मैं पापी अपराधी हुं, निश्चें करी बदलाका देणदार हुं, सर्व जीव मुज प्रतें माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुन

अपराध सब माफ करो, देवसी राइसी पक्खी चौमासी अने सांवत्सरिक संबंधी वारंवार मिच्छामि दुक्कडं वारंवार मैं खमाउ
छुं, तुमें सर्व खमजो, खामेमि सव्वजीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ १ ॥ वो
दिन धन्य होवेगा जिस दिन में छही कायका वैर बदलासें निवर्त्तुंगा, सर्व चोराशी लाख जीवायोनिकूं अभयदान
देउंगा सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ सुख दीया सुख होत है, दुःख दिया दुःख होय ॥ आप हणे नहीं अबरकुं, आपकुं हणे न कोय ॥ १ ॥ इति ॥

॥ दूजा पाप मृषावाद सो जूठ बोल्या ॥ क्रोधवशें मानवशें मायावशें लोभवशें हास्यें करी भयवशें इत्यादिक मृषा वचन
बोल्या ॥ २ ॥ निंदा विकथा करी कर्कश कठोर मरमकी भाषा बोली इत्यादिक अनेक प्रकारें मृषावाद जूठ बोल्या बुलाया
बोलतांने अनुमोद्या सो मन वचन कायायें करी मिछामि दुक्कडं ॥

॥ दोहा ॥ थापनमोसा मैं किया, करी विशवासघात ॥ परनारी धन चोरिया, प्रगट कह्यो नहीं जात ॥ १ ॥ ते मुजे धिक्कार
धिक्कार, वारंवार मिछामि दुक्कड़ं ॥ वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारें मृषावादका त्याग करूंगा, सो दिन मेरा
परम कल्याण रूप होवेगा ॥ २ ॥ त्रीजा पाप अदत्तादान है, सो अणदीधी वस्तु चोरी करीने लीनी ते मोटकी चोरी लौकिक
विरुद्ध, अल्प चोरी घर संबंधी नाना प्रकारका कर्त्तव्योंमें उपयोग सहित तथा विना उपयोगें अदत्तादान चोरी करी कराइ कर-
तानें अनुमोदी मन वचन कायायें करी तथा धर्म संबंधी ज्ञान, दर्शन, चारित्र अरुतपकी श्रीभगवंत गुरुदेवोंकी अण आज्ञा विणा-
यें कस्या ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कडं, सो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारें अदत्तादानका
त्याग करुंगा, वो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ३ ॥ चौथा मैथुन सेवने विषे मन वचन अरु काया योग प्रवर्त्ताया, नव

वाड सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाल्या, नव वाडमें अशुद्धपणे प्रवृत्ति हुई, आप सेव्या अनेरा पास सेवाया, सेवता प्रत्यें भला जाण्या, सो मन वचन कायायें करी मुजे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कड ॥ वो दिन मैरा धन्य होवेगा जिस दिन मैं नव वाड सहित ब्रह्मचर्य शीलरत आराधुगा, सर्वथा प्रकारें कामविकारसें निवर्त्तुंगा, सो दिन मैरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ४ ॥ पाचमा परिग्रह सो सचित्त परिग्रह तो दास दासी दुपद चउपद प्रमुख मणि पत्थर प्रमुख अनेक प्रकारका है, अरु अचित्त परिग्रह जो सोना रूपा वस्त्र आभरण प्रमुख अनेक वस्तु है तिनकी ममता मूर्च्छा आपणात करी, क्षेत्र घर आदिक नव प्रकारका बाह्य परिग्रह अरु चौद प्रकारका अभ्यतर परिग्रहकों रख्यो राखयो रखातानें अनुमोद्यो तथा रात्रिभोजन अभक्ष आहारादि संबधो पापदोप सेव्या ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड ॥ वो दिन मैरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्व प्रकारें परिग्रहका त्याग करी ससारका प्रपचसेंती निवतुंगा सो दिन मैरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥ ५ ॥ छट्ठा क्रोध पापस्थानक सो क्रोध करीनें अपनी आत्माकु और परआत्माकु तपाइ ॥६॥ तथा सातमा मान ते अहकार भाव आण्या तीन गारव आठ मदादिक कस्या ॥ ७ ॥ तथा आठमा माया पापस्थानक ते धर्म सबंधी तथा ससार सवधी अनेक कर्त्तव्योमें कपटाइ करी ॥ ८ ॥ तथा नवमु लोभ ते मूर्च्छा भाव आण्यो, आशा तृष्णा वाच्छादिक करी ॥ ९ ॥ तथा दशमो राग ते मनगमती वस्तुशु स्नेह कीधाँ ॥ १० ॥ तथा अगीयारमो द्वेप ते अणगमती वस्तु देखीनें द्वेप कस्यो ॥ ११ ॥ तथा बारमु कलह ते अप्रशस्त वचन बोलीने क्लेश उपजाव्या ॥ १२॥ तथा तेरमु अभ्याख्यान ते अछता आल दीना ॥ १३ ॥ तथा चौदमु पैशून्य ते पराइ चुगली कीनी ॥१४॥ पन्नरमु परपरिवाद ते पराया अवगुणवाद बोल्या बोलाव्या अनुमोद्या ॥१५॥ सोलमु रति अरति ते पाच इन्द्रियोना त्रेवीश विषय ॥ २४० ॥ विकार छे, तेमा मनगमतीशु राग कस्यो, अणगमतीशु द्वेप कस्यो, तथा सयम तप आदिकने विषे अरति

करी कराइ अनुमोदी, तथा आरम्भादिक असंयम प्रमादमां रतिभाव कस्या कराया अनुमोद्या ॥ १६ ॥ सत्तर मुं मायामोसो पाप स्थानक सो कपट सहित जूठ बोल्या ॥ १७ ॥ अढारमुं मिथ्या दर्शन शल्य सो श्रीजिनेश्वर देवके मार्गमें शङ्का कङ्खादिक विपरीत प्ररूपणा करी कराइ अनुमोदी ॥१८॥ इत्यादिक इहां अढार पाप स्थानोंकी आलोयणा सो विस्तारें आपसें बने जिस मुजब कहनी ॥ एवं अढार पाप स्थानक सो द्रव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी जानतां अजानतां मन वचन अरु कायायें करी सेव्यां सेवराव्या अनुमोद्याँ अर्थे अनर्थे धर्मअर्थे कामवशें मोहवशें स्ववशें परवशें दीयावा राइवा एगोवा परिसागओवा सूतेवा जागरमाणेवा इन भवमें पहेलां संख्याता असंख्यायाता अनंता भवांमें भव भ्रमण करतां आज दिन तांई संवत् १९५८ के श्रावण शुदि १५ तांइ अथवा वर्तमान जो संवत महीना तिथि होवें सो कहेनी। इन बखत ताँई राग द्वेष विषय कषाय आलश प्रमादादिक पौद्गलिक प्रपञ्च पर गुण पर्यायकी विकल्प भूल करी, ज्ञानकी विराधना करी, दर्शन की विराधना करी चारित्र को विराधना करी, चारित्राचारित्र की तपकी विराधना करी शुद्ध श्रद्धा शील संतोष क्षमादिक निज स्वरुप की विराधना करी, उपसम विवेक संवर सामायिक पोसह पडिक्कमणा ध्यान मौनादि नियम व्रत पच्चक्खाण दान शील तप प्रमुखकी विराधना करी, परम कल्याणकारी इन बोलों की आराधना पालनादिक मन वचन अरु कायासें करी नहीं, करावी नहीं, अनुमोदी नहीं ॥ छही आवश्यक सम्यक् प्रकारें विधि उपयोग सहित आराध्या नहीं, पाल्या नहीं, फरस्या नहीं, विधि उपयोग रहित निरादरपणे कस्यां, परन्तु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नहीं कर्या, ज्ञानका चौद, समकित आ पाँच, बारां व्रतका साठ, कर्मादान का पन्दर, संलेषणाका पांच एवं नवाणु अतिचारमांहे तथा १२४ अतिचारमांहे तथा साधुजीका १२५ अतिचारमांहे तथा बावन अनाचारका श्रद्धानादिकमें विराधनादिक जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचारादि सेव्या सेवाया अनुमोद्या जानतां अजानताँ मन वचन का-

यार्य करी ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारम्वार मिच्छामि दुक्कडं, मैंने जीवकू अजीव सद्दह्या प्ररुप्या, अजीव कू जीव सद्दह्या प्ररुप्या, धर्मकू अधर्म अरु अधर्मकू धर्म सद्दह्या प्ररुप्या, तथा साधुजीको असाधु और असाधुकों साधु सद्दह्या प्ररुप्या, तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज महा सतियाजी की सेवा भक्ति यथाविधि मानतादिक नहीं करी, नहीं करावी, नहीं अनुमोदी, तथा असाधुवाकी सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कस्या, मुक्तिका मार्गमें संसारका मार्ग यावत् पच्चीश मिथ्यात्व माहेला मिथ्यात्व सेव्या सेवाया अनुमोद्या, मने करी, वचने करी कायाये करी, पच्चीस कषाय सम्बन्धी, पच्चीस क्रिया सम्बन्धी, तेत्रीश आशातना सबन्धी, ध्या-नका उगणीश दोप, वंदना का बत्तीस दोप, सामायिक का बत्तीश दोप, पोसह का अठारा दोप सम्बन्धो मने वचने कायाये करी जे काई पाप दोप लाग्या लगाया अनुमोद्या ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कड ॥ महामोहिनीय कर्म वन्धका तीस स्थानकको मन वचन अरु कायासें सेव्या सेवाया अनुमोद्या, शील की नव वाड आठ प्रवचन माताकी विराधनादिक तथा श्राव-कका एकवीश गुण अरु वारा व्रतकी विराधनादि मन वचन और कायासे करी करावी अनुमोदी तथा तीन अशुभ लेश्याका ल-क्षणा की अरु वोलाकी सेवना करी, अरु तीन शुभ लेश्या का लक्षणाकी अरु वोला की विराधना करी, चर्चा वार्त्ता उगेरामें श्री जिनेश्वर देवका मार्ग लोप्या गोप्या, नही मान्या, अछताकी थापना करी प्रवर्त्ताया, छताकी थापना करी नहीं, अरु अछताकी निपे-धना करी नही, छता की थापना अरु अछताकी निपेधना करने का नियम नहीं कस्या, कलूपता करी तथा छ प्रकारे ज्ञानावरणीय वन्धका वोल, ऐसे ही छ प्रकारका दर्शनावरणीय वधका वोल यावत् आठ कर्मकी अशुभ प्रकृतिवन्धका वोल पञ्चावन कारणों करी ब्यासी प्रकृति पापाकी वाधी वधाइ अनुमोदी मने करी वचने करी कायाये करी ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारवार मिच्छामि दुक्कडं ॥ एक एक वोलसे लगाकर कोडाकोडी यावत् सख्याता असख्याता अनता अनन्ता वोल ताइ में जो जाणवा योग्य वोलकों

सम्यक् प्रकारे जाण्या नहीं, सर्द्दह्या नहीं प्ररूप्या नही तथा विपरीतपणे श्रद्धानादिक करी कराइ अनुमोदी मन॰ वचन कायायें करी ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारम्वार मिच्छामि दुक्कड ॥ एक एक बोलसें यावत् अनन्ता बोलमें छांडवा योग्य बोलको छांड्या नहीं उनकों मन वचन कायायें करकें सेव्या सेवाया अनुमोद्या सो मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ एक एक बोलसें लगा कर जाव अणंता अणंता बोलमें आदरवा योग्य बोल आदस्रा नहीं, आराध्या पाल्या फरस्या नहीं, विराधना खंडनादिक करी कराइ अनुमोदी मन वचन कायायें करी ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञामें जो जो प्रमाद कस्रा, सम्यक् प्रकारें उद्यम नहीं कस्रा, नहीं करायां, नहीं अनुमोद्या, मन वचन काया करके अथवा अनाज्ञा विषे उद्यम कस्रा कराया अनुमोद्या एक अक्षरके अनंतमें भाग मात्र दूसरा कोइ स्वप्नमात्रमें भी श्री भगवंत महाराज आपकी आज्ञाशुं अधिका ओछा विपरीतपणे प्रवर्त्यो हुं ते मुजे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

॥ दोहा ॥ श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा, करी फरसना सोय। अनजाने पक्षपातमें, मिच्छा दुक्कड़ मोय ॥ १ ॥ सूत्र अर्थ जानुं नहीं, अल्पबुद्धि अनजान। जिनभाषित सब शास्त्रका, अर्थ पाठ परमान ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म सूत्रकूं, नवतत्त्वादिक जोय। अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छा दुक्कड़ मोय ॥ ३ ॥ हूं मगसेलीयो हो रह्यो, नहीं ज्ञान रस भीज। गुरु सेवा न करी शकुं, किम मुज कारज सीज ॥ ४ ॥ जाने देखे जे सुने, देवे सेवे मोय। अपराधी उन सबनको, बदला देशुं सोय ॥ ५ ॥ गवन करु वुगचारतन, दरव भाव सब कोय। लोकनमें प्रगट करूं, सूईपाई मोय ॥ ॥ जैनधर्म शुद्ध पायके, वरतुं विषय कषाय। एह अचंभा हो रह्या, जलमें लागी लाय ॥ ७ ॥ जितनी वस्तु जगतमें, नीच नीचमें नीच। सबसें में पापी बुरो,, फसुं मोहके बीच ॥ ८ ॥ एक कनक अरु कामिनी, दो महोटी तरवार। उठ्यो थो जिन भजनकूं, बिचमें लीयो मार ॥ ९ ॥

॥ सवैयो कवित्त ॥ मैं महापापी छाडके ससार छार छारहीका विहार करु आगला कुछ धोय कीच फेर कीच विच रहुं विषय सुख चाहु मन्न प्रभुता वधारी है। करत फकीरी ऐसी अमिरीको आस करु, काहेकु धिकार सिर पगडी उतारी है ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ त्याग न कर सग्रह करु, विषय वचन जिम आहार। तुलसी ए मुज पतितकू, वारंवार धिकार ॥ १ ४ ॥ राग द्वेष दो बीज है, कर्मबंध फल देत। इनकी फासी में बध्यो, छूटु नहीं अचेत ॥ १२ ॥ रतन बंध्यो गठडी विषे, भाण छिप्यो घन माहि। सिंघ पिजरामें दीयो, जोर चले कछु नाहि ॥ १३ ॥ बुरो बुरो सबको कहे, बुरो न दीसे कोय। जो घट शोधुं आपनो, तो मोसुं बुरो न कोय ॥ १४ ॥ कामी कपटी लालची, कठण लोहको दाम। तुम पारस परसगथी, सुवरन थाशु स्वाम ॥ १५ ॥

॥ श्लोक ॥ मैं जपहीन हुं तपहीन हुं, प्रभु हीन सवर समगत। हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणागत ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥ नहीं विद्या नहीं वचन वल, नहीं धीरज गुन ग्यान। तुलसीदास गरीबकी, पत राखो भगवान ॥ १७ ॥ विषय कषाय अनादिको, भरियो रोग अगाध। वैद्यराज गुरु शरनथी, पाउ चित्त समाध ॥ १८ ॥ कहेवामें आवे नहीं, अवगुण भरियो अनत। लिखवामें क्यु कर लखु, जाणो श्रीभगवत ॥ १९ ॥ आठ कर्म प्रवल करी, भमियो जीव अनादि। आठ कर्म छेदन करी, पावे मुक्ति समाधि ॥ २० ॥ पथ कुपथ कारन करी, रोग हान वृद्धि थाय। इम पुण्य पाप किरिया करी, सुख दु ख जगमें पाय ॥ २१ ॥ बाध्या विण भुक्ते नहीं, विण भुक्त्या न छुटाय। आपही करता भोगता, आपें दूर कराय ॥ २२ ॥ सुसा-यासें अविवेक हु, आप मीच अधियार। मकडी जाल बिछायके, फसु आप धिकार ॥ २३ ॥ सब भक्षि जिम अग्नि हुं, तपियो

कहा भयो घर छांड़के, तज्यो न मायासंग। नाग त्यजी। विषय कषाय। अवच्छंदा अविनीत में, धर्मी ठग दुःखदाय ॥ २४ ॥ जिम कांचली, विष नहीं तजियो अंग ॥ २५ ॥ आलस विषय कषाय वश, आरंभ परिग्रह काज। योनि चोराशी लख भम्यो, अब तारो महाराज ॥ २६ ॥ आतम निंद शुद्ध भणी, गुणवंत वंदन भाव। राग द्वेष उपशम करी, सबसें खमत खमाव ॥ २७ ॥ पुत्र कुपात्रज मैं हुओ, अवगुण भर्यो अनंत। याहित वृद्धि विचारके, माफ करो भगवंत ॥ २८ ॥ शासन पति वर्द्धमानजी, तुम लग मैरी दोड़। जैसे समुद्र जहाज विण, सूजत और न ठोर ॥ २९ ॥ भवभ्रमण संसार दुःख, ताका वार न पार। निर्लोभी सद्गुरु विना, कवण उतारे पार ॥३०॥ भवसागर संसारमें, दीपा श्रीजिनराज। उद्यम करी पोहोंचे तीरें, बेठी धरम जहाज ॥ ३१ ॥ पतित उद्धारन नाथजी, अपनो बिरुद विचार। भूल चूक सब माहरी, खमीयें वारंवार ॥३२॥ माफ करो सब माहरा-आज तलकना दोष। दीन दयाल दीयो मुजे, श्रद्धा शील संतोष ॥३३॥ देव अरिहंत गुरु निग्रंथ, संवर निर्ज्झरा धर्म। केवली भाषित सासतर, येही जैन मत मर्म ॥३४॥ इस अपार संसारमें, शरन नहीं अरु कोय। यातें तुम पद भगतही, भक्त सहायी होय ॥३५॥ छूटुं पिछला पापथी नवा न बंधु कोय। श्रीगुरुदेव प्रसाद सें, सफल मनोरथ मोय ॥३६॥ आरंभ परिग्रह त्यजी करी, समकित व्रत आराध। अंत अवसर आलोयकें, अनशन चित्त समाध ॥३७॥ तीन मनोरथ ए कह्या; जे ध्यावे नित्य मन्न। शक्ति सार वरते सही, पामे शिवसुख धन्न ॥३८॥ श्री पंचपरमेष्ठी भगवंत गुरुदेव महाराजजी आपकी आग्या है, सम्यक् ज्ञान दर्शन सम्यक् चारित्र तप संयम संवर निर्ज्झरा मुक्तिमार्ग यथाशक्तियें शुद्ध उपयोग सहित आराधनें पालनें फरसनें सेवनेकी आग्यां है, वारंवार शुभयोग संवन्धी सज्झाय ध्यानादिक अभिग्रह नियम पच्चक्खाणादिक करणे करावणेकी समिति गुप्ति प्रमुख सर्व प्रकारें आग्या है ॥

॥ दोहा ॥ निश्चय चित्त शुद्ध मुख पढत, तीन योग थिर थाय। दुर्लभ दीसे कायरा, हलुकर्मी चित्त भाय ॥१॥ अक्षर पद हीणो अधिक, भूल चूक कही होय ॥ अरिहत सिद्ध आतम साखसें, मिच्छामि दुक्कड मोय ॥२॥ भूल चूक मिच्छामि दुक्कड ॥ इति श्रावक श्रीलालाजी रणजितसिंहजी कृत बृहदालोयणा सम्पूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक लालाजी रणजितसिंहजी कृत लघु आलोयणा प्रारम्भ ॥

अनत चोवीसी जिन नमु, सिद्ध अनता कोड। विहरमान जिनवर सवे, केवली प्रत्यक्ष कोड ॥ १ ॥ गणधरादिक सर्व साधुजी, समकित व्रत गुणधार। यथा योग्य वदणा करू, जिन आज्ञा अनुसार ॥ २ ॥ मत्थयेण वदामि श्रीजिनेन्द्र भगवत देवाधिदेव अनत केवल ज्ञानी, महाराज आपके आज्ञा रूप महा परम कल्याणकारी श्रीदया धर्मादिक शुभ योगनें विषे जो जो प्रमाद कर्या कराया अनुमोद्या, मन वचन कायाए करी सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कर्या, नहीं कराया, नहीं अनुमोद्या। मन वचन कायाए करी आपके अण आज्ञारूप विषय कषाय हिंसादिक पाप, आश्रव, अशुभ योगनें विषे मैंने घणा घणा उद्यम कर्या कराया, अनुमोद्या, मन वचन काया करी एक अक्षरके अनतवें भाग मात्र स्वप्नमें भी ज्ञान दर्शन चारित्र दान शील तप भावना उपशम विवेक संवर सामायिकादिक छउ आवश्यक, पोसो, अभिग्रह नियम व्रत पच्चखाण सुमति गुप्ति समता धीरज वैराग भावरूप सज्झाय ध्यान मौनादिक निज स्वरूप मुक्ति मार्गको विराधनादिक अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार जाणता अजाणता मन वचन काया करी अविनय अभक्ति आसातना अधैर्य आदिक अविवेक पणे करी अविधि - प्रमुख घणा अशुद्ध व्यवहार कर्या कराया अनुमोद्या मन वचन काया करी वारंवार तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ दुहा ॥ देवगुरु धर्म सूत्रमें, नव तत्वादिक जोय। अधिका ओछा जो कह्या, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ १ ॥ श्रद्धा

अशुद्ध परूपणा, करी फरसना सोय। जाण अजाण पक्षपातमें, मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥ २ ॥ जो मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अठार। प्रभु आपरी साखसें, वारंवार धिक्कार ॥ ३ ॥ सूत्र अर्थ जाणु नहीं, अल्प बुद्धि अणजाण। जिन भाषित सब शास्त्रका, अर्थ पाठ परमाण ॥ ४ ॥ पतित उधारण नाथजी, अपणो बिरुद विचार। भूल चूक सब माहरी, खमीयें वारंवार ॥ ५ ॥ माफ करो सब माहरा, आज तलकना दोष। दीन दयाल देवो मुझे, श्रद्धा शील संतोष ॥ ६ ॥ निश्चल चित्त सिद्धांत रस, विघ्न रहित गुरु सेव। इह भव पर भव धर्म रुचि, रहो मुझे जिन देव ॥ ७ ॥ छुटुं पिछला पापसें, नया न बांधु कोय। श्रीगुरुदेव प्रसादसें, सफल मनोरथ होय ॥ ८ ॥

महा परम कल्याणकारी श्रीजिन शासनमें एक एक बोलसें लगायके कोड़ाकोड़ि बोल यावत् संख्याता असंख्याता अनंता अनंता बोल तांइ जो मैं जाणवा जोग बोल सम्यक् प्रकारे जाण्यां नहीं, सध्यां नहीं, परतीत्या नहीं, रूच्या नहीं, विपरीत पणे श्रद्धा परूपणा फरसणा करी करावी अनुमोदी मन वचन काया करी तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं। इति एक एक बोलसें जाव असंख्याता अनंता बोल तांइ जो मैं आदरवा जोग बोल आदीर्या नहीं, आराध्या नहीं, पाल्या नहीं, फरस्या नहीं, विराधनादिक करी करावी अनुमोदी मन बचन काया करी तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं।

॥ दुहा ॥ कहवामें आवे नहीं, अवगुण भर्या अनंत। लिखवामें क्युं कर लिखुं, जाणे श्रीभगवंत ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सर्व साधुजी, जिन आज्ञा धर्म सार। मंगलीक उतम सदा, निश्चैय सरणा च्यार ॥ २ ॥ इति लघु आलोयणा समाप्तम् ॥

श्री अगरचन्द जी भैरोदान सेठिया जैनग्रन्थालय बीकानेर (राजपताना)

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

* श्री वीतरागाय नम *

॥ अथ साधुके आहारका १०६ दोष ॥

(साधुको अकल्पनीक)

अथ उद्गमका १६ दोष—(दातारसु लागे)

मूल गाथा-आहाकम्मुद्देसिय पूईकम्मे य मीसजाए य। ठवणा पाहुडियाए पाओअर कीय पामिच्चे।१।
परियट्टिए अभिहडे उब्भिन्ने मालोहडे इय। अच्छिज्जे अणिसिट्ठे अज्झोयरए य सोलसमे।२।

१ आहाकम्मे (आधाकर्मी)—साधुके निमित्त बनावे ते दोष। २ उद्देसियं (औद्देशिकं)—
जिस साधुके लिये आधाकर्मी आहार बनाया है वही साधु ले तो उसको आधाकर्मी दोष लगे। और दूसरा साधु ले तो उद्देसिय
दोष लगे। ३ पूईकम्मे (पूतिकर्म)—सूजता आहार माहि अधाकर्मीका अ शमात्र भी मिलजाय 'हजार घरके आतरे
भी आधाकर्मी आहारका अ शमात्र मिल जाय' ते दोष। ४ मीसजाए (मिश्रजाते)—आपरे वास्ते और साधुरे वास्ते भेला
राधे ते दोष। ५ ठवणा (स्थापना)—साधु निमित्त असनादि आहार स्थापकर रखे,दूसरे को न दे ते दोष।६ प्राहुडियाए
(प्राभृतिका)—साधु अर्थे पावणा (महमान) आघा पाछा करे ते दोष। ७ पाओअर (प्रादुष्करण)—अ धारा

मांहि प्रकाश करके देवे ते दोष। ८ कीय (क्रीत)—साधु निमित्त आहार वस्त्र और पात्र आदि मोल लाकर तथा उपाश्रय वेचाता लेकर देवे ते दोष। ९ पामिच्चे (अपमित्य)—साधु निमित्त आहारादि उधार लाकर देवे ते दोष। १० परियट्टिए परिवर्त्तितं)—साधु निमित्त अपनी वस्तु देकर बदलेमें दूसरी वस्तु लाकर देवे ते दोष। ११ अभिहडे (अभिहृतं)—सामा जाकर आहारादि देवे ते दोष। १२ उब्भिन्ने (उद्भिन्नं)—लेपनादिक (छांदा) खोलकर देवे ते दोष। १३—मालोहडे (मालापहृतं)—पीढो नीसरणी लगा कर ऊंचे नीचे तीरच्छे से वस्तु नीकाल कर देवे ते दोष। १४ अच्छिज्जे (आच्छेद्यं)—निरवलसे सबल जबरजस्ती दिलवावे या खोस कर देवे ते दोष। १५ अणिसिट्ठे (अनिसृष्टं)—दो के सीरकी वस्तु एक दूसरेको विना मरजी देवे ते दोष। १६ अज्झोयरए (अध्यवपूरक)—अगाड़ी आंधण मांहि साधु आया जाण अधिक ऊर देवे ते दोष। ॥ इति उद्गमका १६ दोष ॥

॥ अथ उत्पाद का १६ दोष—(जीभ्यारे लोलुपीपणासे साधु लगावे) ॥

मूलगाथा-धाई[१] दूई[२] निमित्ते[३] आजीव[४] वणीमगे[५] तिगिच्छा[६] य। कोहे[७] माणे[८] माया[९] लोभे[१०] य हवंति दस एए।३

पुव्विं-पच्छा-संथव[११] विज्जा[१२] मंते[१३] य चूण्ण[१४] जोगे[१५] य। उप्पायणाइ दोसा सोलसमे मूलकम्मे[१६] य ॥४॥

१ धाई (धात्री)—धायरो काम करके आहारादि लेवे ते दोष ।२ दूई (दूती)—दूतपना याने गृहस्थीका सन्देशा पहुंचा कर आहारादि लेवे ते दोष। ३ निमित्ते (निमित्त)—भूत भविष्य वर्त्तमान कालके लाभालाभ सुखदु ख जीवित मरणादि बतलो कर आहारादि लेवे ते दोष। ४ आजीव (आजीविका)—अपना जाति कुल आदि प्रकाश कर आहारादि लेवे ते दोष। ५ वणीमगे (वनीपकः)—राक भीखारी की तरह दीनपनासे मागकर आहारादि लेवे ते दोष। ६ तिगिच्छे (चिकित्सा)—वैद्य की करके आहारादि लेवे ते दोष। ७ कोहे (क्रोध)—क्रोध करके आहारादि लेवे ते दोष। ८ माणे (मान)—अहंकार करके लेवे ते दोष। ९ माया (माया)—कपटाई करके लेवे ते दोष १० लोभे (लोभ)—लोभ करके अधिक आहारादि लेवे, अथवा लोभ बतला कर लेवे ते दोष। ११ पुव्विपच्छासंथव (पूर्व पश्चात् संस्तव)—पहले या पिछे दातार की प्रशंसा करके आहारादि लेवे ते दोष। १२ विज्जा (विद्या)—जिसकी अधिष्ठाता देवी हो अथवा जो साधनासे सिद्ध की गई हो उसको विद्या कहते हैं, ऐसी विद्या का प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोष। १३ मंते (मंत्र)—जिसका अधिष्ठाता देव हो अथवा बिना साधनाके अक्षर विन्यास मात्र हो उनको मंत्र कहते है, ऐसा मंत्रका प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोष। १४ चुण्ण (चूर्ण)—एक वस्तुके साथ दूसरी वस्तु मिलानेसे अनेक तरहकी सिद्धि हो ऐसा अदृष्ट अंजनादिके प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोष। १५ जोगे (योग)—पाद (पग) लेपनादि सिद्धि बतला कर आहारादि लेवे ते दोष। १६ मूलकम्मे (मूलकर्म)—गर्भपातादि औषध बतला कर आहारादि लेवे ते दोष ॥ इति उत्पातरा १६ दोष ॥

॥ अथ एषणारा १० दोष—(गृहस्थी तथा साधु दोनों से लागे)

मूलगाथा—संकिय[१] मक्खिय[२] निक्खित्त[३] पिहिय[४] साहरिय[५] दायग[६]ुम्मीसे[७] ।
अपरिणाय[८] लित्त[९] छड्डिय[१०] एसणदोसा दस हवंति ॥ ५ ॥

१ संकिय (शङ्कित)—गृहस्थी को तथा साधु को शङ्का पड़ जाने बाद आहारादि लेवे ते दोष। २ मक्खिय (म्रक्षित)—सचित पाणी आदिसे हाथ की रेखा या वाल भींजे हो उसके हाथसे आहारादि लेवे ते दोष। ३ निक्खित्त (निक्षिप्त)—असूजति वस्तु उपर सूजति वस्तु पड़ी हो ते लेवे ते दोष। ४ पिहिय (पिहित)—सूजति वस्तु सचित्तसे ढांकी हो ते लेवे ते दोष। ५ साहरिय (संहृत)—अजोग वस्तु जिस वासणमें पड़ी हो वह वस्तु दूसरे वासणमें घालकर उसी वासणसे जो योग्य आहार देवे ते लेवे ते दोष। या जहां पश्चात् कर्म होनेकी संभावना हो ऐसे घरमें एक भाजनसे दूसरे भाजनमें आहारादि घाल कर दे उसमें पिछैसे सचित्त पाणीसे धोनेकी शंका होने पर उसी भाजनसे आहारादि लेवे ते 'दोष। ६ दायग (दायक)—अंधा लूला लंगड़ा आदि अजयणा करता वहरावे उससे लेवे ते दोष। ७ उम्मीसे (उन्मिश्र)—मिश्र चीज लेवे ते दोप। ८ अपरिणाय (अपरिणत)—शस्त्र पूरा परगम्या विना थोड़े समयरी लेवे ते दोष। ९ लित्त (लिप्त) तुरतकी जगह लीपी हुई हो उसको उल्लंघ कर आहारादि लेवे ते दोष। १० छड्डिय (छर्दित)—असनादि छांटा पड़ता लेवे ते दोष। ॥ इति एषणारा १० दोष ॥

॥ अथ ५ दोष आवश्यकरा ॥

१ उघाड किवाड उग्घाडणाए—चू चू करतो कवाड ठेलीने उघाड कर तथा उघडाय कर आहारादि ले ते दोष। २ मंडीपाहुडिआए—शेष निकाला हुवा लेवे ते दोष। ३ बलिपाहुडिआए—उच्छालनेके अर्थे किया हुआ बलराकुला उछाल्या पहेला लेवे ते दोष। उच्छालने बाद गृहस्थी भोगवे वह लेना न अटके। ४ अदिट्ठपाहुडिआए—अणदिठे वासण का आहारादि लेवे ते दोष। ५ परिट्ठावणिआए—नरस आहार को परठावने की इच्छा कर सरस आहारादि लेवे ते दोष।

॥ अथ २ दोष उत्तराध्ययनरा ॥

१ सेणीएपिंड—अपने पूर्व सज्जनादि (नातिला गोतिला) से ही लाया हुआ आहार करे ते दोष। २ अकारण (मकारण)—विना कारण चीज माग कर लावे ते दोष।

॥ अथ २३ दोष दशवैकालिकरा ॥

१ दाणट्ठा—ग्रहगोचरादिके निमित्ते डाकोत वगैरहके वास्ते किया हुआ आहारादि वह जिम्या पहेला लेवे ते दोष, उसके जीमने बाद बचा हुआ गृहस्थी जीमे तो वह लेने में अटके नहीं। २ पुण्णट्ठा—पुन्य के अर्थे किया हुआ। जैसे—

दुकानमें धर्मादा नीकाला हुआ धनका तथा मुआरे लारे पुन्यका किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष। ३ **समणट्ठा**—बावा योगी सन्यासी के अर्थे किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष। उसको जीमने बाद गृहस्थी जीमे तो वह लेनाअटके नहीं। ४ **वणीमग्गट्ठा**—रांक भीखारी के वास्ते किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष। उसको जीमने बाद गृहस्थी जीमे तो वह लेना अटके नहीं। ५. **निआगपिंड**—नित्यप्रति एक ही घरका आहारादि लेवे ते दोष।६ **सज्झायरपिंड**—शय्यातर याने जिसकी आज्ञासे मकानमें ठहरा हो उसके घरका आहार लेवे ते दोष। ७ **रायपिंड**—राजपिंड जैसे राजा रे थाल रो, राजारे वीवाहरो मदिरामिश्रित आहार लेवे ते दोष। ८ **किमिच्छिए**—१ दानशाला का आहारादि लेवे ते दोष। २ कोई कोई इसी तरह भी कहते है कि बताय बताय नामसे मांग मांग लेवे ते दोष। ६ **संघट्टिए**—सचित्तके संघट्टैरो आहारादि लेवे ते दोष।

१० **बहुउझ्झाए**—थोड़ा खानेमें आवे और ज्यादा नांखनेमें आवे ऐसो आहार लेवे ते दोष। ११ **पडिकुटं कुलग**—धोबी आदि निषेध कुलरो तथा चोर रे घरको आहारादि लेवे तो दोष। १२ **मम्मगं**— वर्ज्या हुआ घर रो आहारादि लेवे ते दोष। जैसे— कोई कहे म्हारे घेर मत आयजो उसको वर्ज्या घर कहते है। १३ **अचियत कुलगं**—गणिका आदि अप्रीतकारी कुलरो आहार लेवे ते दोष। १४ **पुव्वकम्मे पच्छाकम्मे**—पहेला दोष लगावे तथा पिछै दोष लगावे जैसे—आहार वहेराया पहेला साधु आया जानकर आधा पाछा कर दे, तथा वहेराया पिछै फिर बनाई ले, या काचे पानी सुं ठाम या हाथ धो लेवे ते दोष। १५ **सुईगचे** (**सुरंच**)—मदिरा आदि नशे रो आहारादि लेवे ते दोष। १६ **एलगं**—बकरो घर

आगल बेठो होवे ते उल घकर आहारादि लेवे ते दोष। १७ दारगं—जिस द्वार पर लडका या लडकी आडी बैठी हो उसको उल घकर आहारादि लेवे ते दोष। १८ साणग—जिस द्वार पर स्वान (कुत्ता) बैठा हो उसको उल घ कर आहारादि लेवे ते दोष। १९ वच्छगं—जिस द्वार पर गायको वाछडो बैठो हो उसको उल घकर आहारादि लेवे ते दोष। २० उल घीअन-पवेसे—और भी ऐसा कोई वछडा बैठा हो उसको उल घ कर आहारादि लेवे ते दोष। २० अगाईता चलाईता—आगो पाछो करे जैसे—काचा पाणीको लोटो हाथमें है साधु साध्वी आया देख जावतो पाछो फिर जाय, या कोई सचित्त वस्तु हाथ में है साधु आया देख रख दे, तथा पहले घरमें जाकर वर्त्तन आगा पाछा करदे वह आहारादि लेवे ते दोष। २१ गोवणी काल मासणी—गर्भवती स्त्री सात मास पीछे उठ बैठ कर आहारादि दे वह लेवे ते दोष। २२ थाणं पेजमाणी—बालक चूघ रहा है उस वखत चूघते को छोडा कर आहार वहेरावे वह लेवे ते दोष। २३ नीयं दवारतामसं—कोठी ओवरी भणारी जो नीचो बारणो भीतर अंधेरो पडतो होय ऐसी जगहरो आहार लेवे ते दोष।

॥ ६ दोष आचारांग सूत्र का ॥

१ निए पिंड—नित्य आहार बाटने मारु त्याग करे, मापसे तोलसे बाटे वह आहार लेवे ते दोष। २ सखंडियं (संखडी)—न्यात जीमणवार शहेर भारणी आदिक में आहारादि लेवे ते दोष। ३ वागायं—जाच करे अन्तराय देकर आहारादि ले ते दोष।४ सघारवेणी—गमता कथा वार्त्ता मे रिझाय कर आहारादि लेवे ते दोष। ५ फमेभवा (वीएजवा)—फूक

देकर या पंखी सुं ठार कर आहार देवे वह लेवे ते दोष। ६ **भुमालुहडं**—नीचे भोंयरे से या नीची जगह से काढकर आहारादि देवे वह लेवे ते दोष।

॥ अथ २ दोष ठाणांगसूत्र तथा आचारांगसूत्र का ॥

१ **पावणीए**– पावणारे अर्थं किया हुआ आहार पावणा जीम्यां पहेला लेवे ते दोष। २ **मंसारे**—अभक्ष्य मास आदि लेवे ते दोष।

॥ अथ १२ दोष भगवती सूत्र का ॥

१ **अङ्गारेअ**—सराई सराई राग सहित आहार करे ते दोष। उसका चारित्र कोयले समान कह्यां। २ **धूमे**—मस्तक (माथा) धूणी धूणी कुसराई कुसराई द्वेष सहित आहारादि करे ते दोष। उसका चारित्र धूंवा समान कह्यां। ३ **संजोअणा**—स्वाद नपजाने के लिये संयोग मिलाकर आहारादि लावे ते दोष। ४ **खेताइकंते**—जो क्षेत्र में रहे वहां सूर्योदयसे पहेले और सूर्यास्त के पिछे आहारादि लेवें ते दोष। ५ **कालाइकंते**—पहेले पहोररो लायो आहारादि चोथे पहोरमें भोगवे ते दोष। ६ **मगाइकंते**—दो कोश उपरांत असनादि लेजाकर भोगवे ते दोष। ७ **पमणाइकंते**—प्रमाणसुं अधिक आहार लेवे ते दोष। ८ **आउए**—गृहस्थी के आमंत्रण से उसके घर जाकर आहारादि लेवे ते दोष। ९ **कंतारभत्त**—अटवी (जंगल) में पो दानशाला वगैरह हो वहां आहारादि वंटताहो वह लेवे ते दोष। १० **दुभिक्खभत्त**—दुष्काल में दानशाला रांक भीखारीरे

लिये गोली हो उसका आहारादि लेवे ते दोष। ११ **वदलीया भत्त**—वरसाद आया कोई दातार भीखारी कोई जगह आहार थांदनो होय वह लेवे ते दोष। १२ **गिलाण भत्त** —रोगी ग्लानीके लिये किया हुआ आहारादि उसको जीम्या पहेल लेवे ते दोष।

॥ अथ ५ दोष प्रश्न व्याकरण सूत्र का ॥

१ **रहगं**—चूरमारो त्याग है और लाडु बाधकर वहेरावे वह लेवे तो दोष। २ **पजुजायं**—दहिं'रा त्याग है और दहि री राई-तो बनाकर याने पर्याय बदला कर देवे वह लेवे ते दोष। ३ **सहयागय**—साधु आपरे हाथ सुं औषध पाणी अलावे आहारादि लेवे ते दोष। ४ **अनुत्तरवाह समणट्ठा (अन्तोवाहच)**—भीतरसु तीन बारणा उपरात काढकर देवे वह लेवे ते दोष। ५ **मोहरच** —चारन भाटरी तरह विरदावली करके आहार लेवे ते दोष।

॥ अथ निसीथ सूत्रमें आहार के ५ दोष ॥

१ **उगासिय**—बहुत से मनुष्यों में से पुकार करके कहे कि " कोई यहा दातार है " ऐसा कह कर आहारादि लेवे ते दोष। **अडवी भत्त**—अटवी में मजुरादिकरो भातेरो आहारादि मजुर जीम्या पहेला लेवे ते दोष। ३ **अन्नरथीया भत्त** -अन्य तीर्थी रोटी टुकडा माग कर लावे वह आहारादि लेवे ते दोष। ४ **पासंठा भत्त (पासत्थिएणं)**—ढिलापा सत्या शीथला-

चारी (क्रिया रहीत) का आहारादि लेवे ते दोष। ५ दुगंच्छियं कुलं—ढेढ, चुडो. चमार आदि निंदनीक कुल, जिस कुल में जाने से दुगंछा करे उसका आहारादि लेवे ते दोष। सज्झाए निसोए सागारियं (निसीहीआए)—सज्यात-रो नेसरायरो तथा दलालीरो आहारादि लेवे ते दोष।

॥ अथ दशा श्रुतस्कंधमें आहार के २ दोष ॥

१ बालट्ठा—बालकरे अर्थे किया हुआ आहार बालक जीम्या पहेलो लेवे ते दोष। २ गब्भणी अट्ठा—गर्भिणी ओरो अर्थे किया आहारादि गर्भवती स्त्री जिम्या पहेले आहारादि लेवे ते दोष।

॥ बृहत्कल्पमें आहारके १ दोष ॥

१ प्रासिया—कालप्रमाण उपरको तथा वासी राखने खावे ते दोष।

॥ इति आहार के १०६ दोष समाप्तम् ॥

ओछो अधिको आगो पाछो सूत्र विपरित लीखा गयो होय तो सुद्ध करे और सज्जन हमको जणाव है।

भूल चूक तस्स मिछामि दुक्कडं ॥

संवत् १९७९ वर्षे फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे सप्तमी बुधवासरे ॥ शुभं भवतु ॥

श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय। बीकानेर (राजपूताना)



साधुके ५२ अनाचार-सूत्र श्री दशवैकालिक अध्ययन तीजामें

१ आधाकर्मी वस्त्र, पात्र मकान और आहारादिक साधुके निमित्त वनाया हुवा भोगवे ते अनाचार। २ साधुके लिये मोल लाया हुवा भोगवे ते अनाचार। ३ नित्य प्रति एक घरका आहारादि भोगवे ते अनाचार। ४ सामने लाया हुवा आहारादिक भोगवे ते या दूजे गामसे मंगाय दे ते अनाचार। ५ रात्री भोजन करे ते अनाचार। ६ स्नान करे ते अनाचार। ७ गन्ध तेल फुलेल कपुरादिककी सुगन्ध लेवे ते अनाचार। ८ पुष्प मालादि पहिरे ते अनाचार। ९ पखादिसे हवा लेवे ते अनाचार। १० स्निग्ध आहार पाणी घृत गुडादिक वासी रखे ते अनाचार। ११ गृहस्थीके भाजन (वरतन) में जीमे ते अनाचार। १२ राजपिण्ड आहार भोगवे ते अनाचार। १३ किमिच्छक सत्रूकार (दानशाला) रो आहारादिक भोगवे ते अनाचार। १४ मर्दन करे ते अनाचार। १५ दांत पखाले, मुख धोवे ते अनाचार। १६ गृहस्थी को सुख सारा पूछे ते अनाचार। १७ काच प्रमुखमे मुख देखे ते अनाचार। १८ जुवा रमे ते अनाचार। १९ चोपट पासा सतरजादि खेले ते अनाचार। २० छत्र माथे उपर धारण करे ते अनाचार। २१ दवा औषध तथा वैद्य गी करे ते अनाचार। २२ पगरखी मौजा आदि पहरे ते अनाचार। २३ अग्नि को आरंभ समारंभ करे ते अनाचार। २४ सज्झातर के घर का पिंड (असणादिक) भोगवे ते अनाचार। २५ गृहस्थीके गादी तकिया आदि आसण पर बैठे ते अनाचार। २६ गृहस्थीके माचे, पलंग, ढोलीये पर वैठे ते अनाचार। २७ गृहस्थीके घरे बिमार, तपशी, अशक्ति, यह तीन कारण विना बैठे ते अनाचार। २८ शरीरके पीठी, मालिस वगैरह करे ते अनाचार। २९ गृहस्थीसे वैयावच करावे तथा गृहस्थीकी वैयावच करे ते अनाचार। ३० जाति कुल बताय के आजीविका करे ते अनाचार। ३१ मिश्र पाणी (अध कच्चो पाणी) भोगवे ते अनाचार। ३२ रोग पीडा आया गृहस्थी रो देवता रो शरणो वछे ते अनाचार। ३३ मूलो, आदो काचो भोगवे ते अनाचार। ३४ सेलडी सांठा प्रमुख भोगवे ते अनाचार। ३५ कद बजकद सूरण कदादिक भोगवे ते अनाचार। ३६ मूल वृक्षादिक भोगवे ते

अनाचार। ३७ फल अनार नीम्बु आदि भोगवे ते अनाचार। ३८ वीज तिलादि भोगवे ते अनाचार। ३९ सचित सेंचल लूण भोगवे ते अनाचार। ४० सिन्धो लूण भोगवे ते अनाचार। ४१ खारी लूण भोगवे ते अनाचार। ४२ रोम लूण (रोमक क्षार) भोगवे ते अनाचार। ४३ सामुद्रका लूण कांचा भोगवे तो अनाचार। ४४ काला लूण पर्वतका काचा भोगवे ते अनाचार ४५ कपड़ोंके धूप खेवे ते अनाचार। ४६ वमन (उलटी) करे ते अनाचार। ४७ गला हेठला केश लेवे ते अनाचार। ४८ विरेचन (जुलाव) लेवे ते अनाचार। ४९ आंखमें अञ्जन लगावे ते अनाचार। ५० दांत ओष्ठ (होठ) रंगे मीसी लगावे ते अनाचार। ५१ शरीरके तैलादि मालिस करे ते अनाचार। ५२ शरीरकी शुश्रूषा विभूषा करे ते अनाचार

नोटः—२५ वो २६ वो अनाचार कोई भेला वी कहे छै, ३३ वो अनाचार काचे मूलेरो तथा आदेरो कोई अलग अलग कहे छै।

७० गुण करणसित्तरीके

गाथा—पिण्डविसोही सुमइ भावणा पढिमा य इंदिय निरोहो। पडिलेहणा गुत्तिओ अभिग्गह चैवकरणं तु ॥ १ ॥

पिण्डविशुद्धिके ४ भेद—१ आहार पाणी सुखड़ी सोपारी आदि फासुक निर्जीव विधियुक्त लेवे। २ वस्त्र सूत या ऊनके सफेद रङ्गके कपड़े मानोपेत (साधुको ७२ हाथ और साध्वीको ९६ हाथ) निर्दोष ग्रहण करे। ३ काष्ठ तुम्बे प्रमुखका पात्र यथाविधि लेवे ४ अठारे प्रकारके निर्दोष स्थानक मालिककी आज्ञासे लेवे यह चार शुद्धि साचवे।

पांच सुमति युक्त सदा रहे। १२ भावना भावे। १२ पडिमा धारे। ५ इन्द्रिय वसमें करे। २५ पडिलेहणा। ३ गुप्ति। ४ अभिग्रह—द्रव्य क्षेत्र काल भाव। यह सब मिलकर ७० गुण करणसित्तरी के हुए।

७० गुण चरण सित्तरीके

गाथा—वयसमण धम्म संयम वेयावच्चं च वंभ गुत्तिओ। नाणाइ नीयंतव कोहोनिग्गहाइं चरणमेयं ॥ २ ॥

५ महाव्रत। १० प्रकार का साधु धर्म। १७ प्रकारका संयम। १० वैयावच्च करे। ९ वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य पाले। ३ ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयी आराधे। १२ भेदे तप करे। ४ कषाय निग्रह करे। यह सब मिलकर ७० गुण चरण सित्तरीके हुए।

पांच व्यवहार श्री भगवती सूत्रमें कहे सो लिखते हैं।

पञ्च व्यवहार पण्णत्ता तंजहा—आगमो सूय आणा धारणा जीए।

१ पहेलो आगम व्यवहार—श्रीतीर्थंकर केवल ज्ञानी चौदह पूर्व ज्ञानके धारक यावत् दश पूर्वधारी प्रवर्तते हो उनकी आज्ञामें प्रवर्ते सो आगम व्यवहार। २ दूजो सूत्र व्यवहार—आचारांगादिक सूत्रोंमें कहे मुजब प्रवर्ते सो सूत्र व्यवहार। ३ तीजो आणा व्यवहार—जिस वक्त जो आचार्य प्रवर्तते हो उनकी आज्ञा में प्रवर्तते सो आणा व्यवहार, । ४ चोथो धारण व्यवहार—पूर्व परंपरासे चला आया आचार गोचारादिकमें प्रवर्ते तथा गुरु आदिकसे धारणाकर रखो हो उस मुजब प्रायश्चित देवे सो धारणा व्यवहार। ५ पाचमो जीत व्यवहार—द्रव्य क्षेत्र काल भावमें फरक पडा देख, या संघयणादिक की हीणता देख आचार्य और चतुर्विध संघ मिलकर जो निर्वद्य मर्यादा बांधे उस मुजब प्रवर्ते सो जीत व्यवहार। इन पांच प्रकारके व्यवहार मुजब प्रवर्त्तता हुआ साधु भगवंतकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करता है।

३४ असज्झायके नाम—

१ उक्कावाय—तारा टुटें तो एक पोहर असज्झाय। २ दिशादाहा—फजर और शामको दिशा लाल रंगकी रहे वहां तककी असज्झाय। ३ गजिया—गर्जना होवे तो एक पोहर असज्झाय। ४ विज्जुए—विजली होनेसे दोय पोहर (प्रहर) असज्झाय, परन्तु गाज और विजलीकी आर्द्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक असज्झाय न गिणना और सदा गिणना।

५ निग्घाए--कड़केतो जघन्य आठ, उत्कृष्ट बारह प्रहर की असज्भाय। ६ जुवे—चालचंद्र शुक्ल पक्षकी पडिवा द्वितीया तृतीया ए तीन रातमें चन्द्रमा रहे वहां तकको असज्भाय। कोई एक प्रहरकी भी कहते हैं। ७ जरकाले—आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिकके चिन्ह दिखे वहां तक असज्भाय। ८ धुम्मीए—काली धूंवर पड़े वहां तक असज्भाय। ६ महिये-श्वेत धूंवर (मेगरवा) पड़े वहां तक असज्भाय। १० उग्घाए-आकाशमें धूलका गोटा (दोटा) चढ़ा हुवा दिखे वहां तक असज्भाय। १२ सोणी—रक्त (लोही) दृष्टिमें आवे वहां तक असज्भाय। १३ अत्थी-अस्थी (हड्डी) दृष्टिमें आवे वहां तक असज्भाय। १४ उच्चार—विष्टा दृष्टिमें आवे वहां तक असज्भाय। १५ समसाण—श्मशानके चारो तरफ सो सो हाथ असज्भाय। १६ रायमरणे—राजाके मृत्यु बाद दूसरा राजा बैठे वहां तक या हड़ताल रहै वहां तक असज्भाय। १७ रायवुगय—राजाओंका युद्ध होवे वहां तक असज्भाय। १८ चन्दवरागे—चन्द्रग्रहण होय तो जघन्य ६ उत्कृष्टो १२ प्रहर, खग्रास होनेसे १६ प्रहर, थोड़ा ग्रहण होनेसे कमी काल असज्भाव समझना। १६ सुरोवरागे—सूर्य्यग्रहण होय तो १२ प्रहर, असज्भाय। २० उवसंतो—पचेंद्रियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारो तरफ सो सो हाथ असज्भाय। २१ आश्विन सुदि पूर्णिमा असज्भाय। २२ कार्त्तिक वदि प्रतिपदा असज्भाय। २३ कार्तिक सुदि पूर्णिमा असज्भाय। २४ मृगशीर्ष वदि प्रतिपदा असज्भाय। २५ चैत्र सुदी पूर्णिमा असज्भाय। २६ वैसाख वदी प्रतिपदा असज्भाय। २७ आषाढ़ सुदी पूर्णिमा असज्भाय। २८ श्रावण वदि प्रतिपदा असज्भाय। २६ भाद्र सुदि पूर्णीमा असज्भाय। ३० आश्विन वदि प्रतिपदा असज्भाय। ये दश दिन और रात संपूर्ण असज्भाय पालना। ३१ प्रभात, ३२ दो प्रहर (मध्यान), ३३ शाम, ३४ मध्य रात्री, ये ४ वक्त शेषकी (छेहली) ३१-३२-३३-३४ वी, एकेक मुहूर्त्त असज्भाय ये ३४ असज्भाय टालकर सूत्र भणना।

॥ शुभं भवतु ॥ ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर (राजपूताना)

अथ समाधि मरण वालों की २८ भावना लिख्यते।

१ अहो! देखिए इस पुद्गल पर्यायका स्वरूप कैसा विचित्र है, अनंत पुद्गल परमाणुओं इकट्ठा होकर यह शरीर बना है, और देखते ही देखते निरालाने लगा, देखिये यह कैसी विचित्रता है। २ अहो! जिनेन्द्र प्रभु आपके वचन सत्य है कि अध्रुव अशास्वति, यह शरीर अध्रुव (अस्थिर) अशास्वता है (अनित्य है) सो इतने दिन इसकी पर्याय का पलटा होता था, उसका पूर्ण पणे ज्ञान मैं नहीं रखता था, अब इस देहकी यह रचना देख आपके वाक्योंका पूर्ण विश्वास हुवा। ३ जैसे अनेक मनुष्योंके मिलनेसे मेला (बाजार) होता है, और बहुत दिन रहकर बिखर (चला) जाता है, तब वो सून्यारण्य हो जाता है तैसेही यह संसार रूप मेला अथवा इस शरीर रूप मेला अनेक परमाणुओंके संयोगसे हुवा और बिखरने लगा, इसमें मेरा क्या नुकसान। कारण मैं कुछ इस पुद्गलमय नहीं हूं, मैं तो (चैतन्य) इस तमाशेका देखने वाला तमाशगीर हूं। ४ इस जगतमें सर्व पदार्थ अपने २ स्वभावसें मिलते हैं, इसका कर्त्ता हर्त्ता कोई नहीं है, इस लिये यह शरीर मेरे रखनेसे रहे नहीं, और बिखारनेसे बिखरे नहीं, तब मैं इसका वियोग होते क्यों चिन्ता करू जो होना होगा सो होगा। ५ मैं (चेतन्य) एक ज्ञायक स्वभाव मय, उसीका कर्त्ता, भोगता और अनुभवता हूं, सो ज्ञायकका स्वभाव अविनाशी है, उसका किसी भी तरह नाश नहीं होता है। शरीर

रहा तो क्या और गया तो क्या, रहते और जाते मेरा स्वभाव तो एकसा ही है और एकसा ही रहेगा, फिर शरीरके विनाशसे चिन्ताका क्या कारण। ६. हे जिनेन्द्र ! इतने दिन मैं जानता था कि यह शरीर मेरा है, परन्तु अब मुझे सत्य भान हुवा कि यह शरीर किसीका न हुवा और न होगा, जो मेरा होता तो मेरे हुक्ममें क्यों नहीं चलता ! यह प्रत्यक्ष रोग, जरा और मृत्यु अवस्था को क्यों प्राप्त होता है। ७. अरे भोले जीव ! इस शरीरको माता पिता पुत्र बनावे, भाई भगनी भ्रात बनावे, पुत्र पुत्री तात बनावे, स्त्री और भर्त्तार बनावे, तु' तेरा जाणे, यह एक शरीर इतनेका कसे होवे ? जो होवे तो कोई इसका विनाश होते रख लेवे, इस लिये शरीर और कुटुम्ब कोई भी तेरा नहीं है, तु' सर्वसे भिन्न चिदात्मक पदार्थ है। ८. यह सम्पत तो जैसे इन्द्र जालकी माया, बद्दलकी छाया, स्वप्न राज, दुर्जन काज, जैसा क्षण भंगुर है, तु' क्युं मोह धरता (करता) है। ६. इतना तो जरूर ही जानो कि जो जीवता है सो मरता है नहीं, और मरता है सो जीवता नहीं है, अर्थात् जीव अमर है और काया मरने वाली है, तो शोच करना नहीं, क्यों ? कारण काल तो शरीर पैदा हुवा, वहांसे ही भक्षण कर रहा था, और मैं तो अनादिसे ऐसाही हू' ऐसाही रहूंगा, मेरेको मरणा त्रिकालमें प्राप्त होवे ही नहीं। १०. मैं आकाशवत् हूं अग्निका, पाणी का, वस्त्रका, इत्यादि मृत्यु देने वाले कोई भी पदार्थोंका मेरे ऊपर किंचित् ही जोर नहीं चलनेका, मैं पकड़ा जाऊं नहीं, कोईसे नाश पावुं नहीं, परन्तु आकाशमें और मेरेमें इतना फर्क हैं कि वे तो अचेतन अमूर्ति है और मैं सचेतन अमूर्ति हू', इस लिये आकाशसे ज्यादा सत्तावंत हू'। ११. जैसे किसी श्रीमंतके पुत्रके दोनुं खीशामें मेवा भरा है, वो जिधर हाथ डाले, उधर मेवाही हाथ लागे, तैसे मेरे दोनु' हाथमें लड्डू हैं, अर्थात् जीता हू' तो व्रत नियम तप संजमादि शुभ उपयोगकी आराधना करता हूं और मर गया तो स्वर्ग मोक्ष सुखका भोगता होऊंगा, विदेह क्षेत्रमें विहरमान तीर्थंकरके केवली भगवानके मुनि

महाराजके महासतीयोंके दर्शन करूगा, देशना सुणुगा, प्रश्नोत्तर कर नि संशय होउ गा, तत्ववेत्ता होकर राग द्वेषके क्षय करने समर्थ होउ गा, फिर मनुष्य जन्मको प्राप्त होकर दीक्षा ग्रहण कर, दुष्कर तप कर, घनघाती कर्मका नाश कर, केवल ज्ञान प्राप्त कर अक्षय सुख पाउ गा। १२ जैसे किसीके पहले रहनेका घर जूना पुराना पड़ने जैसा होता है, तब वह रहनेको बहुत द्रव्य खरच कर दूसरा मकान बनाता है और तैयार होने पर तुरत अति हर्ष और उत्सवके साथ उसमें प्रवेश करता है, तैसे ही हे जीव ! तेरी यह नरदेही आधि (चिंता) व्याधि (रोग) उपाधि (दु ख) करके गलगई, शिथिल पड गई, जरा और कालने तेरी सत्ता हर ली और तेने पहली धर्म्म क्रिया करी हैं, इस लिये तुझे अवश्य देवादिक उत्तम गतिमें महा दिव्य मनोहर इच्छित रूप बनाने वाली, निर्विघ्न सुख देने वाली, वैक्रिय देही (शरीर) प्राप्त होगी, तो अब इस अस्थि, मास, रक्त, केस, आदि मलीन पदार्थो से भरी हुई क्षणभगुर निकम्मि देह पर क्यों ममत्व करता है ? झूपडी छुटीके महल मिला। १३ जैसे कोई वैश्य (वाणिया) शीत, ताप, क्षुधा, तृषा अनेक दु ख सहन कर माल का सग्रह करता है और भाव आनेकी राह देखता है कि तेजी होय तो माल बेचकर नफा करू और जब भाव आता है तब अति कष्टसे संग्रह किये माल पर किंचित् ममत्व नहीं करता और शीघ्र लाभ उपार्जन करता है, तैसे ही हे जीव ? तेने भी आरम्भ और परिग्रह तथा प्राण प्यारा कुटुम्बका त्याग कर अनेक शीत, ताप, क्षुधा, तृषा, मोक्ष रूप, लाभ उपार्जन को सहन करी, सो अब यह काल रूप तेजीका भाव आया है और मृत्यु मित्र तेरे मालके बदलेमें तुझे इच्छित सुख देता है, सो तु अब इस देह पर ममत्व न कर, यह अनत लाभ उपार्जनेकी वस्तुमें लाभ लेले। १४ अपने किये हुवे कृत्योंका फल तो मृत्युही देने वाला हैं, मृत्यु हुवे विन करणीका फल कैसे मिले, इस लिये मृत्यु मित्र मेरे ऊपर तो उपकारही करता है, यू जाण। १५ जैसे परचक्रि कोई किसी राजाको पकड पीजरेमें डाल रखे,

वहां खान पानादिकका अनेक दुःख होता है, पीछे उसके कोई जबर मित्र राजाको इस बातकी खबर मिलनेसे अपने मित्र राजाको शत्रुके तावेमेंसे छुड़ाय कर सुखी करता है,तैसे कर्म्मनामा शत्रु मुझे देहरूप पींजरेमें घाल कर, स्वासोस्वास, क्षुधा, तृषा ताड़न तर्जन, रोग, शोक, दुःख; पराधीनता इत्यादि वंदिखाना (काराग्रह) जैसा अनेक दुःख दिया, अब मृत्यु नामे मेरे परम मित्रकी मेरे ऊपर परम कृपा हुई है, जिससे यह जेलखानेसे छुड़ाकर मेरेको स्वर्ग मोक्ष स्थान देवेगा। १६. समाधि मरण विना स्वर्ग, मोक्ष देनेको दूसरा दुनियामें कोई भी समर्थ नहीं है। १७. जैसे भोग भूमिके मनुष्य जुगलियेको इच्छित सुख पुरने वाले कल्प वृक्ष होते हैं, कल्प वृक्षका स्वभाव है कि उसके नीचे बैठ शुभाशुभ जैसी वांच्छा करे वैसे फलकी प्राप्ति होती है, तैसी अपनी इच्छा पूरने वाला कल्पवृक्ष समान यह मृत्यु प्राप्त हुवा है, अब इसकी छायांमें बैठ कर जो अशुभ इच्छा विषय कषायादिक धारण करोगे तो नरक तीर्यंचादिक अशुभगति प्राप्त होगी, और सम समवेग त्याग व्रत, नियम, सत्य, शील, क्षमा, संतोष समाधि भावका सेवन करोगे तो स्वर्ग सुखके भोक्ता होकर, एक भवसे मोक्ष प्राप्त करोगे। १८. जरजरित अशुचि अपवित्र देहसे छुड़ाकर देव जैसा दिव्य रूप, मरण ही दे सकता है। १६. जैसे मुनिराज अनेक नय, उपनय, प्रत्यक्ष, परोक्ष दृष्टान्तोंसे शरीरका स्वरूप बताकर ममत्व दूर कराते हैं तैसे यह मेरे वदनमें रोग पैदा हुवा है सो मेरे को प्रत्यक्ष प्रमाणसे उपदेश करता है कि हे पुरुष ? तूं इस शरीर पर क्यों ममत्व करता है ? यह देह तेरी नहीं है, यह तो मेरे पति (काल) की भक्ष्य हैं। २०. जहां तक इस शरीरमें किसी प्रकार व्याधि न होय, वहां तक इस उपरसे ममत्व न उतरे, और विशेष २ इसका पोषण कर पुष्ट करे, युं पोषते २ ही जब रोग प्राप्त होता है और अनेक उपचार करते रोग नहीं मिटता हैं, तब इस देह उपरसे स्वभाविक ही प्रेम कम हो जाता है, इस लिये मुनिराजसे भी ज्यादा उपदेशक, देह से ममत्व छोड़ाने वाला उपकारी

स० ५

भा० ५

मेरे तो रोग ही हुवा है। २१ रे जीव ? इस रोगको देख कर जो तू घबराता होय, सचमुच जो रोग तुझे खराब लगता होय,
इस दुखसे कटाला आता होय तो बाह्य औषधियोंका सेवन छोड,क्योंकि यह रोग कर्म्माधीन है, और औषधियोंमें कुछ कर्म को
हटानेकी शक्ति नहीं है, कदापि औषधि उपचारसे एकदा रोग मिट गया तो क्या हुवा, मिटा रोग तो सख्याता असंख्याता
कालमें पीछा प्राप्त हो जाता है इस लिये जिनेन्द्र रूप सर्व रोग और सर्व चिकित्साके ज्ञाता महावैद्यकी फरमाई हुई समाधि
मरण रूप महा औषधि का सेवन कर कि जिससे सर्व आधि, व्याधि, उपाधिका नाश हो, अजरामर अनत अक्षय अव्याबाध
मोक्ष सुख मिले। २२ जो वेदनाका उठाव ज्यादा होय तो आप मनमें ज्यादा खुशी होय कि जैसे तीव्र तापसे सुवर्ण शीघ्र
निर्मल होता है, तैसे इस तीव्र वेदना से, मेरे कर्म रूपी मैल शीघ्र दूर होगा, ऐसा विचार वेदनियका दुख समभाव सहन करे।
२३ नरकमें तैने परवश पणे अनत वेदना सहन करी, परन्तु जितनी निर्जरा न हुई उतनी निर्जरा अभी जो तू समभाव रख कर
वेदना सहेगा तो तुझे होगी। २४ जो देनदार नम्रतासे साहूकारको सो रुपयेके बदले पीचहतर रुपये देकर फारक्ती मागे तो मिल
सकी है, और करडाई करे तो सवाये दाम देनेसे भी छुटकारा होना मुश्किल है तैसे इह कर्म रूप लेनदार लेना लेने खडे हैं तो
तु नम्रता से इनका देना चुका, फारक्ति लेनेका प्रयत्न कर, फारक्ति ले छुटकारा कर। २५ यह तो जरूर जाण कर्मोंका कर्ज
दिया बिन मोक्ष कदापि नहीं मिलने की। २६ जैसे भाव आने से निर्माल्य वस्तुको वेचकर वनिक महा लाभ प्राप्त करता है,
तैसे ही जो स्वर्ग मोक्षके अतीन्द्रिय सुख मुनि महाराज पाच महाव्रत, इन्द्रिय दमनादि, अनेक जप तप संयम करके प्राप्त करते
हैं वो सुख प्राप्त करनेका यह मृत्यु रूप अति उत्तम मौका (अवसर) आया है, सो अब जरा समभाव धारण कर जिससे स्वर्ग
मोक्ष का सुख भोक्ता होवे। २७ रे जीव ! तैने इतने दिन जो ज्ञानादिकका अभ्यास किया है सो इस समाधि मरणमें सम परि-

णाम रखनेके लिये है सो अब याद कर। २८. जैसे वस्त्र को बहुत दिन वापरने से पुराना हो जाता है इसलिये उस पर से मोह हट जाता है, वैसे जिससे विशेष परिचय होता है, उससे स्वभावसे ही मोह कमी होता हैं, तैसे ही इस शरीरसे जाण।

॥ इति समाधि मरणवालों की २८ भावना समाप्तम् ॥

आत्मनिन्दा का दुहा।

हे प्रभु हे प्रभु क्या कहुं, दिनानाथ दयाल। मैं तो दोष अनंत का, भाजन हुं करुणाल ॥ १ ॥

शुद्ध भाव मुजमें नहीं, नहीं सर्वे तुज रूप। नांहि लघुता अरू दीनता, क्या कहुं परम स्वरूप ॥ २ ॥

नहीं आज्ञा गुरुदेव की, अचल कीवी उरमांय। आपतणा आधार है, यह परमादर नाय ॥ ३ ॥

केवल करुणा मुरत हो, दीन बन्धु दीनानाथ। पापी परम अनाथ हुं, ग्रहो प्रभु जी हाथ ॥ ४ ॥

अनंत काल से आथड़ीयो, विना भान भगवान। सेव्या नहीं संत चरण को,छोड़्यो नहीं अभिमान ॥ ५ ॥

संत चरण अखर विना, साधन कियो अनेक। पारन उस से पामीयो, उग्यो न अंश विवेक।

सब साधन बंधन भये, रह्या न कोई उपाय। सतसाधन समझ्यो नहीं, तब बंधन कहां जाय ॥ ७ ॥

प्रभु प्रभु ले लागी नहीं, पड्यो न सतगुरु पाय। दिठा नहीं निज दोष तब, तिरु मैं कौन उपाय ॥ ८ ॥

अधमाधम अधिकोअधिक, सकल जगत में हुं। यह निश्चय आया बनुं, साधन करसे सुं ॥ ९ ॥

पड़ी पड़ी तुजं-पद पंकजे, फिर फिर मांगु एह। सद्गुरु सत्यस्वरूप तुज, यह द्रुढ़ता करी देह ॥ १० ॥

श्री अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय। विकानेर, (राजपुताना)